आयुर्वेद जड़ी-बूटी रहस्य

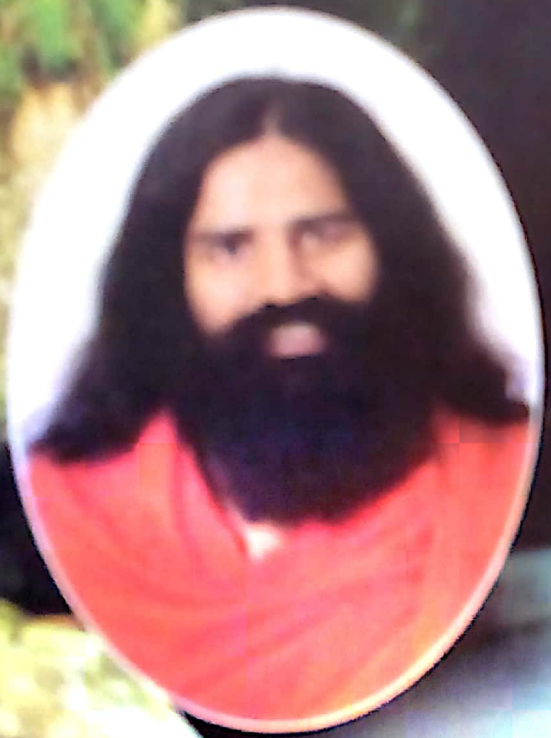

Scanned by CamScanner

30 बबूल

वैज्ञानिक नाम	:	*Acacia nilotica* (L.) Willd. ex Delile ssp. indica (Benth.) Brenan
कुलनाम	:	Mimosaceae
अंग्रेजी नाम	:	Acacia tree, Babul
संस्कृत	:	बर्बर, अजामेझ, दीर्घकंटका
हिन्दी	:	बबूल, बबूर, कीकर
गुजराती	:	बाबल
मराठी	:	बबूल, बाबूल
बंगाली	:	बावला, बबूल, कीकर
तैलगु	:	बर्बूरम, नक्क दुम्मा, नेला–तुम्मा
पंजाबी	:	बाबला
अरबी	:	उम्मूछिलान
फारसी	:	खेरेमुधिलान
तमिल	:	कारुबेल

परिचय

बबूल का परिचय बहुत पुराना है, बबूल की छाल एवं गोंद प्रसिद्ध व्यावसायिक द्रव्य है। वास्तव में बबूल मरूभूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष है, इसकी पत्तियाँ बहुत छोटी और अनुपत्र काटों में परिवर्तित हो जाते है। कांटेदार वृक्ष बहुत है, परन्तु बबूल में ही कुछ बात है जो इसे साहित्य में भी स्थान मिला है, जैसे : बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से पाये। समस्त भारतवर्ष में बबूल के जंगली और लगाये हुये वृक्ष मिलते है। ग्रीष्म ऋतु में इस पर पीताभ वर्ण में पुष्प गोलाकार गुच्छों में लगते हैं तथा शरद ऋतु में फलियाँ लगती है।

बाह्य–स्वरूप

बबूल के वृक्ष मध्यमाकार, कांड त्वक गाढ़े भूरे रंग की लम्बाई में रूखे दरार युक्त, शाखाएं गोल, सरल, झुकी–झुकी सी नवीन शाखाये चिकनी, अनुपत्र, तीक्ष्ण नुकीले कांटो में परिवर्तित पत्र, द्विपक्षवत् पत्रक बहुत छोटे 4 से 9 युग्मों में वृन्त युक्त, पुष्प, पीताभ, गोलाकार गुच्छों में पत्रकोशीय मंजरी पर 4–6 पुष्प लगते हैं। शिम्बी 3 से 6 इचं लम्बी चपटी और प्रत्येक फली में 8–12 चपटे बीज हाते है। बबूल के कांड से लालिमा युक्त श्वेत रंग का

Scanned by CamScanner

गोंद अपने आप निकलता है। गर्मियों में तथा नये वृक्षों से गोंद अपेक्षतया अधिक निकलता है। बबूल की लकड़ी जलाने के लिये बहुत उत्तम समझी जाती हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल में 6–12 प्रतिशत कषाय द्रव्य फली में 12–19 प्रतिशत टैनिन पाया जाता है। कांड से एक निर्यास मिलता है, जो बबूल गोंद के नाम से प्रसिद्ध है। असली गोंद, *Acacia senagal* नामक पौधे से प्राप्त होता है और अरब देशों तथा अफ्रीका से आयातित होता है। इंडियन गम गोल या अंडाकार लगभग ½ इंच के हल्के पीले रंग गहरे भूरे रंग के कणों के रूप में होते है। जो जल में पूर्ण रूप से विलेय है।

गुण–धर्म

बबूल कफ पित्तशामक, रक्त पित्तशामक और कफघ्न है। इसका गोंद वातपित्तशामक, मूत्रल, वृष्य, गर्भाशय के शोथ और स्राव को दूर करता है। यह स्नेहन, ग्राही, बल्य, तथा विषघ्न है। छाल और फली स्तम्भन, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न, तथा दाह प्रशमन है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र रोग : इसके नरम पत्तों को पीसकर, रस निकाल कर 1–2 बूंद आंख में टपकाने से अथवा स्त्री के दूध के साथ आंख पर बांधने से आँख की पीड़ा और सूजन मिटती है।

मुखपाक : बबूल की छाल के काढे से 2–3 बार गरारे करने से लाभ होता है। गोंद के टुकड़े चूसते रहने से आराम मिलेगा।

दंतपीड़ा :

1. बबूल की फली का छिलका और बादाम के छिलके की राख में नमक मिलाकर मंजन करने से दंत पीड़ा मिटती है।
2. बबूल की कोमल टहनियों की दातुन करने से भी दांत निरोग और मजबूत होते है।
3. बबूल की छाल, पत्ते, फूल और फलियों को समभाग मिलाकर बनाये गये चूर्ण से भी मंजन करने से दांतों के अनेक कष्ट दूर होते है।
4. इसकी छाल के क्वाथ से कुल्ले करने से दांतों का सड़ना मिट जाता है।

कंठ रोग : बबूल के पत्ते और छाल एवं बड़ की छाल सबको समभाग मिलाकर एक गिलास पानी में भिगो दें, इस प्रकार तैयार हिम से कुल्ले करने से गले के रोग मिट जाते है।

तृषा : दाह एवं तृषा में इसकी छाल के काढ़े में मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये।

स्तन : इसकी फलियों के चेप से किसी कपड़े को तर करके, सुखा लें। इस कपड़े को बांधने से ढीले स्तन कठोर हो जाते है।

उदर रोग : बबूल की अन्तरःछाल का क्वाथ बनाकर, उस क्वाथ के उबालते समय जब उसका धन क्वाथ हो जाये तब इस क्वाथ को 1–2 ग्राम की मात्रा में मट्ठे के साथ पीने से और पथ्य में सिर्फ मट्ठे का आहार लेने से जलोदर तक पहुँचे हुये सब प्रकार के उदर रोग नष्ट हो जाते है।

अरूचि : इसकी कोमल फलियों के अचार में सैन्धव लवण मिलाकर खिलाने से रूचि बढ़ती है, तथा जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

पीलिया : इसके पुष्पों के चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर 10 ग्राम की फंकी नित्य दिन में तीन बार लेने से पीलिया मिटता है।

अतिसार :

1. इसके 8–10 पत्तों का रस पिलाने से अतिसार मिटता है।
2. इसकी 8–10 कोमल कोपलें थोड़े से जीरे और अनार की कलियों के साथ 100 ग्राम पानी में पीसकर उस पानी में एक टुकड़ा गरम ईंट का बुझाकर दिन में 2–3 बार 2 चम्मच पानी पिलाने से भंयकर अतिसार भी मिट जाता है।
3. इसकी पत्तियों का स्वरस छाछ में मिलाकर पिलाने से हर प्रकार के अतिसार में लाभ होता हैं।
4. अथवा इसकी दो फलियां खाकर ऊपर से छाछ पीना चाहिये।

कफ अतिसार : बबूल के पत्ते, जीरे और स्याह जीरे को समभाग लेकर पीसकर 10 ग्राम की फंकी रात्रि के समय देने से कफ अतिसार मिटता है।

रक्तातिसार :

1. हरी कोमल पत्तियों के एक चम्मच रस में शहद मिलाकर 2–3 बार पिलाने से खूनी दस्त लगने बन्द हो जाते है।
2. बबूल के गोंद 10 ग्राम को 50 ग्राम पानी में भिगोकर मसल कर छानकर पिलाने से अतिसार और रक्त अतिसार मिटता है।

प्रवाहिका : इसकी कोमल पत्तियों के एक चम्मच रस में थोड़ी सी हरड़ का चूर्ण मिलाकर सेवन करना चाहिये, ऊपर से छाछ पीना

Scanned by CamScanner

चाहिये।

सुजाक :

1. बबूल की 10–20 कोपलों को एक गिलास पानी में भिगोकर आसमान के नीचे रखे और प्रातःकाल उस पानी को निथार कर पीने से सुजाक और पेशाब की जलन में आराम मिलता हैं।
2. 30 ग्राम बबूल की कोंपलों को रात भर एक गिलास पानी में भिगोकर सुबह मसल छानकर उसमें 20 ग्राम गरम घी मिलाकर पिलावें, दूसरे दिन भी ऐसा ही करें, तीसरे दिन घी मिलाना छोड़ दे और 4–5 दिन खाली इसका हिम पीने से सुजाक में बहुत लाभ होता है।
3. इसके 10 ग्राम गोंद को एक गिलास पानी में डालकर उसकी पिचकारी देने से मूत्राशय की सूजन, सुजाक की जलन दूर हो जाती है।
4. इसके 5–10 नरम पत्तों को 1 चम्मच शक्कर और 2 नग काली मिर्च के साथ अथवा 5–6 अनार के पत्तों के साथ पीस छानकर पिलाने से सुजाक मिटता है।

मासिक धर्म :

1. बबूल का भुना हुआ गोंद 4½ ग्राम और गेरु 4½ ग्राम, इनको पीसकर प्रातः काल फंकी लेने से मासिक धर्म में अधिक रक्त का बहना बन्द हो जाता है।
2. इसकी 20 ग्राम छाल को 400 ग्राम पानी में उबालकर शेष 100 ग्राम क्वाथ दिन में तीन बार पिलाने से भी मासिक धर्म में प्रमाण से अधिक रक्त का बहना बन्द हो जाता है।

रक्तप्रदर : गोद और गेहूँ समभाग मिलाकर पीसे ले, 2 चम्मच की मात्रा में सुबह शाम सेवन करने से मासिक धर्म में अधिक खून आने की शिकायत दूर होती है।

श्वेत प्रदर :

1. 10 ग्राम बबूल की छाल को 400 ग्राम में पकाकर शेष 100 ग्राम काढ़े में 2–2 चम्मच की मात्रा से सुबह–शाम पीने से और इस काढ़े में थोड़ी सी फिटकरी मिलाकर योनि में पिचकारी देने से योनि मार्ग स्वच्छ शुद्ध होकर निरोगी बनेगा और योनि सशक्त पेशियों वाली और तंग होगी।
2. एक हिस्से बबूल की छाल को 10 हिस्से पानी में रात भर भिगोकर सुबह उस पानी को उबाल ले। जब पानी आधा रह जाये तो उसे छान कर बोतल में भर ले। लघुशंका के बाद इस पानी से योनि को धोने से प्रदर एवं योनि शैथिल्य में लाभ होता है।
3. बबूल की फलियों के चेंप से थोड़े मोटे कपड़े को 7 बार तर करके सुखा ले। स्त्री प्रसंग से पहिले इस कपड़े के टुकड़े को दूध या पानी में भिगोकर, दूध और पानी को पीले तो इससे स्तम्भन होता है। यदि इस कपड़े के टुकड़े को स्त्री अपनी योनि में सांठ ले तो भी योनि तंग हो जाती है।

वीर्य विकार :

1. फलियों को छाया में सुखाकर पीस लें और बराबर की मात्रा में मिश्री मिला लें। एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम नियमित रूप से जल के साथ सेवन करने से वीर्य गाढ़ा होगा और सब विकार दूर होगें।
2. बबूल के गोंद को घी में तलकर उसका पाक बनाकर खाने से पुरूषो का वीर्य बढ़ता है और प्रसूति काल में स्त्रियों को खिलाने से उनकी शक्ति भी बढ़ती है।

स्वप्न दोष : बबूल का पंचाग (सब भाग बराबर–बराबर लेवें) लेकर पीस लें और और आधी मात्रा में मिश्री मिलाकर एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम नियमित सेवन करने से कुछ ही समय में लाभ होगा।

सूतिका रोग : बबूल की अन्तर छाल का चूर्ण 10 ग्राम, काली मिर्च 3 नग, दोनों को पीसकर, सुबह शाम खाने से और पथ्य में सिर्फ बाजरे की रोटी और गाय का दूध लेने से भयंकर सूतिका रोग से ग्रस्त स्त्रियां भी बच जाती है।

संतान : कांतिवान संतान के लिये बबूल के पत्तों का 2–4 ग्राम चूर्ण प्रतिदिन सुबह खिलाने से सुंदर बालक का जन्म होगा।

अस्थि भग्न : फलियों का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम नियमित रूप से सेवन करने से टूटी हड्डी शीघ्र जुड़ जाती है।

कटिशूल : बबूल की छाल, फली और गोंद समभाग मिलाकर पीस ले, एक चम्मच की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन करने से कमर दर्द में आराम मिलेगा।

दाद : बबूल के फूलों को सिरके में पीसकर दाद पर लगाने से दाद जड़ से चला जाता है।

रक्त–स्राव :

1. शरीर के किसी भी अंग से रक्तस्राव होता हो तो उस पर पत्रों का रस पीसकर लगाना चाहिये या सूखे पत्रों या सूखी छाल का चूर्ण उस पर छिड़क देना चाहिये।
2. 10–15 कोमल पत्तों को 2–4 नग काली मिर्च और 2 चम्मच शक्कर के साथ पीस छानकर पिलाने से आमाशय से रूधिर का बहना बन्द हो जाता है।

पसीने की अधिकता : बबूल के पत्ते और बाल हरड़ को बराबर–बराबर मिलाकर महीन पीस ले, इस चूर्ण की सारे बदन पर मालिश करे और कुछ समय रूककर स्नान कर लें। नियमित रूप से यह प्रयोग कुछ दिन तक करने से पसीना आना बन्द हो जाता है।

व्रण : बबूल के पत्तों का लेप जख्म को भरता है और गरमी की सूजन को दूर करता है।

हानि : बबूल का अधिक सेवन सीने को नुकसान पहुंचाता है। अधिक मात्रा में इसका निर्यास गुदा को हानि पहुँचाता है।

दर्पनाशक : बबूल का दर्पनाशक वनफ़शा है और बबूल के गोंद का दर्पनाशक, बेदाना गुलाब और सन्दल हैं।

Scanned by CamScanner

31 बड़/बरगद

वैज्ञानिक नाम	:	*Ficus benghalensis* L.
कुलनाम	:	Moraceae
अंग्रेजी नाम	:	Banyan tree
संस्कृत	:	वट, न्यग्रोध, जगृलः विटपी, बहुपाद
हिन्दी	:	बड़, बरगद
गुजराती	:	बड़
मराठी	:	वटवडु
बंगाली	:	बड़ गाछ, बट
पंजाबी	:	बरगद, बोड़
अरबी	:	कविरूल, अश्जार
फारसी	:	दरख्ते रोश

परिचय

पीढिया आती हैं, चली जाती है, परिस्थितियां बनती–बिगड़ती है, साल–सदियां व्यतीत हो जाती है, परन्तु वट वृक्ष शताब्दियों के वैभव–पराभव का साक्षी, भौगोलिक परिवर्तनों से बेअसर, आंधी तूफान में अविचल दिनों दिन उत्कर्ष को प्राप्त होता हुआ अपनी घनी छाया तले युगों का इतिहास समेटे किसी महान काल द्रष्टा, यति योगी, मुनि की तरह अचल खड़ा रहता है। हिन्दुओं की धार्मिक परम्पराओं से इस वृक्ष का अभिन्न रिश्ता है, इसे सभी पहचानते हैं, अतः विवरण विशेष की आवश्यकता नहीं है।

बाह्य–स्वरूप

इस वृक्ष की शाखाएं बहुत दूर तक चारों ओर फैली रहती है जिनसे प्ररोह (वायव्यमूल) निकल कर लटकते रहते हैं और बढ़कर भूमि में लग जाते है। काण्डत्वक–श्वेत–धूसर मोटी होती है। पत्र–मोटे, लट्वाकार 4–6 इंच लम्बे–चौड़े चर्मवत् होते है। पत्रमूल में 3–5 सिराएँ होती है। फल गोलाकार होते है। अदृश्य पुष्प होने के कारण इसे वनस्पति कहा गया है। मई–जून में नई पत्तियाँ निकलती है। फल प्रायः वर्ष भर दृष्टिगत होते है।

रासायनिक संघटन

वट वृक्ष की छाल व इसकी जटाओं में 10 प्रतिशत टैनिन के अतिरिक्त ग्लुकोसाइड, बैन्गलेनोसाइड एवं टालब्युटामाइडस, गैलेक्टोसाइड इत्यादि पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

कफ पित्तनाशक, वेदनास्थापन, व्रण रोपण, रक्तशोधक, शोथहर, चक्षुष्य, स्तम्भन, रक्त पित्तहर, शुक्रस्तम्भन और गर्भाशय शोधक है। यह बल्य व कषाय है। वृक्ष, शीतल, कषाय व रूक्ष है, तथा तृष्णा, छर्दि, मूर्च्छा, और रक्त पित्त नाशक है।[1,2,3]

औषधीय प्रयोग

मुख की कांति वर्धनार्थ :

1. इसके 5–6 कोमल पत्तों को या जटा को 10–20 ग्राम मसूर के साथ पीसकर लेप करने से व्यस्त दूर हो जाते हैं।
2. जड़ के पीले पके पत्तों के साथ, चमेली के पत्ते, लाल चन्दन, कूट, काला अगर और पठानी लोध 1–1 भाग, सबको जल के साथ पीसकर लेप करने से मुहांसे, झाई आदि दूर हो जाते है।
3. निर्गुण्डी बीज, बड़ के पीले पके पत्ते–फूल, प्रियंगु, मुलेठी, कमल पुष्प, लोध, केशर, लाख तथा इन्द्रायण की जड़ का चूर्ण समभाग, जल के साथ पीसकर लेप करने से मुख कांतिमान हो जाता है।

कर्णरोग :

1. कान में यदि फुंसी हो या कीडे पड़ गये हो तो इसके दूध की

Scanned by CamScanner

कुछ बूंदों में सरसों के तेल मिलाकर डालने से ही कृमि तथा कान की फुंसी नष्ट हो जाती है।

2. इसके दूध की 3 बूंदे, बकरी के 3 ग्राम अनुष्ण दूध में डालकर कान में डालने से फुंसी तथा कृमि नष्ट होते हैं।

केश विकार :

1. इसके पत्तों की 20–25 ग्राम राख को 100 ग्राम अलसी के तेल में मिलाकर मलते रहने से सिर के बाल उग आते है।
2. स्वच्छ कोमल पत्रों के रस में, समभाग सरसों का तैल मिलाकर अग्नि पर पकाकर तेल सिद्ध कर लें। इस तेल को बालों में लगाने से, केशों के सब विकार दूर होते है।
3. बड़ की जटा और जटामांसी का चूर्ण 25–25 ग्राम, तिल तेल 400 ग्राम तथा गिलोय का स्वरस 2 किलो सबको मिला धूप में रखें, जल सूख जाने पर तेल को छान लेवें। तेल की मालिश से गंजापन दूर होकर बाल आ जाते है एवं बाल झड़ना बन्द हो जाता है तथा बाल सुन्दर व सुनहरे हो जाते हैं।
4. जटा और काले तिल समभाग खूब महीन पीसकर सिर पर लगाकर आधा घंटे बाद कंघी से केशों को साफ कर ऊपर से भागंरा और नारियल की गिरी दोनों को पीसकर लगाते रहने से बाल कुछ दिन में लम्बे हो जाते हैं।

दंत विकार :

1. बड की छाल 10 ग्राम के साथ 5 ग्राम कत्था और 2 ग्राम काली मिर्च इन तीनों को खूब महीन चूर्ण बना मंजन करने से दांत का हिलना, मैल, दुर्गन्ध आदि विकार दूर होकर दांत स्वच्छ एवं श्वेत हो जाते हैं।
2. दांत के दर्द पर इसका दूध लगाने से दर्द दूर हो जाता है। दूध में एक रूई की फुरेरी भिगों कर छिद्र में रख देने से दुर्गन्ध दूर होकर दांत ठीक हो जाते है। दन्त कृमि नष्ट हो जाते हैं।
3. यदि किसी दांत को निकालना हो तो इसका दूध लगाकर दांत को आसानी से निकाला जा सकता हैं।
4. बड की जटा से मंजन करने से दांतों के कीडे नष्ट हो जाते है। कोमल लकड़ी की दातुंन से पायेरिया नष्ट हो जाता है।

नकसीर : जटा का चूर्ण 3 ग्राम तक दूध की लस्सी के साथ पिलाने से लाभ होता है।

निद्राधिक्य : इसके कड़े हरे छाया शुष्क पत्तों के 10 ग्राम दरदरे चूर्ण को 1 किलो जल में पकायें, चौथाई शेष रहने पर इसमें 1 ग्राम नमक मिलाकर सुबह–शाम पिलाने से हर समय अंधता रहना दूर होता है।

प्रतिश्याय : इसके कोमल लाल रंग के पत्तों को छाया में सुखा कूट कर रखें। 1 या डेढ़ चम्मच आधा किलो जल में पकाकर चौथाई शेष रहने पर 3 चम्मच शक्कर मिला प्रातः–सायं चाय की भाँति पीने से जुकाम व नजला दूर होकर मस्तिष्क की दुर्बलता भी नष्ट होती है।

नेत्र फूली : बड़ के 10 ग्राम दूध मे 125 मि०ग्रा० कपूर और 2 चम्मच मधु मिलाकर अजंन करने से नेत्र फूली कटती है।

जाला : बड़ के दूध को 2–2 बूँद आँख में डालने से आंख का जाला कटता है।

कंठमाला : दूध का लेप करने से लाभ होता है।

हृदय की धड़कन पर : 10 ग्राम कोमल हरे रंग के पत्तों को 150 ग्राम जल में खूब पीस छानकर उसमें थोड़ी मिश्री मिला सुबह–शाम 15 दिन पिलाने से लाभ होता है।

कफ रोग : शाखा तथा बड़ की छोटी–छोटी कोमल शाखाओं का शीत निर्यास या हिम 10–20 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से कफ स्त्राव में लाभ दायक है।

स्तन शैथिल्य : जटा के बारीक अग्रभाग के पीले व लाल तंतुओं को पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

भगन्दर : बड़ के पत्ते, पुरानी ईंट के चूर्ण, सौंठ, गिलोय तथा पुनर्नवा मूल का चूर्ण समभाग लेकर जल के साथ पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

बादी बवासीर : 20 ग्राम छाल को 400 ग्राम जल में पकावें, आधा जल शेष रहने पर छानकर उसमें गाय का घी और खांड 10–10 ग्राम मिला सुखोष्ण सेवन से कुछ दिनों में लाभ होता है।

रक्तार्श :

1. इसके 25 ग्राम कोमल पत्तों को 200 ग्राम जल में घोटकर पिलाने से 2–3 दिन में ही रक्तस्त्राव बन्द हो जाता है। अर्श के मस्सों पर इसके पीले पत्तों की भस्म को समभाग सरसों के

बड़ की छाल

Scanned by CamScanner

तेल में मिला लेप करते रहने से शीघ्र लाभ होता है।

2. 10 ग्राम कोपलों को 100 ग्राम बकरी के दूध में समभाग जल मिलाकर पकाने पर जब केवल दूध मात्र शेष रह जाये तो छान कर सेवन करने से रक्तपित्त, रक्तार्श तथा रक्तातिसार में भी लाभ होता है।

3. इसकी छाया शुष्क लकड़ी को जलाकर इसके कोयलों को महीन पीस प्रातः–सायं 3 ग्राम की मात्रा में ताजे जल के साथ देते रहने से लाभ होता है। अर्श के मस्सों पर कोयलों के चूर्ण को 21 बार धोये हुए मक्खन में मिलाकर मलहम बनाकर लगाने से मस्से बिना कष्ट के दूर हो जाते हैं।

रक्तातिसार : दस्त के साथ या दस्त के पूर्व या बाद में खून गिरता हो तो वट वृक्ष की 20 ग्राम कोपलों को पीसकर रात्रि के समय जल में भिगोकर प्रातः छानकर, छने हुये जल में 100 ग्राम घी मिला पकावें, घी मात्र शेष रहने पर 20 से 25 ग्राम तक घी में शहद व शक्कर मिलाकर सेवन से रक्तातिसार में लाभ होता है।

रक्त की वमन :

1. इसकी नरम शाखाओं के फांट में शक्कर या बतासा मिलाकर सेवन करने से रक्त की वमन बन्द हो जाती है।
2. जटा के 6 ग्राम अकुंरो को जल में घोट छानकर पिलने से वमन व रक्त की वमन बन्द होती है।

प्यास : इसकी कोंपलों के साथ दूब घास, लोध, अनार की फली, और मुलेठी समभाग लेकर, एक साथ पीस शहद में मिला चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से वमन और प्यास की शान्ति होती है।

मितली आना : 20 ग्राम वट के हरे पत्र, लौंग 7 नग, दोनों को जल में घोट छानकर रोगी की इच्छानुसार पिलायें।

अतिसार :

1. इसके दूध को नाभि के छिद्र में भरने तथा आसपास लगाने से लाभ होता है।
2. 6 ग्राम वट कोंपलों को 100 ग्राम जल में घोट छानकर थोड़ी मिश्री मिलाकर पिलाने से तथा ऊपर से मट्ठा पिलाने से दस्त बन्द हो जाते है। मिश्री ना मिलने से भी लाभ होगा।
3. 3 ग्राम छाया शुष्क वट छाल के चूर्ण को दिन में 3 बार चावलों के धोवन के साथ या ताजे कूप जल के साथ देने से शीघ्र लाभ होता है।
4. 8–10 कोंपलों का सेवन दही के साथ करें।

मधुमेह : 20 ग्राम छाल व बड़ की जटा के जौकूट चूर्ण को आधा किलो जल में पकायें, अष्टमांश से भी कम शेष रहने पर उतार कर ठंडा होने पर छान कर सेवन करायें। इस प्रकार पथ्यपूर्वक 1 महीने तक प्रातः–सायं सेवन से पूर्ण लाभ होता है।

प्रमेह :

1. प्रमेह में ताजी वट छाल के महीन चूर्ण में समभाग खांड मिलाकर 4 ग्राम की मात्रा में ताजे जल के साथ सेवन करें। बार–बार वीर्यस्राव होता हो तो खांड न मिलाये।
2. बड़ के दूध की प्रथम दिन 1 बूंद 1 बतासे पर डालकर खायें, दूसरे दिन 2 बतासों पर 2 बूंदे, तीसरे दिन 3 बतासों पर 3 बूंद, 21 दिन तक दूध व बतासे बढ़ाते जाये, फिर उसी प्रकार घटाते हुये एक बूंद और एक बतासे पर छोड़ देवें, यह प्रमेह की विशेष औषधि है, इससे स्वप्न दोष दूर होकर वीर्य की वृद्धि होती है।
3. मूत्रकृच्छ्र तथा सुजाक में भी यह योग लाभकारी है। बड़ के कोमल पत्ते 400 ग्राम, बहुफली 200 ग्राम दोनों को खूब ठंडाई की भांति घोट छान कर कलईदार पात्र में पकाये, जब गाढ़ा हो जाये तो नीचे उतार कर उसमें थोड़ा बंशलोचन या इमली के बीजों की गिरी का चूर्ण मिलाकर 125 से 300 मिलीग्राम की गोलियां बना लें, 1–2 गोली तक खाकर ऊपर से ताजा गाय का दूध पान करने से प्रमेह, धातु क्षीणता, स्वप्न दोष आदि विकार दूर होते हैं।
4. 2.5 किलो वट के पके पीले पत्ते लेकर, 15 किलो जल में 3–4 दिन भिगोने के बाद पकायें, चौथाई जल शेष रहने पर मसल छानकर, जल को पुनः गाढ़ा होने तक पकाये, अब नीचे उतार कर इसमें गिलोय सत् व प्रवाल पिष्टी 3 से 6 ग्राम तथा छोटी इलायची के बीज 2 ग्राम पीस कर मिलायें, 250 मि०ग्रा० की गोली बना प्रातः–सायं 1–1 गोली गौदुग्ध या जल के साथ सेवन कराये।
5. 4 ग्राम की मात्रा में वट जटा के चूर्ण को सुबह–शाम ताजे जल के साथ सेवन से प्रमेह, धातुस्त्राव एवं स्वप्न दोष का निवारण होता है।
6. पके फलों के चूर्ण को 10–20 ग्राम की मात्रा में मिश्री मिलाकर दूध के साथ सेवन करने से लाभ होता है। यह पौष्टिक व धातुवर्धक है।

रक्त प्रदर :

1. वट जटा के अंकुर 10 ग्राम को गाय के दूध 100 ग्राम में पीस छानकर दिन में 3 बार पिलाने से लाभ होता है।
2. इसके 20 ग्राम कोमल पत्तों को 100 से 200 ग्राम जल में घोटकर प्रातः–सायं पिलाने से शीघ्र लाभ होता है। स्त्री या पुरूष के मूत्र में रक्त आता हो तो भी उक्त योग से लाभ होता है।
3. 3 से 5 ग्राम तक कोपलों का क्वाथ बनाकर प्रातः–सायं सेवन से प्रमेह व प्रदर रोग समाप्त होता है।

बहुमूत्र : फलों के बीज महीन पीसकर 1 या 2 ग्राम तक, प्रातः काल गौदुग्ध के साथ निरंतर सेवन से लाभ होता है।

सुजाक : छाया शुष्क जड़ की छाल के चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं शर्बत बजूरी या साधारण ताजे जल के साथ देते रहने से पूयस्त्राव बन्द होकर पूर्ण लाभ होता है।

उपदंश : इसकी जटा के साथ अर्जुन की छाल, हरड़, लोध व हल्दी समभाग जल में पीस कर लेप लगाने में उपदंश के व्रण नष्ट होते है।

Scanned by CamScanner

मूत्र कृच्छ : जटा का महीन चूर्ण 9 ग्राम, कलमी शोरा, श्वेत जीरा, छोटी इलायची के बीज प्रत्येक का महीन चूर्ण 2–2 ग्राम मिलाकर जल में घोटकर एक ही वटी बना प्रातः काल गाय के धारोष्ण दूध के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ व सुजाक में लाभ होता है।

गर्भपात :

1. 4 ग्राम छाया शुष्क छाल चूर्ण दूध की लस्सी के साथ सेवन करें।
2. छाल के क्वाथ में लोध्र कल्क 3 से 5 ग्राम तक तथा थोड़ा शहद मिलाकर दिन में दो बार सेवन से शीघ्र ही लाभ होता है। योनि से स्त्राव यदि अधिक हो तो इसकी छाल के क्वाथ में सूक्ष्म मुलायम कपड़े को 3–4 बार आसिंचन कर योनि में धारण करें। यह दोनों प्रयोग श्वेत प्रदर में भी लाभदायक है।
3. इसके दो कोमल पत्तों को 250 ग्राम गाय के दूध में समभाग जल मिलाकर पकाये, केवल दूध शेष रहने पर छानकर पी लें।

योनिशैथिल्य : कोपलों के स्वरस में फोया (पिचू) भिगो कर योनि में प्रतिदिन 1 बार 15 दिन तक धारण करायें।

गर्भधारणार्थ : पुष्य नक्षत्र एवं शुक्ल पक्ष में लाये हुए कोपलों का चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा ऋतु काल में प्रातः जल के साथ 4–6 दिन सेवन करने से स्त्री अवश्य गर्भ धारण करती है अथवा कोंपलों को पीसकर बेर जैसी 21 गोलियां बना 3 गोली घी के साथ सेवन करें।

कटि पीड़ा : इसके दूध का लेप करें।

बल वृद्धि के लिये :

1. वृक्ष से उतारे हूये फलों को हवादार स्थान में कपड़े पर सुखाकर (लोहे का स्पर्श न हो) महीन चूर्ण लेकर समभाग मिश्री चूर्ण मिला लें। 6 ग्राम की मात्रा में प्रातः सुखोष्ण दूध के साथ सेवन से वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन आदि विकार दूर होते है। वीर्य सन्तानोपति में समर्थ हो जाता है।
2. बड़ के पके फल व पीपल के फल, दोनों को सुखा कर महीन चूर्ण बना ले। 25 ग्राम चूर्ण को 25 ग्राम घी में भूनकर, हलवा बना प्रातः–सायं सेवन करने तथा ऊपर से बछड़े वाली गाय का दूध पीने से विशेष बल वृद्धि होती है। यदि स्त्री पुरुष दोनों सेवन करें तो रज वीर्य शुद्ध होकर सुन्दर सन्तान उत्पन्न होती है।
3. छायाशुष्क कोपलो के चूर्ण में समभाग मिश्री मिला 7 दिन प्रातः निराहार 5 से 10 ग्राम तक की मात्रा में दूध की लस्सी के साथ सेवन करने से वीर्य का पतला पतन मिटता है।

स्मरण शक्ति वर्धनार्थ : छायाशुष्क छाल के महीन चूर्ण में दुगनी खांड या मिश्री मिला लें, 6 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं पकाये हुये सुखोंष्ण गाय के दूध के साथ सेवन करने से स्मरण शक्ति बढती है। खट्टे पदार्थो से परहेज रखें।

व्रण :

1. व्रण में कृमि हो गये हो, दुर्गन्ध आती हो तो वट छाल के क्वाथ से घाव को नित्य धोने से तथा इसके दूध की कुछ बूदे दिन में 3–4 बार डालने से कृमि नष्ट होकर व्रण ठीक हो जाता है।
2. साधारण व्रण पर इसके दूध को लगाने से वे शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

3. यदि घाव ऐसा हो जिसमें कि टाके लगाने की आवश्यकता हो, तो घाव का मुख मिलाकर, जब खाल के दोनों सिरे मिल जाये तब बड़ के पत्ते गरम कर घाव पर रखकर ऊपर से कसकर पट्टी बांध दे तथा 3 दिन में घाव भर जायेगा तथा 3 दिन तक खोले नहीं।
4. फोड़े–फुन्सियों पर पत्तों को गरम कर बांधने से वे शीघ्र ही पक कर फूट जाते है।
5. इसके पत्तों को जलाकर उसकी भस्म में मोम और घी मिला मलहम जैसा बनाकर घावों में लगाने से शीघ्र लाभ होता है।
6. वर्षा ऋतु में अधिक पानी में रहने से अगुंलियों के बीच में जख्म से हो जाते है, उन पर बड़ का दूध लगाने से वह शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

रक्तपित्त : कोपलों या पत्तों को 10 से 20 ग्राम तक पीसकर लुगदी में शहद व शक्कर मिलाकर सेवन करने से रक्त पित्त में लाभ होता है।

स्वेद जनन : बड़ के पीले पत्तों को चावलों के साथ पकाकर पके चावलों का काढ़ा पसीना लाने के लिये पिलाया जाता है।

नाड़ी व्रण :

1. इसकी कोपले तथा कोमल पत्तों को पीसकर जल में छान लें, जल में समभाग तिल का तेल मिलाकर तेल सिद्ध कर लें। इस तेल को दिन में 2–3 बार व्रण पर लगाने से लाभ हो जाता है। यह तेल भगन्दर पर भी लाभ दायक है।
2. इसके दूध में सांप की केंचुली की भस्म मिलाकर उसमें पतले कपड़े या रूई की बत्ती को भिगोकर नाड़ी व्रण में भीतर रखने से 10 दिन में शीघ्र लाभ होता है। रसौली की प्रारम्भिक अवस्था में इसके लेप से शीघ्र लाभ होता है।

कुष्ठ : रात्रि के समय इसके दूध का लेप करने तथा उस पर इसकी छाल का कल्क बांधने से सात दिन में कुष्ठ एवं रोमक शान्त हो जाता है।

रसौली : कूठ व सेंधा नमक को बड़ के दूध में मिलाकर लेप करें तथा ऊपर छाल का पतला टुकड़ा बांध दें, सात दिन तक दो बार उपचार करने से बढ़ा हुआ अर्वुद (गांठ) दूर हो जाता है। गठिया, चोट व मोच पर बड़ का दूध लगाने से पीड़ा शीघ्र कम हो जाती है।

बंद गांठ पर :

1. बड़ का दूध लगाने से यदि गांठ पकने वाली नही है तो बैठ जाती है, यदि फूटने वाली है तो शीघ्र पक कर फूट जाती है। बंद गांठ पर बड़ के दूध का प्लास्टर लगाया जाता है। यही दूध लगाते रहने से बाद में गांठ का घाव भी भर जाता है।
2. इसके पत्तों पर तिल का तेल चुपड़ कर बंद गाठ पर बांधने से वह पक कर फूट जाती है।

तालु कंटक :

तालु कंटक या तालु के नीचे की ओर धँस जाने पर इसके दूध को मिट्टी की टिकिया पर लगाकर तालू पर बांधने से या लेप करने से तालू यथास्थान पर आ जाता है।

अग्नि दग्ध : जले हुये स्थान पर इसकी कोंपल या कोमल पत्तों को गाय के दही में पीसकर लगाने से शान्ति प्राप्त होती है।

सूजन : पत्तों पर घी चुपड़कर बांधने से शोथ पर शीघ्र लाभ होता है।

खुजली : आधा किलो पत्तों को कूटकर, 4 किलो पानी में रात्रि के समय भिगोकर प्रातः काल पकायें। एक किलो जल शेष रहने पर आधा किलो सरसों का तेल डालकर पुनः पकावें, तेल मात्र शेष रहने पर छान कर रख लें, इस तेल की मालिश से गीली और खुष्क दोनों प्रकार की खुजली दूर होती है।

1. वटः शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापहः।
वर्ण्यो विसर्पदाहघ्नः कषायो योनिदोषहृत्।। (भाव प्रकाश)
2. वटांकुरा मसूराश्च प्रलेपाद्, व्यंगनाशमन्। (भाव प्रकाश)
3. वटः शीतः कषायश्च स्तम्भनो रूक्षणात्मकः।
तथा तृष्णाच्छर्दिमूर्च्छारक्तपित्तविनाशनः।। (ध० नि०)

Scanned by CamScanner

32 बहेड़ा

वैज्ञानिक नाम	:	*Terminalia bellirica* (Gaertn.) Roxb.
कुलनाम	:	Combretaceae
अंग्रेजी नाम	:	Baheda
संस्कृत	:	विभीतक, अक्ष, कर्षफल, कलिद्रुमु
हिन्दी	:	बहेड़ा
गुजराती	:	बहेड़ा
मराठी	:	बहेड़ा
बंगाली	:	बयड़ा
पंजाबी	:	बेहड़ा
तैलगु	:	वाड़िकाय
द्राविड़ी	:	तानिकूय
कन्नड	:	तारेकापि
अरबी	:	बलैलज
फारसी	:	तलैलाह

परिचय

यह भारतवर्ष में सर्वत्र पाया जाता है, विशेषकर निचले पर्वतीय प्रदेशों में अधिक होता है। फरवरी–मार्च में पत्र विहीन होने के पश्चात इस पर नये ताम्रवर्ण पल्लव निकलते हैं, उसी के साथ मई तक पुष्प खिलते हैं तथा अगली जनवरी–फरवरी तक फल पक जाते है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 60–80 फुट ऊंचा, काण्ड सीधा, काण्ड त्वक् गहरे भूरे रंग का, पत्र 3–8 इंच लम्बे, एकान्तर, चौड़े, अंडाकार, सवृंत, शाखाओं के अग्रभाग पर समूहबद्ध लगते हैं। पुष्प सफेद या पीले रंग के 3–6 इंच लम्बी मंजरियों में होते हैं, ऊपर के पुष्प पुल्लिंगी तथा नीचे के उभय लिंगी होते हैं। फल ½ इंच व्यास का धूसरवर्ण, रोमश, गोलाकार, पीछे की ओर वृन्त पर संकरा हो जाता है। फल सूखने पर धारीदार या हल्का पंचकोणीय मालूम होता है। यह एक बीजी होता है।

रासायनिक संघटन

फल में टेनिन, बी–सिटोस्टेराल, गैलिक एसिड, इलेगिकएसिड, एथिल गैलेट, चेबुलेजिक एसिड, मैनिटाल, ग्लुकोज, गैलेक्टोज फ्रक्टोज तथा रैमनोज होते हैं, बीज मज्जा से चमकीले पीले रंग

Scanned by CamScanner

सूखा बहेड़ा का फल

का स्थिर तेल निकलता है। इसकी छाल में टैनिन होता है।

गुण–धर्म

यह त्रिदोषहर है, परन्तु इसका मुख्य प्रयोग कफ प्रधान विकारों में होता है। यह नेत्रों को हितकारी, केशवर्धक, भेदक तथा पलित रोग, स्वरभंग, नासारोग, रुधिर दोष, कंठ रोग, नेत्र रोग, कास, हृदय रोग में गुणकारी और कृमिघ्न होता है।[1] बहेड़े के फल की मगज आंख के फूले को दूर करती है। इसकी छाल रक्ताल्पता, पाण्डुरोग और श्वेत कुष्ठ में लाभदायक है। इसके बीज कड़ुवे, मादक, तृषा, वमन नाशक, वातहर तथा ब्रोंकाइटिस का नाश करने वाले हैं। इसके फलों का छिलका संकोचन और कफनाशक है। इसकी विशेष क्रिया कंठ और श्वांसनलिका पर होती है। इसके बीजों की गिरी वेदनाशामक और शोथहर है, अधिक मात्रा में यह वामक होती है। बहेड़ा, आंवला हरीतकी यह सब मुस्तादिगण कफ नाशक, योनिदोषनाशक, दूध का शोधन करने वाले और पाचक है।[1] बहेडा, हरड़ तथा आंवला ये सभी प्रमेह कुष्ठ को नष्ट करते हैं, आंखों के लिए हितकारी, अग्नि दीपक और विषम ज्वर को नष्ट करते हैं। इनका रस, रक्त एवं मेदगत दोषों को दूर करता है तथा स्वरभेद, कफ, क्लेद एवं पित्त रोग को नष्ट करता है।[2] बहेड़ा, विरेचक, लघु, उष्ण, स्वर भंग के लिए हितकारी, कृमिनाशक, आंखों के लिए हितकारी व कफ नाशक है।[3] यह अमाशय को शक्ति देता है। कोई भी दूसरी औषधि इससे बढ़कर अमाशय को ताकत देने वाली नहीं। इसका अर्धपक्व फलरेचक और सूखा फल ग्राही है। बहेड़ा रूक्ष, नेत्र एवं बालों के लिए हितकारी तथा मज्जा मदकारी होती है।[4]

औषधीय प्रयोग

केश्य : फल की मींगी का तेल बालों के लिए अत्यन्त पौष्टिक है। इससे बाल स्वस्थ हो जाते हैं।

नेत्र ज्योति : बहेड़े और शक्कर के समभाग मिश्रण का सेवन नेत्रों की ज्योति को बढ़ाता है।

नेत्र पीड़ा : इसकी छाल का मधु के साथ लेप करने से नेत्र की पीड़ा मिटती है।

ज्वर दौर्बल्य : बहेड़े और जवासे के 40–60 ग्राम काढ़े में 1 चम्मच घी मिलाकर दिन में तीन बार पीने से पित्त और कफ का बुखार छूट जाता है और आंखों के आगे अंधेरा होना व चक्कर आना मिट जाता है।

हृदय वात : इसके फल का चूर्ण तथा अश्वगंधा का चूर्ण समान भाग में मिलाकर 5 ग्राम की मात्रा लेकर गुड़ में मिलाकर उष्ण जल के साथ सेवन करने से हृदय वात नष्ट होती है।

लार का बहना : डेढ़ ग्राम बहेड़े में समान मात्रा में शक्कर मिलाकर कुछ दिन खाने से मुंह से लार का बहना बंद हो जाता है।

खांसी :

1. बहेड़े के छिलके को मुंह में चूसने से खांसी मिट जाती है।
2. बकरी के दूध में अडूसा, काला नमक और बहेड़ा डालकर पकाकर खाने से तर और सूखी दोनों प्रकार की खांसी मिट जाती है।

श्वास : बहेड़े और हरड़ की छाल बराबर–बराबर भाग में लेकर चूर्ण बना लें तथा 4 ग्राम की मात्रा नित्य लेने से श्वांस और कास मिटता है।

मंदाग्नि : विभीतक फल के 3 से 6 ग्राम चूर्ण की भोजनोपरान्त फंकी लेने से पाचन शक्ति तीव्र होती है और मंदाग्नि मिटती है। आमाशय को ताकत मिलती है।

Scanned by CamScanner

मूत्रकृच्छ्र : इसके फल की मींगी का चूर्ण 3–4 ग्राम की मात्रा में मधु मिलाकर सुबह–शाम चाटने से मूत्रकृच्छ्र एवं अश्मरी में लाभ होता है।

पित्तज प्रमेह : बहेड़ा, रोहिणी, कुटज, कैथ, सर्ज, छत्तिवन, कबीला के फूलों का चूर्ण बनाकर 2 से 3 ग्राम की मात्रा लेकर 1 चम्मच मधु के साथ मिलाकर पित्तज प्रमेह के रोगी को दिन में तीन बार देना चाहिए।[5]

नपुंसकता : 3 ग्राम बहेड़े के चूर्ण में 6 ग्राम गुड़ मिलाकर प्रतिदिन सुबह–शाम सेवन करने से नपुंसकता मिटती है और कामोद्दीपन होता है।

दस्त :

1. इसके पेड़ की 2–5 ग्राम छाल और 1–2 नग लौंग को 1 चम्मच शहद में पीसकर दिन 3–4 बार चटाने से दस्त बंद हो जाते हैं।
2. 2–3 नग भुना हुआ बहेड़ा पुराने दस्तों को बंद करता है।

आंत उतरना : पोतों में आंत उतरने पर बहेड़े का लेप करने से पहले ही दिन से फायदा होता है।

बंद गांठ : अरण्डी के तेल में बहेड़े के छिलके को भूनकर तेज सिरके में पीसकर बंदगांठ पर लेप करने से 2–3 दिन में बंदगांठ बैठ जाती है।

पित्तशोथ :

1. बहेड़े की मींगी का लेप करने से पित्त शोथ बिखर जाती है।
2. नेत्र को पित्त शोथपर बहेड़े का लेप करते है।

ज्वर : बहेड़े का 40–60 ग्राम क्वाथ सुबह–शाम पीने से पित्त, कफ, ज्वर में लाभ मिलता है।

कण्डू : फल की मींगी का तेल कण्डु रोग में लाभकारी है तथा दाहशामक है। इसकी मालिश से खुजली और जलन मिट जाती है।

1 विनीतकंस्वादुपाकं कषायं कफपित्तनुत्।
उष्णवीर्यं हिमस्पर्शं भेदनं कासनाशनम्।।
रूक्षं नेत्रहितं केश्यं मिवैस्वर्यनाशनम्।।
विनीतमज्जा तृट्छर्दिकफवातहरी लघु।।
कषाया मदकृच्चाथ धात्री मज्जापि तदगुणा।
(भाव प्रकाश)

2 रसासृङमांस मेदोजान् दोषान् हन्ति विभीतकम्।
स्वरभेदकफोत्क्लेदपित्तरोग विनाशनम्।। (चरक)

3 भेदनं लघु रूक्षोष्णं वैस्वर्यकृमिनाशनम्।
चक्षुष्यं स्वादुपाक्याक्षं कषायं कफपित्तजित्। (सुश्रुत)

4 वैभीतको मदकरः कफमारुतनाशनः।।
विभीतकी रूक्षो नेत्र हितः केश्यो मज्जातो मदकारकः।।
(ध० निघंटु)

5 कम्पितल सप्तच्छदशालजानि वैभतिरौ हिलक कौटजानि।
कपित्थ पुरपाणी च चूर्णितानि क्षौद्रेशा लिहात कफ पित्त मेही।।
(चरक)

Scanned by CamScanner

बकायन

वैज्ञानिक नाम	:	*Melia azedarach* L.
कुलनाम	:	Meliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Persian lilac, Bead tree
संस्कृत	:	महानिम्ब, द्रेक,रम्यक
हिन्दी	:	बकायन
गुजराती	:	बकान लिबंडो
मराठी	:	बकाणा निंब
बंगाली	:	घोड़ा निम, महानिम
पंजाबी	:	धरेक
फारसी	:	आजाद दरख्त
तैलगु	:	तुरकवेपा
अरबी	:	हर्बीत

परिचय

पर्सिया और अरब का मूल निवासी महानिम्ब भारतवर्ष में हिमालय के निम्न प्रदेशों में 2,000 से 3,000 फुट की ऊंचाई तक विशेषतः उत्तर भारत, पंजाब तथा दक्षिणी भारत में इसके नैसर्गिक अथवा बोये हुए वृक्ष मिलते हैं। इसके वृक्ष भी नीम वृक्ष की भांति सीधे मध्यमाकार 20 से 40 फुट ऊंचे होते हैं। फागुन और चैत्र मास में इस वृक्ष से एक दूधिया रस निकलता है, अतः इस अवधि में कोमल पत्रों के अलावा और किसी अंग के रस अथवा क्वाथ का प्रयोग नहीं करना चाहिए। वैसे भी इस वृक्ष के किसी भी अंग का व्यवहार उचित मात्रा में तथा सावधानी पूर्वक करना चाहिए, क्योंकि यह कुछ विषैला होता है। फलों की अपेक्षा छाल और फूल कम विषैले, बीज सबसे अधिक विषैले और ताजे पत्र प्रायः हानि रहित होते हैं।

बाह्य–स्वरूप

बकायन वृक्ष कांड गोलाई में 6–8 फुट व्यास का, कांड त्वक आधा इंच तक मोटी, हल्की मटमैली परंतु अन्दर से भूरी अरूणवर्ण की, शाखाएं फैली हुई। पत्र संयुक्त, द्विपक्षवत कभी–कभी त्रिपक्षवत 10–20 इंच लम्बी सींक पर 3–6 पत्रक अभिमुख क्रम में लगते हैं। पत्रक आधे से तीन इंच तक लम्बे लम्बाग्र, आरी की भांति दंतुर, नीम पत्रकों की अपेक्षा छोटे किन्तु चौड़ाई में अधिक होते हैं। पुष्प गुच्छे, किंचित नीली आभा लिये, मीठी, तीखी गंधयुक्त, फल गोल कच्ची अवस्था में हरे और पकने पर पीले रंग के हो जाते हैं। बीज के बीच में एक छिद्र होता है, जिसमें धागा पिरोकर माला बनाई जाती है। दिसम्बर से मार्च तक यह निष्पत्र रहता है। मार्च से मई तक पुष्पागम होता है और उसके बाद फल आते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें नीम की भांति मार्गोसीन नामक तिक्तसत्व पाया जाता है। बीज मज्जा से प्राप्त तेल में गंधक होता है।

गुण–धर्म

कफ पित्त, कुष्ठ, रक्तविकार, वमन, हृल्लास, प्रमेह, श्वास, गुल्म अर्श तथा चूहों के विष को दूर करने वाली है।[1]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मुंह के छाले :

1. बकायन की छाल और सफेद कत्था, दोनों को बराबर 10–10 ग्राम की मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर बुरकने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।
2. 20 ग्राम छाल को जलाकर 10 ग्राम सफेद कत्थे के साथ पीसकर मुख के भीतर बुरकने से लाभ होता है।

गंडमाला :

1. बकायन की छाया शुष्क छाल और पत्ते दोनों को 5–5 ग्राम कूट कर 500 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ कर पिलायें तथा इसी का लेप भी करें। गंडमाला और कुष्ठ में लाभ होता है।
2. गंडमाला पर पत्रों को पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है।

नेत्र रोग :

1. फलो को पीसकर छोटी टिकिया सी बनाकर नेत्रों पर बांधते रहने से पित्तज नेत्राभिष्यन्द दूर होता है। गरमी के कारण आंख का दुःखना भी ठीक हो जाता है।
2. दृष्टि मांद्य आदि नेत्र विकार तथा मोतियाबिंद पर इसके एक किलोग्राम हरे ताजे पत्ते पानी से धोकर अच्छी प्रकार से साफ, कूट, पीसकर तथा निचोड़ कर रस निकाल लें, इस रस को पत्थर के खरल में खूब घोटकर सूखा लें, पुनः 1–2 खरल करें तथा खरल करते समय भीमसेनी कपूर 3 ग्राम तक मिला दें, इसको प्रातः सायं नेत्रों में अंजन करने से मोतिया बिन्द तथा अन्य प्रकार से उत्पन्न दृष्टिमांद्य, जलस्राव, लालिमा, कंडू, रोहे आदि विकार दूर होते हैं।

अर्श :

1. बकायन के सूखे बीजों को कूटकर लगभग 2 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं पानी के साथ सेवन करने से खूनी–बादी दोनों बवासीर में अत्यन्त लाभ होता है।
2. बकायन के बीजों की गिरी और सौंफ दोनों समभाग में पीसकर बराबर की मात्रा में मिश्री मिलाकर दो ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार सेवन करने से अर्श में लाभ होता है।
3. इसके भूमि पर गिरे हुए पके फलों के अन्दर के 8–10 बीजों को जल के साथ पीसकर झाड़ी बेर जैसी गोलियां बनाकर छाया में शुष्क कर प्रातः–सायं एक–एक गोली बासी जल के साथ सेवन करें तथा 1–2 गोली गुड़ के शरबत में घिसकर मस्सों पर लेप करें। मस्से मुरझा कर नष्ट हो जायेंगे।
4. बकायन के बीजों की गिरी में समान भाग एलुआ व हरड़ मिला कर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को कुकरौंधे के रस के साथ घोटकर 250–250 मिलीग्राम की गोलियां बना प्रातः–सायं 2–2 गोली जल के साथ लेने से अर्श से रक्तस्त्राव बंद होता है तथा कब्ज दूर होता है।

उदरशूल : उदरशूल में इसके पत्रों 3–5 ग्राम के क्वाथ में शुंठी चूर्ण 2 ग्राम मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

आंत्र कृमि :

1. ताजी छाल को कूटकर 50 ग्राम लेकर 300 मि०ली० जल में क्वाथ कर चतुर्थांश शेष रहने पर बच्चों को एक बड़ा चम्मच प्रातः–सायं पिलाने से 20–21 दिन में उदर कृमि नष्ट होकर तज्जन्य ज्वर, पांडुता, निर्बलता, अरुचि आदि उपद्रव दूर होते हैं।
2. यह क्वाथ या इसका फांट प्रति 2 या 3 घण्टे बाद भी दिया जा सकता है। साथ ही कोई विरेचक भी देना आवश्यक है। इसके फलों और बीजों की माला बनाकर दरवाजे और खिड़कियों पर टांगने से बीमारियों का प्रभाव नहीं होता तथा इसके फलों की माला पहनने से संक्रामक रोगों का शरीर पर आक्रमण नही होता।

गर्भाशय के विकार

1. महानिम्ब के पत्रों का स्वरस 5 ग्राम की मात्रा में पिलाने से मासिक स्त्राव का अवरोध दूर हो जाता है।
2. अगर मासिक धर्म में रक्त प्रमाण से अधिक जा रहा हो तो इसके पत्रों का स्वरस 5 ग्राम की मात्रा में देने से मासिक धर्म नियंत्रित हो जाता है।
3. गर्भाशय की शुद्धि के लिए बकायन के पत्र स्वरस 10 ग्राम में अकरकरा के रस या चूर्ण 3 ग्राम को मिलाकर सुबह–शाम खाली पेट पिलाने से लाभ होता है।
4. बकायन के पुष्पों का रस 6 मिलीग्राम मात्रा में मधु 1 चम्मच के साथ नियमपूर्वक प्रातःकाल चटाने से मासिक धर्म की रूकावट दूर हो जाती है।
5. अनार्तव में इसकी छाल का क्वाथ 10–20 ग्राम पीने से मासिक धर्म खुलकर होने लग जाता है।

मूत्राश्मरी : बकायन के 5 ग्राम पत्र स्वरस में 500 मिलीग्राम जौखार दिन में 2–3 बार मिलाकर पिलाने से गुर्दे एवं मूत्राशय में जमी अश्मरी कट कर निकल जाती है।

प्रमेह : एक या दो बीजों की गिरी को चावलों के पानी के साथ पीसकर उसमें 10 ग्राम घी मिलाकर सेवन करने से बहुत समय का प्रमेह भी नष्ट हो जाता है।

Scanned by CamScanner

श्वेत प्रदर : बकायन के बीज तथा श्वेत चन्दन, सम भाग चूर्ण कर उसमें बराबर का बूरा मिलाकर 6 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार सेवन करने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

आवेश रोग : इसके 10 ग्राम पत्रों को 500 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को स्त्रियों के आवेश रोग में पिलाने से लाभ होता है।

मस्तक शूल : प्रसूति काल में होने वाले गर्भाशय शूल और मस्तक शूल में इसके पत्तों और फूलों को 10–10 ग्राम की मात्रा में लेकर कुचलकर सिर और बस्ति प्रदेश पर बांधने से लाभ होता है।

गृध्रसी :

1. बकायन की जड की छाल 10 ग्राम तक प्रातः–सायं जल में पीस छानकर पीने से एक मास में असाध्य गृध्रसी भी मिट जाती है।
2. इसकी जड़ या अंतरःछाल का 3 ग्राम चूर्ण जल के साथ सुबह–शाम सेवन से लाभ होता है।

गठिया : इसके बीजों को सरसों के साथ पीसकर लेप करने से गठिया में तुरन्त प्रभाव होता है।

शोथ :

1. चोटिल स्थान पर रक्त जमकर उत्पन्न हुए शोथ पर बकायन के 10–20 पत्रों को पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधने से गांठों का रक्त बिखर कर लाभ हो जाता है।
2. सूजन पर 10–20 पत्रों को गरम कर बांधने से भी आराम हो जाता है।

खुजली :

1. इसके 10–20 पुष्पों को पीसकर लेप लगाने से त्वचा के फोड़े, फुंसी और खुजली आदि के रोग मिटते हैं।
2. बकायन के फूलों के 50 मिलीलीटर रस को सिर पर लगाने से सिर में छोटी–छोटी फुन्सियां हो जाना, पीप युक्त फुन्सियां हो जाना, केशभूमि कठोर होना, चमड़ी के टुकड़े निकलते रहना आदि रोग दूर होते हैं।
3. इसके फल की गिरी 10 ग्राम को खोपरे के तेल 100 ग्राम में पीसकर बहुत उष्ण जल, घी या तेल से उत्पन्न सिर के घावों पर लगाने से लाभ होता है।
4. इसके 8–10 सूखे पत्तों को 50 ग्राम सिरके में पीसकर त्वचा पर लगाने से त्वचा के कृमि संबंधी रोग मिटते हैं।

कुष्ठ : बकायन के पके हुए पीले बीजों को लेकर उनमें से 3 ग्राम बीजों को 50 ग्राम पानी में रात को भिगोकर रखें, प्रातः काल महीन चूर्ण बनाकर फंकी लेवें। 20 दिनों तक निरन्तर सेवन करने से कुष्ठ रोग में अवश्य लाभ होता है। पथ्य में बेसन की रोटी और गो घृत लेवें।

विषम ज्वर : बकायन की छाल और धमासा 10–10 ग्राम तथा कासनी के बीज 10 दाने एकत्र कर, जौकूट कर लें तथा 50 मि.ली. से 100 मि.ली. तक पानी में भिगोकर कुछ समय बाद ज्वर में जाड़ा लगने से पूर्व अच्छी तरह हाथ से मसलकर छानकर पिला देवें। यह ज्वर दो खुराक देने से ही बंद हो जायेगा।

जीर्ण ज्वर : गुठली रहित इसके कच्चे ताजे फलों को कूटकर उनके रस में समान भाग गिलोय का रस मिलाकर तथा दोनों का चौथाई भाग देशी अजवायन का चूर्ण मिलाकर खूब खरल कर झाड़ी के बेर जैसी गोलियां बनाकर, दिन में तीन बार एक–एक गोली ताजे जल के साथ सेवन करने से पुराने से पुराना ज्वर छूट जाता है। यह रक्त शोधक व वायु शामक भी है।

व्रण :

1. दूषित व्रणों को इसके पत्तों के 50 मिलीलीटर रस से धोने से लाभ होता है।
2. व्रणों पर इसके 8–10 पत्तों का लेप भी लाभकारी है।
3. शरीर का अंग कट जाने पर इसके पत्रों को पीसकर लेप करते है।

अर्बुद : अर्बुद पर 10–20 नीम पत्रों के साथ इसके 10–20 पत्रों को पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधते है।

उदर कृमि :

1. बकायन की 20 ग्राम छाल को दो किलो पानी में उबालें, 750 ग्राम पानी शेष रहने पर उसमें थोड़ा गुड़ मिलाकर तीन दिन तक 50 से 100 मि0ली0 की मात्रा में पिलाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।
2. इसके पत्रों का फांट 20 ग्राम सुबह–शाम पिलाने से भी पेट के कीड़े मर जाते हैं।

नारू : इसका एक बीज नित्य प्रति 7 दिन तक खिलाने से नारू गल जाता है।

विशेष : यह यकृत और अमाशय के लिए हानिकारक है।

उपद्रव निवारण–सौंफ : इसके अत्यधिक प्रयोग से होने वाले उपद्रवों को शान्त करता है।

प्रतिनिधि द्रव्य : मजीठ, तथा जावित्री।

1 महानिम्बोऽहिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः।
कफपित्तश्रमच्छर्दिकण्डूहल्लासरक्तजित्।।
प्रमेहश्वासगुल्मार्शोमूषिकाविषनाशनः।।

Scanned by CamScanner

बाकुची

34

वैज्ञानिक नाम	:	*Psoralea corylifolia* L.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Psoralea seeds
संस्कृत	:	बाकुची, पूतिफली, कृष्णफला, कुष्ठघ्नी
हिन्दी	:	बकुची, बाकुची, बावची
गुजराती	:	बावची
मराठी	:	बावची
बंगाली	:	बुकाचिदाना, हाबुच, सोमराज
फारसी	:	स्याह सफरं
तैलगु	:	भावाञ्चि
अरबी	:	तुख्मरेहां
तमिल	:	कर्पोकरिशी

परिचय

बाकुची के छोटे-छोटे पादप, वर्षा ऋतु में समस्त भारतवर्ष में अपने आप उगते हैं तथा जगह-जगह इसकी खेती भी की जाती है। साधारणतया बाकुची के पौधे एक वर्षायु होते हैं, परन्तु उचित देखभाल करने से 4-5 वर्ष तक जीवित रह जाते हैं। औषधि कर्म में इसके बीज और बीजों से प्राप्त तेल का व्यवहार किया जाता है। इस पर शीतकाल में पुष्प लगते हैं तथा ग्रीष्म ऋतु में पुष्प फलों में बदल जाते हैं।

बाह्य-स्वरूप

बाकुची के 1-4 फुट तक ऊंचे सीधे खडे कोमल पौधे होते हैं, परन्तु शाखाएं अपेक्षाकृत कडी और ग्रंथि बिन्दुकित होते हैं। पत्र साधारण, सवृन्त, 1-3 इंच लम्बी गोलाकार, प्रायः चिकनी दोनों पृष्ठों पर कृष्ण बिन्दु होती है। पुष्प नीली झाई लिये, हलके बैंगनी रंग के, पत्रकोण से उद्भूत, मंजरियों पर 10-30 की संख्या में लगते हैं। फली छोटी-छोटी काले रंग की, लम्बी, गोल, चिकनी होती हैं तथा प्रत्येक फली में एक बीज, फली के ही आकार का कृष्ण वर्ण एवं बेल फल की भांति सुगन्धित होता है।

रासायनिक संघटन

बाकुची के बीजों में एक उडनशील तेल, एक राल या रेजिन, एक स्थिर तेल तथा दो क्रिस्टलाइन सत्व सोरालेन पाये जाते हैं। फल के छिलके से सोरोलिडिन तत्व भी प्राप्त किया गया है। बाकुची के कुष्ठघ्न एवं कृमिघ्न कर्म इन्हीं दोनों तत्वों के कारण होते हैं।

गुण-धर्म

बाकुची मधुर, कड़वी, पाक में तिक्त, कटु रसायन, बिष्टम्भनाशक, शीतल, रूचिकारी, दस्तावर,रूखी, हृदय को हितकारी और कफ, रक्तपित्त, श्वास, कोढ़, प्रमेह, ज्वर तथा कृमि को नष्ट करने वाली है।[1] फल पित्तवर्धक, केश तथा त्वचा को हितकारी, चरपरा, कुष्ठ, कफ, वात, वमन, श्वांस, खांसी, शोथ, आम और पांडु रोग विनाशक है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

दंतकृमि : बावची की जड़ को पीसकर जरा सी मात्रा में भुनी हुई फिटकरी मिला लें। सुबह–शाम इससे मंजन करने से दांत के कीड़े नष्ट हो जायेंगे।

श्वास : आधा ग्राम बीजों का चूर्ण अदरक के रस के साथ दिन में 2–3 बार सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है। कफ ढीला होकर निकल जाता है।

अतिसार : बावची के पत्तों का साग सुबह–शाम नियमित रूप से कुछ हफ्ते खिलाते रहने से बहुत लाभ होता है।

पीलिया : 10 मिलीलीटर पुनर्नवा के रस में आधा ग्राम पीसी हुई बावची के बीजों का चूर्ण मिलाकर सुबह–शाम प्रतिदिन सेवन करने से लाभ होता है (ज्यादा बावची का सेवन वमन पैदा करता है)।

अर्श : 2 ग्राम हरड़, 2 ग्राम सौंठ और 1 ग्राम बावची के बीज लेकर पीस लें, आधे चम्मच की मात्रा में गुड़ के साथ सुबह–शाम सेवन करने से लाभ मिलेगा।

वंध्याजनन : मासिक धर्म से शुद्ध होने के पश्चात बावची के बीजों को तेल में पीसकर योनि में रखने से गर्भधारण करने की क्षमता समाप्त हो जाती है।

कुष्ठ रोग :

1. बावची के बीज चार भाग और तवकिया हरताल एक भाग, दोनों को चूर्ण कर गोमूत्र में घोंटकर श्वेत दागों पर लगाने से सफेद दाग दूर हो जाते हैं।
2. बावची और पवाड़ समभाग लेकर सिरके में पीसकर सफेद दागों पर लगाने से दाग में लाभ होता है।
3. बावची, गंधक व गुड़मार को बराबर की मात्रा में लेकर तीनों का चूर्ण कर लें तथा 12 ग्राम चूर्ण को रात्रि में जल में भिगो दें। प्रातःकाल निथरा हुआ जल सेवन कर लें तथा नीचे के तल में जमा पदार्थ श्वेत दागों पर लगाते रहने से श्वेत कुष्ठ नष्ट हो जाता है।
4. बावची तेल दो भाग, तुवरक तेल दो भाग, चंदन तेल एक भाग मिलाकर रख लें, इस तेल के लगाने से सामान्य त्वक् रोग तथा श्वेत कुष्ठ आदि रोग नष्ट होते हैं।
5. शुद्ध बावची चूर्ण एक ग्राम की मात्रा में आंवले अथवा खैर त्वक के 100 मिलीग्राम क्वाथ के साथ सेवन करने से श्वित्र रोग नष्ट हो जाता है।
6. बावची को तीन दिन तक दही में भिगोकर फिर सुखाकर रख लें। इसका आतशी शीशी में तेल निकाल लें। इस तेल में नौसादर मिलाकर श्वेत दागों पर लेप करें।
7. बावची, कलौंजी, धतूरे के बीज समभाग लेकर आक के पत्तों के रस में पीसकर श्वेत दागों पर लगाने से श्वेत कुष्ठ नष्ट हो जाता है।
8. बावची, इमली, सुहागा और अंजीर मूलत्वक् समभाग लेकर जल में पीसकर सफेद दागों पर लेप करने से श्वित्र रोग नष्ट हो जाता है।
9. बावची, पवांड, गेरू सम भाग लेकर कूट पीसकर अदरक के रस में खरल कर सफेद दागों पर लगाकर धूप सेकने से श्वेत कुष्ठ नष्ट हो जाता है।
10. बावची, गेरू और गन्धक समभाग लेकर, पीसकर अदरक के रस में खरल कर 10–10 ग्राम की टिकिया बनाकर, एक टिक्की रात्रि को 30 मि.ग्रा. जल में डाल दें। प्रातः ऊपर का स्वच्छ जल पीले तथा नीचे

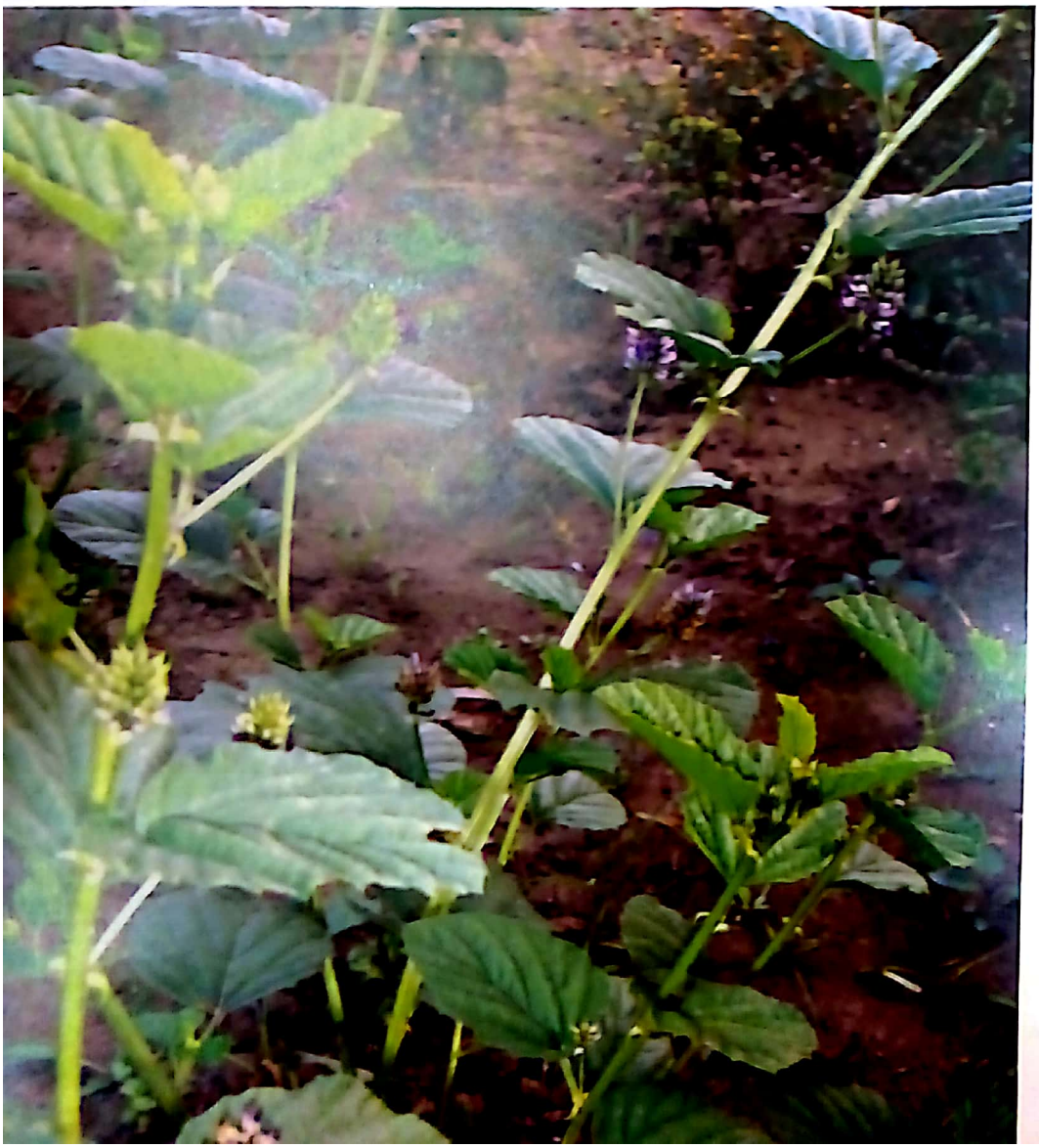

Scanned by CamScanner

की बची हुई औषधि को श्वेत दागों पर मालिश कर धूप सेंकने से श्वित्र रोग नष्ट होता है।

11. बावची, अजमोद, पवांड तथा कमल गट्टा समान भाग लेकर कूट पीस मधु मिलाकर गोलियां बना लें। एक से दो गोली तक प्रातः–सायं अंजीर मूल त्वक् क्वाथ के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ दूर होता है।

12. शुद्ध बावची 1 ग्राम तथा काले तिल 3 ग्राम लेकर 2 चम्मच मधु मिला, प्रातः–सायं सेवन करने से श्वित्र रोग नष्ट होता है।

13. शुद्ध बावची, अंजीर की जड़ की छाल, नीम की छाल तथा पत्र सम भाग लेकर कूट पीसकर खैर छाल के क्वाथ में खरल करके रख लें। दो से पांच ग्राम तक की मात्रा जल के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ में लाभ होता है।

14. बावची पांच ग्राम, केसर एक भाग लेकर दोनों को कूट पीसकर गोमूत्र में खरल कर गोली बना लें। यह गोली जल में घिसकर लगाने से श्वित्र रोग में लाभप्रद है।

15. बावची 100 ग्राम, गेरू 25 ग्राम, पवांड़ के बीज 50 ग्राम लेकर सबको कूट पीसकर वस्त्र पूत चूर्णकर भांगरे के रस की 3 भावनाएं देकर रख लें। प्रातः–सायं गोमूत्र में घिसकर लगाने से श्वित्र रोग में लाभ होगा।

16. बावची चूर्ण को अदरक के रस में घिस कर लेप करने से श्वित्र रोग नष्ट होता है।

17. बावची दो भाग, नीला थोथा तथा सुहागा एक–एक भाग लेकर कपड़ छान चूर्ण कर एक सप्ताह भांगरे के रस में घोंटकर रख लें। इसको नींबू स्वरस में मिला श्वित्र पर लगाने से श्वेत दाग नष्ट होते हैं। यह प्रयोग तीक्ष्ण है, अतः इसके प्रयोग के फलस्वरूप फाले होने पर यह प्रयोग बन्द कर दें।

18. शुद्ध बावची चूर्ण की एक ग्राम मात्रा, बहेड़े की छाल तथा जंगली अंजीर मूल छाल के क्वाथ में मिलाकर निरन्तर सेवन करते रहने से श्वित्र तथा घोर पुंडरीक में लाभ होता है।

19. बावची हल्दी, अर्कमूलत्वक समान भाग लेकर महीन चूर्ण कर कपड़ छान कर लें। इस चूर्ण को गोमूत्र या सिरका में पीसकर श्वित्र के दागों पर लगाने से श्वेत दाग नष्ट हो जाते हैं। यदि लेप उतारने पर जलन हो तो तुबरकादि तेल लगायें।

20. बावची एक किलोग्राम को जल में भिगोकर, छिलके रहित करके पीसकर 8 किलो गौ दुग्ध तथा 16 लीटर जल में पाक करें। जल के जल जाने पर दूध मात्र लेकर उसमें जामन लगाकर जमा दें। मक्खन निकालकर उसका घी बना लें। एक चम्मच घी की मात्रा मधु मिलाकर चाटने से श्वेत कुष्ठ में लाभ होता है।

21. बावची तेल की 10 बूंदे बताशे में डालकर प्रतिदिन कुछ दिनों तक सेवन करने से श्वित्र रोग में लाभ होता है।

22. बावची को गोमूत्र में भिगोकर रखें तथा तीन–तीन दिन बाद गोमूत्र बदलते रहें, इस तरह कम से कम 7 बार करने के बाद उसको छाया मे सुखाकर पीसकर रखें। उसमें से 1–1 ग्राम सुबह–शाम ताजे पानी से खाने से एक घंटा पहले सेवन करें, इससे श्वित्र (सफेद दाग) में निश्चित रूप से लाभ होता है, अनुभूत है।

23. 1 ग्राम बावची और 3 ग्राम काले तिल को मिलाकर एक वर्ष तक दिन में दो बार सेवन करने से कुष्ठ रोग नष्ट होता है।

गांठ : बावची के बीजों को पीसकर गांठ पर बांधते रहने से गांठ बैठ जायेगी।

अहितकर प्रभाव : आनाहकारक है।

दर्पनाशक : दही एवं स्नेह द्रव्य।

1. बाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी।
विष्टम्भहृद्धिमा रुच्या सरा श्लेष्मास्र पित्तनुत्। (भाव प्रकाश)
रुक्षा हृद्या श्वांस कुष्ठ मेहज्वर कृमि प्रणुत।।

2. तत्फलं पित्तलं कुष्ठकफानिलहरं कटु।
केश्यं त्वच्यं वमिश्वासकासशोथामपांडुनुत्। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

35 बला

वैज्ञानिक नाम	:	*Sida cordifolia* L.
कुलनाम	:	Malvaceae
अंग्रेजी नाम	:	Country mallow
संस्कृत	:	बला, वाट्यालिका
हिन्दी	:	जंगली मेथी, बरियार, खरैटी
गुजराती	:	बल, बला
मराठी	:	चिकणा
बंगाली	:	बेड़ेला
तैलगु	:	चित्तीन, तेलाआन्टिस
पंजाबी	:	खरयटी

परिचय

समस्त भारत के उष्ण कटिबन्धीय तथा समशीतोष्ण प्रान्तों में, जंगलों में तथा गांवों के आसपास की परती जमीन में बला के स्वयंजात पौधे पाये जाते हैं। बला की अनेक जातियां पाई जाती है, जिनमें बला, अतिबला, महाबला और नागबला मुख्य हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप 2–5 फुट ऊंचा, मूल और कांड दृढ़ होता है इसलिए इसे बला नाम दिया गया है। पत्र एकान्तर, 1–3 इंच लम्बे, 1–2 इंच चौड़े, रोमश, 7–9 पार्श्व शिराओं से युक्त, लट्वाकार या हृदयवत् आयताकार, गोल–दंतुर होते हैं। पुष्प पत्रकोण से निकलते हैं। पत्रकोण पीत या श्वेत रंग के, बीज छोटे भूरे या काले दानों के रूप में होते हैं। अगस्त–सितम्बर में पुष्प तथा अक्टूबर जनवरी में फल लगते हैं।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

इसमें और बीजों में मुख्य क्षाराभ इफेड्रिन है। इसके अतिरिक्त स्टिरायड, फाइटोस्टिरॉल, म्युसिन तथा पोटेशियम नाइट्रेट होते हैं। इसका मूल एसपैरोजिन और जिलेटिन के सम्मिश्रण से बनता है।

गुण–धर्म

भाव प्रकाश के मत में चारों प्रकार के बला, शीतल, मधुर, बल्य तथा कांतिकर, स्निग्ध ग्राही और वात पित्त, रक्त पित्त, रूधिर विकार और क्षयनाशक हैं।[1] बला संग्राहिक, बल्य एवं वातशामक है।[2] इसकी जड़ का चूर्ण यदि शर्करा के साथ खायें तो मूत्रातिसार दूर होता है। इसमें कुछ भी संदेह नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह अनुभूत योग है। महाबला मूत्रकृच्छ्र को नष्ट करती है। अतिबला वात की अनुलोमक यदि दूध मिश्रण के साथ सेवन की जाये तो प्रमेह को नष्ट कर देती है।

अर्दित : इसका चूर्ण मिलाकर, पकाया हुआ दूध पिलाने से तथा बला तैल की मालिश करने से लाभ होता है।

औषधीय प्रयोग

उन्माद रोग : उन्माद में श्वेत पुष्प बला की जाति के मूल का चूर्ण 10 ग्राम, अपामार्ग चूर्ण 5 ग्राम, दूध आधा किलो, जल आधा किलो, इन सबको मिलाकर उबालें। जल केवल दूध मात्र शेष रह जाये तब दूध को ठंडा होने पर छानकर प्रातःकाल सेवन करने से उग्र तथा घोर उन्माद में भी लाभ होता है।

स्वर भंग : इसके चूर्ण को मिश्री और शहद के साथ देते हैं।

नेत्राभिष्यन्द : दुखती हुई आंखों पर इसके पत्तों के साथ बबूल के पत्तों को पीस टिकियां बनाकर रखते हैं और ऊपर से स्वच्छ वस्त्र को लपेट देने से लाभ होता है।

पित्तज कास : बला, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, अडूसा, द्राक्षा एक–एक ग्राम इसके क्वाथ में मधु मिलाकर पीने से पित्तज कास नष्ट होता है।

मूत्रकृच्छ :

1. इसके 10 ग्राम पत्तों को काली मिरच के साथ घोंट छानकर सुबह शाम पिलाने से दाह और मिश्री के साथ पिलाने से मूत्र संबंधी रोग मिटते हैं।
2. इसकी ताजी 10–15 ग्राम जड़ को दूध में पीसकर पिलाने से तथा भोजन में चावल, घी तथा दूध मिलाकर सेवन से लाभ होता है।
3. इसके 10 ग्राम पत्रों को आधा किलो पानी में भिगोकर, मल छानकर, लुआब निकालकर मिश्री मिलाकर सुबह–शाम पिलाते हैं। इससे मूत्र खुलकर होता है तथा प्रमेह में भी लाभ होता है।
4. इसके बीजों के 1 ग्राम चूर्ण में 2 ग्राम मिश्री मिलाकर दूध के साथ सुबह–शाम फंकी देने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
5. बला मूल, गोखरू, भटकैय्या की जड़ 1–1 ग्राम, सौंठ 1/2 ग्राम और 3 ग्राम गुड़ में पकाकर पीने से मल–मूत्र की रूकावट तथा ज्वर–शोथ का नाश होता है।[4]

अतिसार :

1. इसके 5 ग्राम जड़ के क्वाथ में जायफल 1 ग्राम घिसकर पिलाने से अतिसार मिटता है।
2. किसी भी रोग से मुक्ति होने के बाद होने वाली निर्बलता पर मूल छाल के चूर्ण में समभाग मिश्री मिला 3 ग्राम से 5 ग्राम तक चूर्ण दूध के साथ प्रातः–सायं सेवन करें।

प्रसूता शूल : प्रसूताशूल में, इसके मूल के क्वाथ से सिद्ध तैल–घृत सुबह–शाम दो बार पिलाने से लाभ होता है।

सगर्भा स्त्री के शूल पर : मूल कल्क एवं क्वाथ से सिद्ध किए हुए घी का सेवन प्रातः–सायं कराते रहने से शूल की शांति तथा गर्भ एवं गर्भिणी की पुष्टि होती है।

रक्त प्रदर : रक्त प्रदर हो तो इसकी जड़ व पत्ते को चावलों के धोवन के साथ पीस छानकर सेवन करायें।

श्वेत प्रदर :

1. बीज चूर्ण 3 ग्राम में समभाग मिश्री या खांड मिला कर प्रयोग करें तथा बला मूल 5 ग्राम, काली मिर्च सात दाने, दोनों को 50 ग्राम पानी में पीस छानकर, प्रातः–सायं सात दिन प्रयोग करने से पूर्ण लाभ होता है। मैथुन तथा चावल का सेवन अपथ्य है।
2. श्वेत प्रदर में मूल का चूर्ण 3 ग्राम, गाय के दूध के साथ, मिश्री मिला दिन में तीन बार सेवन से लाभ होता है।

गर्भ धारणार्थ : जड़ के चूर्ण के साथ कंघी का चूर्ण, मिश्री और मुलेठी चूर्ण समभाग मिलाकर, 3 से 6 ग्राम तक, शहद व घी चाटकर ऊपर से दूध पीने से गर्भधारण में सहयोग मिलता है। भाव प्रकाश उक्त योग में बड़ के अंकुर तथा नागकेसर को भी मिलाते

Scanned by CamScanner

हैं। यह और भी लाभदायक है।

फिरंगोपदंश जन्य क्षतों पर : जड़ को पीसकर बांधने तथा इसके पंचांग से प्रक्षालन करके फोड़ों को पकाकर फोड़ने के लिए मूत्र छाल के साथ कपोत विष्टा को पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

अंण्डकोषवृद्धि पर : इसके 10 ग्राम क्वाथ में 10 ग्राम तक शुद्ध रेंडी तैल मिलाकर दिन में दो बार पिलाते है।

प्रमेह पर : बला मूल 10 ग्राम, महुआ वृक्ष की छाल 5 ग्राम, दोनों को 250 ग्राम पानी में पीस छानकर, उसमें 25 ग्राम मिश्री या शक्कर मिलाकर प्रातः–सायं सेवन कराने से प्रमेह दूर होकर वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

शुक्र प्रमेह :

1. बीज चूर्ण 10 ग्राम में समभाग काली मिर्च चूर्ण मिलाकर 6 ग्राम तक प्रातः–सायं मिश्री या शक्कर के साथ सेवन करें तथा ऊपर शक्कर मिलाया हुआ गौदुग्ध 250 ग्राम पीयें। वीर्य गाढ़ा होकर शुक्र प्रमेह दूर हो जाता है।
2. शुक्रमेह पर ताजी जड़ को पानी के साथ छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर प्रातः पिलाते हैं।

श्लीपद : मूल के चूर्ण के साथ कंघी मूल का चूर्ण समभाग मिला, 3 ग्राम तक दूध के साथ सुबह–शाम सेवन करायें।

गठिया :

1. इसकी जड़ 5 से 10 ग्राम का क्वाथ दिन में 3 बार पिलाने से मूत्र अधिक लगकर गठिया, वातरक्त में लाभ होता है।
2. अंगुली के पोरों की गांठ में होने वाले महान कष्टदायक व्रण पर इसके कोमल पत्तों को पीस टिकिया बनाकर बांध दें, ऊपर से शीत जल डालते रहें। इस प्रकार दिन में 2–3 बार करने से शीघ्र लाभ होता है।

अंगघात : बला मूल को जल में उबालकर 1 माह तक सेवन करने से लाभ होता है। बला मूल सिद्ध तेल की मालिश भी करनी चाहिए।

अवबाहुक :

1. अवबाहुक नामक वात व्याधि में बला मूल 2 ग्राम अथवा फलेरु (पारिभद्र) की छाल 1 ग्राम का क्वाथ बनाकर सुबह–शाम पीने से एक माह में भुजा वज्र के समान हो जाती है।
2. इसके क्वाथ में रोंधा नमक मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।
3. बला मूल 2 ग्राम के साथ नीम की छाल 2 ग्राम मिला क्वाथ कर सुबह–शाम पिलाने से एक माह में मन्यास्तम्भ (सर्वाइकल स्पाण्डलाइटिस) मिटता है।

शस्त्र आदि से हुए जख्म : इसकी जड़ व पत्तों के रस को घाव में भर देते हैं तथा उसी रस में रूई को भिगोकर व्रण के ऊपर बांध देते हैं ऊपर से बार–बार बला मूल रस टपकाते रहने से घाव भर जाता है।

बाल रोगों पर : बच्चों के सूखा रोग पर इसके पंचांग का चूर्ण 3 ग्राम का क्वाथ पिलायें तथा 50 ग्राम पंचांग को 3–4 किलो पानी में पकाकर स्नान करायें। ऐसा 5 बार करने से सूखा रोग निश्चय ही पूर्ण लाभ होता है।

वदग्रंथि : बंद गांठ को फोड़ने के लिए कोमल पत्तों को पीसकर पुल्टिस बना बांधते हैं तथा ऊपर से जल छिड़कते रहते हैं, गांठ शीघ्र फूट जाती है।

कफज विसर्प पर : पत्तों को पीसकर, रस निचोड़कर मालिश करने से लाभ होता है।

1. बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत्।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्र क्षतनाशनम्।। (भाव प्रकाश)
2. बला संग्राहिक–बल्य–वातहराणाम्। (चरक)
3. बला स्निग्धा हिमा स्वादु वृष्या बल्या त्रिदोषनुत्।
रक्तपित्तं क्षयं हन्ति बलौजो बर्धयत्यपि। (ध० नि०)
4. त्रिकंटक बला व्याघ्री गुडनागर साधितम्।
वर्चो मूत्र विबन्धघ्नं शोफज्वरहरं पयः।। (चरक)
6. बलाग्नि वृहति वासा द्राक्षामिः क्वथितंजलम्।
पिबकासा पहंपेय रामयुथौ जितम। (भैषज्य रत्नावली)
7. मूल बलाया स्त्वथ परिपदा तथा ऽऽत्मगुप्तारबरसं पिवेहा।
पिबकासा पहं पेय राम युथौ नितम। (भैषज्य रत्नावली)
8. बला बिल्व श्रृते क्षीरे घृतमंड विपाचरेत्।
तस्य शुक्तिः प्रकुंचोबा भूर्वागतेऽनिले। (चरक)

Scanned by CamScanner

बेल

36

वैज्ञानिक नाम	:	*Aegle marmelos* (L.) Correa
कुलनाम	:	Rutaceae
अंग्रेजी नाम	:	Bael fruit tree, Bael
संस्कृत	:	बिल्व, श्रीफल, पूतिवात, शैलपत्र, लक्ष्मीपुत्र, शिवेष्ट
हिन्दी	:	बेल, बिली, श्रीफल
गुजराती	:	बेल, बीली
मराठी	:	बेल
बंगाली	:	बेल
तैलगु	:	बिल्वयु, मोरेडु
अरबी	:	सफरजले
उर्दू	:	बेल
तमिल	:	बिलूबम

परिचय

बेल वृक्ष अति प्राचीन पूर्ण रूपेण भारतीय वृक्ष है। शास्त्रपुराण एवं वैदिक साहित्य में इसे दिव्य वृक्ष कहा गया है। इस वृक्ष में लगे हुये पुराने पीले पड़े हुये फल वर्ष उपरान्त पुनः हरे हो जाते हैं, तथा इसके तोड कर सुरक्षित रखे हुये पत्र 6 माह तक ज्यों कि त्यों बने रहते हैं एवं गुणहीन नहीं होते। इस वृक्ष की छाया शीतल और आरोग्य कारक है। इन्हीं दिव्य गुणों के कारण यह बहुत पवित्र एवं अशुद्धि निवारक माना जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 25–30 फुट ऊंचा, 3–4 फुट मोटा, पत्र संयुक्त, त्रिफाक और गन्धयुक्त होता है। फल 2–4 इंच व्यास का गोलाकार धूसर पीताभ होता है। बीज छोटे कड़े तथा अनेक होते हैं।

रासायनिक संघटन

बेल के अंदर टैनिक एसिड, एक उड़नशील तेल, एक कड़वा तत्व और एक चिकना लुआबदार पदार्थ पाया जाता है। इसकी जड़, पत्तों और छाल में शक्कर को कम करने वाले तत्व और टैनिन पाये जाते

Scanned by CamScanner

है। फल के गूदे में मारशेलीनिस तथा बीजों में पीले रंग का तेल, जो बहुत ही उत्तम विरेचन का कार्य करता है, पाया जाता है।

गुण–धर्म

उष्ण, कफ वात शामक, रोचक, दीपन, पाचन, हृद्य, रक्त स्तम्भन, कफघ्न, मूत्र एवं तद्गत शर्करा कम करने वाला, कटुपौष्टिक तथा अतिसार, रक्त अतिसार, प्रवाहिका, मधुमेह, श्वेत प्रदर, अतिरजःस्राव, रक्तार्श नाशक होता है।[1]

बाल फल : लघु, तिक्त, कषाय, दीपन, पाचन, स्निग्ध, उष्ण तथा शूल, आमवात, संग्रहणी, कफातिसार, वात, कफनाशक तथा आंत के लिये बल्य है।[2]

तरूण या अर्धपक्व फल : लघु, कटु, कसैला, उष्ण, स्निग्ध, संकोचक, दीपन, पाचन, हृदय एवं कफ वात नाशक है।[3] विल्व की मज्जा और बीज का तेल अति उष्ण एवं तीव्र वातनाशक होता है।[4]

पक्व फल : गुरू, कटु, तिक्त रस युक्त, मधुर रस प्रधान, उष्ण, दाहकारक, मृदुरेचक (अधिक मात्रा में कब्जकारक) वातानुलोमक, वायु को उत्पन्न करने वाला हृदय एवं बल्य है।

पत्र : संकोचक, पाचक, त्रिदोष विकारनाशक, कफ निःसारक, व्रणशोधक, शोथहर, वेदना, स्थापन तथा मधुमेह, जलोदर, कामला, ज्वर, नेत्राभिष्यंद आदि में उपयोगी है।

मूल और छाल : लघु, मधुर, वमन, शूल, त्रिदोष, नाडी तंतुओं के लिये शामक कुछ नशा पैदा करने वाली, ज्वर, अग्निमांद्य, अतिसार, प्रवाहिका, ग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, हृदय की दुर्बलता आदि में प्रयुक्त होती है।

औषधीय प्रयोग

शिरःशूल :

1. सिर के शूल में बेल की सूखी हुई जड़ को थोड़े जल के साथ पीसकर, मस्तक पर गाढ़ा लेप करने से लाभ होता है।
2. एक कपड़े को पत्रस्वरस में तर कर उसकी पट्टी सिर पर रखने से लाभ होगा। पत्र पीसकर सिर पर लेप करने से भी लाभ होता है।

जूं नाशार्थ : पके फल के आधे कटोरी जैसे छिल्के को साफ कर, उसमें तिल का तेल, कपूर मिलाकर डालकर दूसरे भाग से ढक कर रख दें। इस तेल को सिर में लगाने से जूंए नहीं पड़ती।

नेत्राभिष्यन्द : बेल के पत्रों पर घी लगाकर तथा सेंककर आंखों पर बांधने से, पत्तों का स्वच्छ स्वरस आंखों में टपकाने से, साथ ही पत्रों को पीसकर कल्क का लेप पलकों पर करने से नेत्रों के बहुत से रोग दूर होते हैं।

रतौंधी :

1. दस ग्राम ताजे बेल पत्रों को 7 नग काली मिर्च के साथ पीसकर, 100 ग्राम जल में छानकर, 25 ग्राम मिश्री या शक्कर मिलाकर सुबह–शाम पीयें तथा रात्रि में बिल्व पत्र भिगोये हुए जल से प्रातःकाल आंखों को धोवें।
2. बेल पत्र रस 10 ग्राम, गाय का घी 6 ग्राम और कपूर 1 ग्राम तांबे की कटोरी में इतना रगड़ें कि काला सुरमा बन जाये। इसे आंखों में लगायें और प्रातःकाल गौमूत्र से आंख धोयें।

बहरापन : बेल के कोमल पत्र निरोगी गाय के मूत्र में पीसकर तथा चार गुना तिल का तेल तथा 16 गुना बकरी का दूध मिलाकर मंद अग्नि द्वारा तेल सिद्ध कर रख लें। इसे नित्य कानों में डालने से बहरापन, सनसनाहट (कर्णनाद), कानों की खुश्की, खुजली आदि दूर होती है।

क्षय, श्वास, वमन : बेल मूल, अडूसा पत्र तथा नागफनी थूहर के पके सूखे हुए फल 4–4 भाग, सोंठ, काली मिर्च व पिप्पली 1–1 भाग लेकर उसको कूट कर रखें, उसमें से 20 ग्राम लगभग सबको कूट कर आधा किलो जल में चतुर्थांस कर, प्रातः–सायं शहद के साथ सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

हृदय शूल : पत्र स्वरस 1 ग्राम में गाय का घी 5 ग्राम मिलाकर चटायें।

उदर शूल :

1. बेलपत्र 10 ग्राम, काली मिर्च 7 नग पीसकर, 10 ग्राम मिश्री मिलाकर शर्बत बनाकर दिन में 3 बार पिलायें।
2. बेल मूल, एरंड मूल, चित्रक मूल और सोंठ एक साथ जौ कूट कर अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर उसमें थोड़ी सी भुनी हुई हींग तथा सेंधा नमक 1 ग्राम बुरककर, 20–25 ग्राम की मात्रा में पिलाने से तत्काल ही विशेषतः वात तथा कफजन्य शूल मिट जाता है। इन द्रव्यों का कल्क गरम कर उदर पर लेप करने से भी लाभ होता है।

दाह, तृष्णा, अजीर्ण, अम्लपित्त :

1. 20 ग्राम बेल पत्र को 500 ग्राम जल में 3 घंटे तक डुबोकर रखें। प्रति 2 घंटे पर 20–20 ग्राम वही जल पिलायें। आंतरिक दाह शांत होता है।
2. छाती में जलन हो तो पत्रों को जल के साथ पीस छानकर, 20 ग्राम में थोड़ी मिश्री मिलाकर दिन में 3–4 बार पिलायें।
3. 10 ग्राम पत्र स्वरस में काली मिर्च, सेंधा नमक 1–1 ग्राम मिलाकर दिन में 3 बार सेवन करें।

मंदाग्नि :

1. भूख न लगने तथा पाचन शक्ति कमजोर हो जाने पर, बेलगिरी चूर्ण, छोटी पिप्पली, बंसलोचन व मिश्री 2–2 ग्राम एकत्र कर इसमें 10 ग्राम तक अदरक का रस मिलाकर तथा थोड़ा जल मिला, आग में पकायें। गाढ़ा हो जाने पर दिन में 4 बार चटायें।
2. बेलगिरी चूर्ण 100 ग्राम और अदरक 20 ग्राम दोनों को

Scanned by CamScanner

पीसकर थोड़ी शक्कर 50 ग्राम व इलायची 20 ग्राम चूर्ण मिलाकर चूर्ण कर लें। सुबह–शाम भोजनोपरान्त आधा चम्मच गुनगुने जल से लेने से आंव का पाचन होगा, भूख बढ़ेगी।

3. बेलगिरी का पका फल मंदाग्नि और ज्वर में लाभदायक है।

संग्रहणी :

1. बेलगिरी चूर्ण 10 ग्राम, सौंठ चूर्ण और पुराना गुड़ 6–6 ग्राम खरल कर, दिन में तीन या चार बार छाछ के साथ 3 ग्राम की मात्रा में सेवन करायें। भोजन में केवल छाछ दें।
2. बेलगिरी और कुड़ाछाल दोनों का चूर्ण एकत्र कर मिला (10 से 20 ग्राम तक) रात्रि के समय 150 ग्राम जल में भिगोकर, प्रातः इस हिम (भिगा हुआ जल) को मसल छानकर पिलायें।
3. कच्चे बेल को आग में सेंककर, 10 से 20 ग्राम गूदे में थोड़ी शक्कर और शहद मिलाकर पिलायें।

प्रवाहिका :

1. कच्चे बेल का गूदा, गुड़, तिल, तेल, पिप्पली, सौंठ, इन्हें समभाग में मिश्रित कर प्रवाहिका से जब उदर में वातरूद्ध शूल हो और बार–बार उपवेश की इच्छा हो, पर पूरी न होकर थोड़ा–थोड़ा आंव सहित आये तब 10–20 ग्राम की मात्रा प्रातः–सायं प्रयोग करना चाहिए।[8]
2. बेलगिरी एवं तिल समभाग लेकर कल्क कर, दही की मलाई या घी के साथ सेवन करें।
3. प्रवाहिका में पत्र स्वरस 10 ग्राम में 3 ग्राम मधु खिलाकर प्रति तीन घंटे के अंतर से चटाते हैं।

अतिसार :

1. बेल के कच्चे फल को आग में सेंक कर, 10 से 20 ग्राम गूदे को मिश्री के साथ दिन में 3–4 बार खिलाने से पुराना अतिसार और आमातिसार मिटता है।
2. शुष्क बेल गिरी 50 ग्राम, श्वेत कत्था 20 ग्राम दोनों के महीन चूर्ण में 100 ग्राम मिश्री मिलाकर 1.5 ग्राम मात्रा में दिन में 3–4 बार के सेवन से सब प्रकार के अतिसारों में लाभ होता है।
3. 200 ग्राम बेलगिरी को 4 किलो जल में पकाकर जब 1 किलो के लगभग जल शेष रह जाये, छानकर 100 ग्राम लगभग मिश्री मिलाकर बोतल में भरकर रख लें। इसको 10 या 20 ग्राम की मात्रा में 500 मिलीग्राम भुनी हुई सौंठ, अत्यधिक तीव्र अतिसार हो तो मूग बराबर अफीम मिलाकर सेवन करने से 2 या 3 बार में ही सब प्रकार के अतिसारों में लाभ होता है।
4. गर्भवती स्त्री को अतिसार होने पर 10 ग्राम बेलगिरी के पावडर को चावल के धोवन जल के साथ पीसकर थोड़ी मिश्री मिला, दिन में 2–3 बार देने से लाभ होता है। किसी भी दशा में इससे लाभ ही होता है।
5. 5 ग्राम बेलगिरी को सौंफ के अर्क में घिसकर दिन में 3–4 बार देने से बालक के हरे पीले दस्त ठीक हो जाते हैं।
6. बेलगिरी व पलाश का गोंद 1–1 ग्राम तथा मिश्री 2 ग्राम एकत्र कर थोड़े जल के साथ खरल कर मंद आंच पर गाढ़ा कर चटाने से भी लाभ होता है।

पित्तातिसार : बेल का मुरब्बा खिलाने से पित्त अतिसार मिटता है। पेट के समस्त रोगों के लिए बेल का मुरब्बा सेवनीय है।

आम अतिसार :

1. बेल के कच्चे और साबूत फल को भूमल में भूनकर, उसको छिलके सहित कूटकर रस निकालकर, मिश्री मिलाकर देने से पुराना अतिसार मिटता है। यह प्रयोग दिन में एक या दो बार लगातार 10–15 दिन तक करें।
2. बेलगिरी के समभाग कत्था, आम की गुठली की मींगी, ईसबगोल की भूसी और बादाम की मींगी सब बराबर मात्रा में मिलाकर शक्कर या मिश्री के साथ 3–4 चम्मच सेवन करते रहने से जीर्णअतिसार, आम अतिसार, प्रवाहिका आदि में लाभ होता है।
3. बेलगिरी और आम की गुठली की मींगी समभाग, पीसकर 2 से 4 ग्राम तक चावल के मांड के साथ या शीतल जल के साथ प्रातः–सायं सेवन करायें। यह प्रयोग अत्यन्त निरापद एवं प्रभावशाली है।

रक्त अतिसार :

1. बेलगिरी के 50 ग्राम गूदे को 20 ग्राम गुड़ के साथ दिन में तीन बार खाने से रक्त अतिसार मिटता है।
2. चावल के 20 ग्राम धोवन में बेलगिरी चूर्ण 2 ग्राम और मुलेठी चूर्ण 1 ग्राम को पीसकर, 3–3 ग्राम शक्कर और शहद मिलाकर दिन में 2–3 बार सेवन कराने से पित्तारक्त अतिसार मिटता है।
3. बेलगिरी और धनियां 1–1 भाग, मिश्री दो भाग, एकत्र

Scanned by CamScanner

चूर्ण कर 2–6 ग्राम तक ताजे जल से प्रातः सायं सेवन कराने से उत्तम लाभ होता है।

4. कच्चे बेल को कंडे की आग में भूनें, जब छिल्का बिल्कुल काला हो जाये तब भीतर का गूदा निकालकर 10 से 20 ग्राम तक दिन में तीन बार मिश्री मिला सेवन करायें।

तृषा वमन दाह कोष्ठबद्धता, मंदाग्नि पर :

1. पके फल के गूदे को शीतलजल में मसल, छानकर, मिश्री, इलायची, लौंग, कालीमिर्च तथा किंचित कपूर मिलाकर शरबत बनाकर पीने से तृषा, दाह, वमन, कोष्ठबद्धता तथा मंदाग्नि दूर होती है। जिन्हें कब्जियत की शिकायत हो वे इसे भोजन के साथ लें।
2. 100 ग्राम गूदे को मसल, छानकर उसमें थोड़ी शक्कर मिला सेवन करने से भी लाभ होता है।
3. 100 ग्राम गूदे को इमली के पानी के साथ थोड़ी शक्कर मिलाकर या दही के साथ शक्कर मिलाकर पीने से कोष्ठबद्धता तथा दाह दूर होती है।

वातगुल्म : वात गुल्म में बेलगिरी या कोमल फल के गूदे 10–20 ग्राम को गुड़ के साथ सेवन करने से रक्त अतिसार, आम शूल, विबन्ध, वातगुल्म तथा उदर रोग नष्ट होता है।[7]

रक्तार्श :

1. बेल गिरी के चूर्ण में समभाग मिश्री मिलाकर, 4 ग्राम तक शीतल जल के साथ सेवन कराने से रक्तार्श में शीघ्र लाभ होता है।
2. रोगी के मस्सों में विशेष वेदना हो तो विल्ब मूल का क्वाथ तैयार कर सुहाते–सुहाते क्वाथ में रोगी को बैठाने से शीघ्र ही वेदना दूर हो जाती है।

हैजा व वमन : आम की मींगी और बेलगिरी दोनों को 10–10 ग्राम लेकर कूट पीसकर 500 ग्राम जल में पकायें। 100 ग्राम शेष रहने पर शहद और मिश्री मिलाकर 5 से 20 ग्राम तक आवश्यकतानुसार पिलायें, इससे वमन युक्त अतिसार में भी लाभ होता है।[5]

विसूचिका : बेलगिरी और गिलोय 1–4 ग्राम कूटकर आधा किलो जल में पकायें। 250 ग्राम शेष रहने पर छानकर थोड़ा–थोड़ा पिलायें। यदि हैजा तीव्र हो तो इस क्वाथ में जायफल, कपूर और छुहारा मिलाकर क्वाथ करें तथा बार–बार थोड़ा–थोड़ा पिलायें।

मधुमेह :

1. ताजे पत्तों को समभाग 10 ग्राम से 20 ग्राम तक पीसकर उसमें 5–7 काली मिर्च भी मिलाकर पानी के साथ सुबह खाली पेट सेवन करने से मधुमेह में आशातीत लाभ प्राप्त होता है।
2. प्रतिदिन प्रातःकाल 10 ग्राम पत्र स्वरस का सेवन भी गुणकारी है।
3. बेलपत्र, हल्दी, गिलोय, हरड़, बहेड़ा और आंवला, 6–6 ग्राम, सबको कूटकर 250 ग्राम जल में रात्रि को कांच व मिट्टी के बर्तन में भिगो दें। प्रातःकाल खूब मसल, छानकर, आधी मात्रा प्रातः–सायं 2–3 माह तक सेवन करने से यह रोग नष्ट हो जाता है।
4. बेल पत्र और नीम पत्र 10–10 नग तथा तुलसी पत्र 5 नग, इनको पीसकर गोली बनाकर प्रातः नित्य जल के साथ सेवन करें।

पांडु (कामला) :

1. कामला व पांडुरोग में कोमल पत्रों के 10 से 30 ग्राम तक रस में आधा ग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर प्रातः–सायं सेवन कराने से लाभ होता है।
2. शोथ में पत्र रस को गरम कर लेप दें या पत्रों का क्वाथ कर बफारा देवें।

जलोदर : ताजे पत्रों के 25 से 50 ग्राम तक रस में छोटी पिप्पली चूर्ण एक या डेढ़ ग्राम मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

प्रदर : बेलपत्र रस को दोनों समय शहद के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।

बहुमूत्र : बेलगिरी 10 ग्राम, सोंठ 5 ग्राम को, जौकूट कर 400 ग्राम जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर सुबह–शाम सेवन कराते रहने से 5 दिन में पूर्ण लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र :

1. इसके ताजे फल के गूदे को पीसकर दूध के साथ छानकर उसमें शीतल चीनी का चूर्ण मुरमुरा कर पिलाने से पुराना मूत्रकृच्छ्र मिटता है। पेशाब रूक–रूककर होने में यह अत्यन्त लाभप्रद है।
2. कोमल ताजे पत्र 6 ग्राम, श्वेत जीरा 3 ग्राम और मिश्री 6 ग्राम एक साथ पीसकर कल्क को खाकर ऊपर से जल पीने से, 6 या 7 दिन में पूर्ण लाभ होता है। इससे मूत्र के अनेक विकार दूर होते हैं।
3. बेल की जड़ लगभग 20–25 ग्राम को रात्रि में कूटकर, 500

बेल गिरि

Scanned by CamScanner

ग्राम जल में भिगोकर, सुबह मसल, छानकर मिश्री मिलाकर पीयें, मूत्रजलन, कष्ट आदि की शिकायतें दूर होती हैं।

4. बेल की जड़, अमलतास की जड़ प्रत्येक 25–25 ग्राम, कूटकर 500 ग्राम जल में पकायें। 125 ग्राम शेष रहने पर प्रातःकाल सेवन कराने से 3 दिन में पूरा लाभ होता है। साथ ही विल्ब मूल क्वाथ की उत्तर बस्ति भी दें।

कमजोरी :

1. केवल बेलगिरी के चूर्ण को मिश्री मिले हुए दूध के साथ सेवन करने से रक्ताल्पता, शारीरिक दुर्बलता तथा वीर्य की कमजोरी दूर होती है।
2. धातु दौर्बल्य में 3 ग्राम पत्र चूर्ण में थोड़ा शहद मिलाकर सुबह शाम नियमित चटायें।
3. पत्र स्वरस में या पत्रों की चाय में जीरा चूर्ण और दूध मिलाकर पीयें। मात्रा–पत्र स्वरस 20 से 50 ग्राम, जीरा चूर्ण 6 ग्राम, मिश्री 20 ग्राम और दूध।
4. बेलगिरी, असगंध और मिश्री समभाग चूर्ण कर उसमें चौथाई भाग उत्तम केशर का चूरा मिलाकर, 4 ग्राम तक प्रातः–सायं खाकर ऊपर गरम दूध पियें।
5. सुखाये हुए पक्व फलों के गूदे के महीन चूर्ण का थोड़ी मात्रा में नित्य प्रातः–सायं सेवन करने से कमजोरी दूर होती है।

वात ज्वर : विल्ब, अरणी, गंभारी, श्योनाक तथा पाढ़ल, इनकी जड़ की छाल, गिलोय, आंवला, धनिया, समभाग लेकर इनके 20 ग्राम मात्रा को 160 मिलीलीटर जल में उबालकर 40 मिलीलीटर शेष बचे क्वाथ को वातज्वर में प्रातः–सायं 20–20 मिलीलीटर मात्रा में सेवन करना चाहिए।[6]

दुर्गन्धनाशक : शरीर की दुर्गन्ध दूर करने के लिए पत्र रस का लेप करना चाहिए।

कांटा : शरीर में कहीं पर भी कांटा आदि धंसने पर तथा न निकलने पर पत्र की पुल्टिस बांधने से, वह शल्य वहीं गलकर नष्ट हो जाता है तथा कोई विकार नहीं होता है।

शूल : यकृत शूल में 10 ग्राम पत्र स्वरस में 1 ग्राम सेंधा नमक मिलाकर दिन में 3 बार पिलाने से लाभ होता है।

फोड़े फुंसी : रक्त विकार से उत्पन्न फोड़े फुंसियों पर, इसकी जड़ या लकड़ी को जल में पीसकर लगाने से लाभ होता है।

अग्निदग्ध :

1. कीट दंश पर या अग्निदग्ध पर इसके ताजे पत्तों के रस को बार–बार लगाने से शक्ति मिलती है।
2. चेचक की बीमारी में जब शरीर में अत्यन्त दाह एवं बेचैनी हो तो पत्र रस में मिश्री मिलाकर पिलाने से तथा बेल पत्रों का पंखा बनाकर हवा करने से रोगी को विशेष शक्ति मिलती है।

व्रण गलगंड, नारू आदि :

1. व्रण पर पत्तों को बिना जल के पीसकर टिकिया बनाकर बांधने से लाभ होता है।
2. पत्तों को पीसकर, पुल्टिस बनाकर फोड़ों पर बांधने से अति शीघ्र आराम होता है।
3. कैंसर अथवा कार्बन्कल नामक भयंकर जहरीले व्रणों के सुधार हेतु पत्तों की पुल्टिस, पत्ररस से या क्वाथ से प्रक्षालन, तथा साथ ही नित्य 25 ग्राम तक पत्र रस दिन में 3 बार सेवन कराने से भयंकर व्रण भी ठीक हो जाता है।
4. गलगंड व अपची में भी उक्त प्रयोग लाभकारी है।

ज्वर :

1. उस ज्वर में जिसमें लीवर की दशा ठीक न हो, उसमें बेल का अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर, उसमें मधु मिलाकर प्रातः–सायं 20 मिली लीटर मात्रा में पिलायें।
2. इसके पत्तों के क्वाथ से ज्वर और सूखी खांसी मिटती है।

1 श्रीफलस्तुवरस्तिक्तो ग्राही रूक्षोऽग्निपित्तकृत् ।
वातश्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः।। (भाव प्रकाश)

2 कफानिलहरं तीक्ष्णं स्निग्धं संग्राहि दीपनम्।
कटुतिक्त कषायोष्णं बालं बिल्वमुदाहृतम्।। (सुश्रुत)

3 विद्यात्तदेवसंपक्वं मधुरानुरसं गुरू।
विदाहि विष्टम्भकरं दोषकृत पूतिमारुतम्।। (सुश्रुत)

4 बिल्वमज्जं भवं तैलमुष्णंवातहरं परं।
बिल्वं साङ्ग्राहिकदीपनीयवातकफप्रशमनानाम्।। (कै०नि०)

5 विल्बचूतस्थिनिर्यूहः पीतः सक्षौद्रशर्करः।
निहन्याच्छर्धतीसारं वैश्वानर इवाहुतिम्।। (भैषज्य रत्नावली)

6 बिल्वादि पंचमूली च गुडूच्यामलके तथा।
कुस्तुम्बुरूसमो ह्येष कषायो वातिके ज्वरे। (भैषज्य रत्नावली)

7 गुडेन खादितं बिल्वं रक्तातिसारनाशनम्।
आमशूलविबन्धघ्नं कुक्षिरोगविनाशकम्।। (भैषज्य रत्नावली)

8 बालं बिल्वं गुडं तैलं पिप्पलीविश्वभेषजम्।
लिह्याद्वाते प्रतिहते सशूलः सप्रवाहिकः। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

भांग

37

वैज्ञानिक नाम	:	*Cannabis Sativa* L.
कुलनाम	:	Cannabinaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian Hemp
संस्कृत	:	भंगा, विजया, मदकारिणी, मादनी
हिन्दी	:	भंग, भांग
गुजराती	:	भांग
मराठी	:	भांग
बंगाली	:	सिद्धि भांग
अरबी	:	किन्नाब, कुन्नब
फारसी	:	कनब, किनब, बंग

परिचय

भांग के स्वयंजात पौधे, भारतवर्ष में सब जगह विशेषतः उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल एवं बिहार में प्रचुरता से पाये जाते हैं। भांग के नर पौधों के पत्रों को सुखाकर भांग तथा मादा पौधों की रालीय पुष्प मंजरियों को सुखाकर गांजा तैयार किया जाता है तथा भांग की शाखाओं और पत्तों पर जमे राल सदृश पदार्थ को चरस कहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसके वर्षायु, गंधयुक्त, रोमश क्षुप 3–8 फुट ऊँचे होते हैं। पत्र एकान्तर क्रम से व्यवस्थित होते हैं, ऊपर की पत्तियाँ 1–3 खंडों तथा निचली पत्तियाँ 3–8 खंड़ों से युक्त होती है। निचली पत्तियों में पत्रवृन्त लंबे होते हैं, पुष्प छोटे हरितवर्ण, कोणोदभूत तथा एकलिंगी होते हैं। फल छोटे दानेदार होते हैं जिनके भीतर एक–एक चपटा बीज होता है, पुष्प और फल शरद ऋतु में लगते हैं।

रासायनिक संघटन

भांग में भूरे रंग की एक मृदु राल, जिसे केनाबिनोल कहते हैं, पायी जाती है। राल में लाल रंग का एक गाढ़ा चिपचिपा तेल पाया जाता है। हवा में खुला रखने पर यह रालीय हो जाता है। इसके अतिरिक्त भारतीय भांग में कुछ गोंदीय पदार्थ शर्करा, उड़नशील तेल तथा कैल्शियम फॉस्फेट आदि तत्व भी पाये जाते हैं।

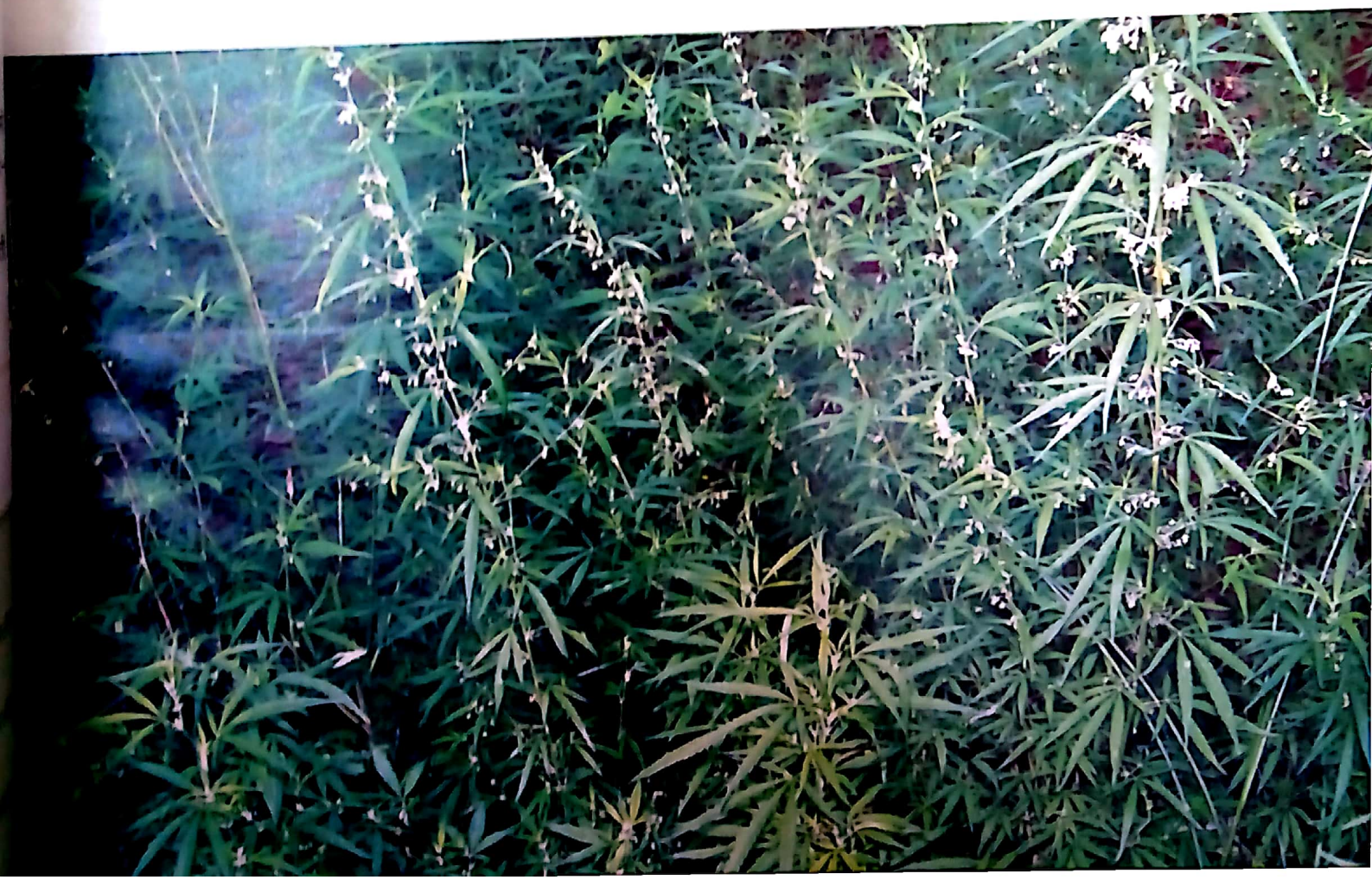

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

कफ नाशक, कड़वी ग्राही, पाचक, हल्की, तीक्ष्ण गरम, पित्त कारक और मदकारिणी तथा अग्नि वर्द्धक है। इसके बीज ग्राही और वमन तथा दस्तों को रोकने वाले हैं।

औषधीय प्रयोग

कर्णशूल : इसके 8–10 बूंद स्वरस को कान में डालने से कीड़े मरते है और कान की पीड़ा मिट जाती है।

निद्रानाश : भांग के सेवन से नींद बहुत अच्छी आती है। जिन दशाओं में अफीम के सेवन से नींद नहीं होती, उन दशाओं में भांग का सेवन बहुत अच्छा है, क्योंकि इसके प्रयोग से कोष्ठबद्धता और मस्तक पीड़ा नही होती है।

मस्तक पीड़ा :

1. भांग के पत्तों को महीन पीसकर सूंघने से मस्तक पीड़ा नष्ट हो जाती है।
2. इसके पत्तों का अर्क गर्म कर कान में 2–3 बूंद की मात्रा डालने से सर्दी और गर्मी की मस्तक पीड़ा मिटती है।

हिस्टीरिया : 250 मिलीग्राम भांग को हींग के साथ या 65 मिलीग्राम सूखा सार हींग के साथ देने से स्त्रियों के आवेश रोग में बहुत लाभ होता है।

शिरः कृमि : इसके पत्तों का स्वरस मस्तक पर लेप करने से मस्तक की मुस्सी (रूसी) मिट जाती है और कीड़े मर जाते हैं।

खांसी : गांजे का 65 मि०ग्रा० सत दमा और खांसी के वेग को रोकता है।

दमा :

1. सेंकी हुई एक 125 मिलीग्राम भांग को 2 ग्राम काली मिर्च और 2 ग्राम मिश्री मिलाकर देने से श्वांस का वेग कम होता है।
2. भांग का धुआं पीने से श्वास रोग में लाभ होता है।

संग्रहणी : 100 ग्राम भांग, 200 ग्राम शुंठी और 400 ग्राम जीरा, तीनों चीजों को अच्छी तरह एक साथ पीस छानकर रख लें। इस चूर्ण की 80 पुड़िया बना लें। भोजन से आधा घण्टे पहले 1–2 चम्मच दही में मिलाकर चाट लें। यह प्रयोग 40 दिन तक सुबह–शाम करने से पुरानी से पुरानी संग्रहणी चली जाती है।

उदर शूल : भांग और मिर्च चूर्ण दोनों को समान मात्रा में गुड़ में ½ ग्राम गोली बना कर देने से उदरशूल मिटता है।

दीपन : काली मिर्च और भांग के 500 मिलीग्राम चूर्ण को शहद के साथ सुबह–शाम चाटने से भूख बढ़ती है।

आमातिसार :

1. भांग के 125 मिलीग्राम चूर्ण की फंकी सौंफ के 4–6 बूंद अर्क के साथ दिन में दो बार देने से तीव्र आमातिसार मिटता है
2. सेकी हुई भांग को धोकर, महीन पीस लें, 125 मिलीग्राम चूर्ण को मधु के साथ दिन में दो बार चाटने से अतिसार और आमअतिसार मिटता है।
3. भांग के 100 मिलीग्राम चूर्ण में 50 मिलीग्राम पोश्त दाने का चूर्ण मिलाकर सुबह–शाम खाने से आमअतिसार मिटता है
4. भांग की सूखी कोमल टहनियों और पुष्पों को शक्कर और काली मिर्च के साथ देने से आमअतिसार मिटता है। यदि आवश्यकता हो तो इसमें अहिफेन मिलाकर देना चाहिए।

वृषण शोथ :

1. पानी में भांग को थोड़ी देर भिगो रखें, फिर उस पानी से सूजन अंडकोषों को धोने से तथा फोम को अंडकोषों पर बांधने से अंडकोषों की सूजन उतर जाती है।
2. इसके गीले पत्तों की पुल्टिस बनाकर अंडकोषों की सूजन पर बांधना चाहिए और सूखी भंग को पानी में उबालकर बफारा देने से अंडकोषों की सूजन उतर जाती है।

मूत्रकृच्छ्र : भांग और खीरा ककड़ी की मगज को पानी में घोंट छान कर ठंढ़ई की तरह पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटती है।

कष्टार्तव : मासिक धर्म आने से पहले उदर को मृदु विरेचन देकर उदर को शुद्ध कर लेना चाहिए। फिर गांजा दिन में तीन बार देते रहने पर वेदना कम होती है और रजःस्राव नियमानुसार होने लगता है।

अर्श : फूली हुई और दर्दनाक बवासीर पर हरी या सूखी भांग 10 ग्राम अलसी, 30 ग्राम की पुल्टिस बनाकर बांधने से दर्द और खुजली मिट जाती है।

मूत्रेन्द्रिय : गांजे को अरंडी के तेल में पीसकर मूत्रेन्द्रिय पर लेप करने से ताकत बढ़ती है और इन्द्री का टेढ़ापन दूर

Scanned by CamScanner

होता है।

विसूचिका : हैजे के प्रारंभ में गांजा या भांग 250 मिलीग्राम छोटी इलायची, काली मिर्च 250–250 मिलीग्राम तथा कपूर मिलाकर आधा–आधा घण्टे या 1–1 घण्टे पर उबालकर शीतल कर जल के साथ देते रहने से हैजे का रोगी ठीक हो जाता है।

गठिया : इसके बीजों के तेल की मालिश करने से गठिया मिटती है।

धनुस्तम्भ :

1. एक ग्राम भांग का धुआं पिलाने से धीरे–धीरे आक्षेप कम होता जाता है। बार–बार धुआं पीने से रोग छूट जाता है।
2. 125 मिलीग्राम घी में सेकी हुई भांग को 2 ग्राम काली मिर्च और 2 ग्राम मिश्री में मिलाकर दिन में 3–4 बार देना चाहिए।

स्नायु पीड़ा : स्नायु पीड़ा, पित्त शोथ और एक प्रकार की शोथ जो मुंह पर होती है और आसपास फैलती जाती है। उस पर भांग के पंचाग को पानी में पीसकर लेप करना चाहिए।

मलेरिया ज्वर : शुद्ध भांग का चूर्ण एक ग्राम, गुड दो ग्राम, दोनों को मिलाकर 4 गोलियां बना लें। जाड़े का बुखार दूर करने के लिए 1–1 गोली 2–2 घण्टे के अंतर से दें या शुद्ध भांग की 1 ग्राम की गोली ज्वर के एक घण्टा पूर्व देने से ज्वर का वेग नहीं होता है।

व्रण : इसके पत्तों के चूर्ण को घाव और जख्म पर बुरकाने से वे जल्दी अच्छे हो जाते हैं।

हानि : गांजा और भांग का मात्रा से अधिक सेवन, शरीर को दुर्बल, पुरुष को नपुंसक, चरित्रहीन, विचारहीन बनाता है। अतः इसका प्रयोग काम उत्तेजना के लिए या नशे के लिए नहीं करना चाहिए।

दुष्प्रभाव निवारण : नारंगी, अनार का रस, दूध, घी इत्यादि। अमरूद व अमरूद के पत्तों का रस।

Scanned by CamScanner

38 भांगरा

वैज्ञानिक नाम	:	*Eclipta alba* (L.) Hassk.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Trailing eclipta
संस्कृत	:	भृंगराज, केशराज, केशरंजन, कुंतलवर्धन, मार्कव
हिन्दी	:	भंगेरा, भांगरा, भंगरैया
गुजराती	:	भांगरो, कालो–भांगरो
मराठी	:	भाका, बांगरा, भृंगराज
बंगाली	:	केसरी, कसूरीया, भीमराज, केशुत्त
पंजाबी	:	किशोरी, केशराज, केसरी, भीमराज
अरबी	:	कदीमुल–बिंत
कोंकण	:	हातू केनारी
उडिया	:	केसरडा
तमिल	:	केकेशी, केवी, शिलाई, काइकेशी

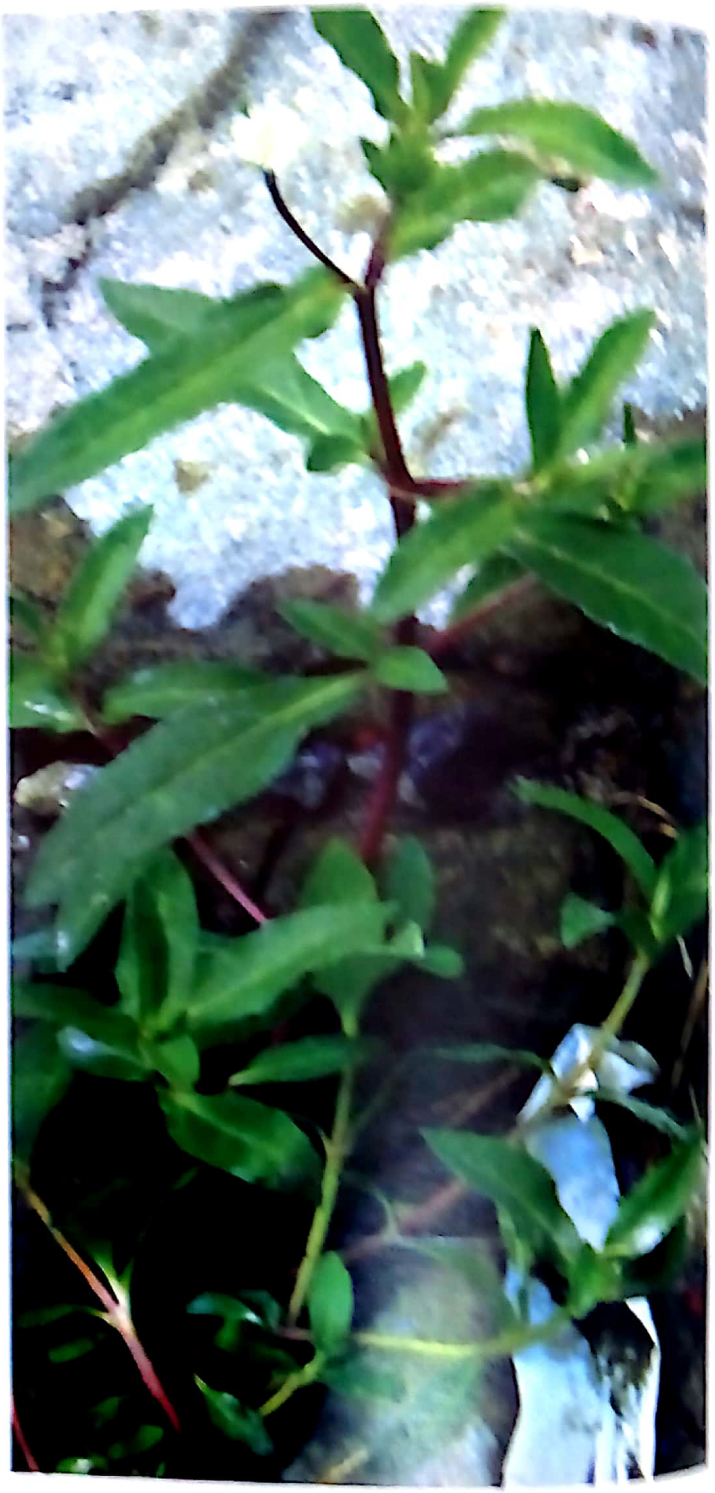

परिचय

घने मुलायम काले कुन्तल केशों के लिए प्रसिद्ध भांगरा के स्वयंजात क्षुप 6,000 फुट की ऊंचाई तक आर्द्रभूमि में जलाशयों के समीप बारह मास उगते हैं। इसकी एक और प्रजाति पीत भृंगराज *Chinensis* पाई जाती है, जिसके पौधे बंगाल, आसाम, कोंकण और मद्रास में अधिक पाये जाते हैं।

बाह्य–स्वरूप

भांगरा के छोटे–छोटे एक वर्षायु क्षुप, प्रसरणशील तथा कभी–कभी खड़े अनेक शाखीय, शाखाएं रोमावृत्त और ग्रन्थियों पर मूलयुक्त होती है। पत्र अभिमुख प्रायः अवृन्त या वृन्त बहुत छोटे, आयताकार, मालाकार या अंडाकार नुकीले होते हैं। श्वेत पुष्प मुंडकों मे लगते हैं। इसमें सामान्यतः जाड़ों में पुष्प व फल लगते हैं। बीज लम्बे, छोटे, काली जीर्ण के समान होते हैं। इसकी पत्तियों को मसलने पर एक हरित कृष्णाभ रस निकलता है जो शीघ्र ही काला पड़ जाता है।

रासायनिक संघटन

भांगरा में एक्लिप्टीन नामक एल्कोलाइड तथा विपुल मात्रा में रॉल पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह कफ वात शामक, वेदनास्थापन, नेत्र हितकारी, दीपन, पाचक, यकृत को उत्तेजित करने वाला, रक्त प्रसादन, रक्तशोधक, शोथहर, कुष्ठघ्न, कृमिघ्न, विषघ्न, रक्तचाप कम करने वाला, शरीर को बल देने वाला, ओज और कांति को बढ़ाने वाला, बल्य व रसायन है। बालों के लिये यह विशेष हितकारी है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

आधाशीशी : भांगरा के रस और बकरी का दूध समान भाग लेकर उसको गरम करके नाक में टपकाने से और भांगरा के रस में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर लेप करने से आधाशीशी मिट जाती है।

केशों के रोग :

1. बालों को छोटा करके उस स्थान पर जहाँ पर बाल न हों, भांगरा के पत्र स्वरस की मालिश करने से कुछ दिनों में अच्छे काले बाल निकलते हैं, जिनके बाल टूटते हैं, या दो मुंहें हो जाते हों उन्हें इस प्रयोग को अवश्य करना चाहिए।
2. त्रिफला के चूर्ण को भांगरा के रस की 3 भावनायें देकर अच्छी तरह सुखाकर खरल कर रखें। प्रतिदिन प्रातः डेढ़ ग्राम सेवन करने से बालों को सफेद होने से रोकता है। नेत्र ज्योति को भी बढ़ाता है।
3. आंवलों का मोटा चूर्ण कर, चीनी मिट्टी के प्याले में रखकर, ऊपर से भांगरा का इतना रस डालें कि आंवले उसमें डूब जायें। फिर खरल कर सुखा लें। इस प्रकार 7 भावना देकर सुखा लें। प्रतिदिन 3 ग्राम की मात्रा में ताजे जल के साथ सेवन से अकाल में बालों का श्वेत होना रूक जाता है। यह नेत्र ज्योति को बढ़ाने वाला, आयुवर्धक रसायन व सर्वरोग हर योग है।
4. भांगरा, त्रिफला, अनंतमूल, आम की गुठली, इनका कल्क प्रत्येक 20–20 ग्राम व 10 ग्राम मण्डूर कल्क व ½ किलो तेल व एक किलो जल में एकत्र कर पकायें। तेल मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें, बालों के सब प्रकार के रोगों को दूर करता है।

नेत्र विकार :

1. छाया शुष्क इसके पत्तों का महीन चूर्ण 10 ग्राम, शहद 3 ग्राम, गाय का घी 3 ग्राम, नित्य सोते समय रात्रि में 40 दिन तक सेवन से दृष्टिमांद्य आदि सर्व प्रकार के नेत्र रोगों में लाभ होता है।
2. इसका स्वरस 2 बूंद सूर्योदय से 1 घड़ी के अंदर या सूर्यास्त से 1 घड़ी पूर्व आंखों में डालते रहने से फूली आदि नेत्र विकार शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।
3. इसके दो किलो स्वरस में, मुलेठी का कल्क 50 ग्राम, तिल का तेल 500 ग्राम और गौ दुग्ध 2 किलो एकत्र कर मिला, मंद आंच पर पकायें। तेल शेष रहने पर छानकर रख लें। इसे नेत्रों में लगाने से तथा इसकी नस्य लेने से नेत्र शीघ्र ही अच्छे हो जाते हैं। खोई हुई ज्योति लौट आती है।
4. मामूली आंख दुखती हो तो इसके पत्तों की पुल्टिस नेत्रों पर बांधनी चाहिए।

दंतशूल : रोगी की जिस ओर की दाढ़ में दर्द हो उससे विपरीत, कान के भीतर इसके स्वरस की 2–4 बूंदें टपका देने से दर्द तत्काल दूर होता है। एक बार में लाभ न हो तो दो बार प्रयोग करने से अवश्य लाभ होता है।

कंठमाला : इसके पत्तों को पीसकर टिकिया बनाकर घी में पकाकर कंठमाला की गांठों पर बांधने से शीघ्र लाभ होता है।

मुखपाक : 5 ग्राम पत्तों को मुख में रखकर चबायें तथा लार थूकते जायें। दिन में कई बार करने से शीघ्र लाभ होता है।

पीनस रोग : भांगरा का स्वरस 250 ग्राम, तिल का तेल 250 ग्राम, सेंधा नमक 10 ग्राम, तीनों को मिलाकर मंद अग्नि पर पकाकर तेल सिद्ध कर लें। इस तेल की लगभग 10 बूंद तक नाक के दोनों नथुनों में टपकाने से, अंदर दूषित कफ तथा कृमि बाहर निकलकर थोड़े ही दिनों में यह रोग नष्ट हो जाता है। पथ्य में गेहूं की रोटी व मूंग की दाल लें।

कफ :

1. तिल्ली बढ़ी हुई हो, भूख बंद हो, लीवर ठीक न हो, कफ व खासी भी हो, ज्वर बना रहे तब भांगरे का 4 से 6 ग्राम स्वरस, 30 ग्राम दूध में मिलाकर प्रातः और रात्रि के समय सेवन करने से लाभ होता है।
2. टायफाइड में इसके स्वरस को 2–2 चम्मच दिन में 2–3 बार देने से लाभ होता है।

रक्त चाप : भांगरा के पत्तों का रस 2 चम्मच, शहद 1 चम्मच दिन में दो बार सेवन करने से उच्च रक्तचाप कुछ ही दिनों में सामान्य हो जाता है। यदि पेट में कब्जी न हो तो यह सामान्य रह सकता है। इससे पेट भी ठीक रहता है और भूख भी बढ़ती है।

अग्निमांद्य व पांडुरोग :

1. भांगरा के पूरे पौधे को जड़ सहित छाया में शुष्क कर चूर्ण कर उसमें बराबर की मात्रा में त्रिफला चूर्ण मिला लें। तत्पश्चात मिश्रण के बराबर मिश्री मिला लें। इस मिश्रण की 20 ग्राम मात्रा शहद या पानी के साथ दिन में तीन बार खाने से मंदाग्नि और पांडुरोग मिटता है।
2. भांगरा के पत्ते और फूलों के छाया शुष्क चूर्ण में थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर 2–2 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम सेवन करने से अग्नि की वृद्धि होती है। अरूचि दूर होती है।
3. इसके ताजे स्वच्छ पत्तों को पीसकर, 2 ग्राम कल्क में सात काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर नित्य प्रातः खाली पेट खट्टे दही या तक्र के साथ देने से 5 या 6 दिन में ही पांडु या पीलिया रोग में विशेष लाभ होता है। यकृत वृद्धि व उदरशोथ में अत्यन्त लाभप्रद है। भांगरा के 5 ग्राम रस में 1/2 ग्राम मिर्च का चूर्ण मिलाकर सवेरे दही के साथ लेने से कुछ दिन में ही कामला ठीक हो जाता है।

डिप्थीरिया : इसके 10 ग्राम स्वरस में समभाग गाय का घी, चौथाई असली यवक्षार मिलाकर पकायें, जब खूब खौल जाये तब दो–दो घंटे के अंतर से पिलाने से बाधा शांत हो जाती है।

उदरशूल : भांगरा के 10 ग्राम पत्रों के साथ 3 ग्राम काला नमक थोड़े जल में पीस छानकर दिन में 3–4 बार सेवन करने से जीर्ण

Scanned by CamScanner

शूल भी दूर हो जाता है।

विसूचिका : विसूचिका में पंचांग के 2 चम्मच स्वरस में सेंधा नमक मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करने से लाभ होता है।

अतिसार : आम अतिसार एवं रक्त अतिसार में भृंगराज जड़ के महीन चूर्ण की बराबर मात्रा में बेल का चूर्ण मिलाकर सुबह–शाम 1–1 चम्मच ताजे पानी से दिन मे तीन बार सेवन करना अतिसार संग्रहणी में अत्यन्त लाभप्रद है।

भगन्दर : इसे पुल्टिस जैसा बनाकर बांधते रहने से थोड़े दिनों में ही भगन्दर शुद्ध होकर भर जाता है।

उपदंश :

1. भांगरा के रस में अथवा भांगरा और चमेली के पत्तों के रस के मिश्रण से उपदंश के व्रण को धोने से बड़ा लाभ होता है। इसी रस का लेप भी करें।
2. इसका चूर्ण 3 भाग, काली मिर्च चूर्ण 1 भाग, दोनों को एकत्र कर भांगरे के ही स्वरस से खरल कर 1–1 ग्राम की गोलियां बनाकर सुबह–शाम 1–2 गोली सेवन करें। इससे उदर रोग, नेत्र रोग व भगन्दर तथा उपदंश में अत्यन्त लाभ होता है।
3. इसके 10 ग्राम स्वरस में 2 नग काली मिर्च का चूर्ण मिला प्रातः सायं 21 दिन तक सेवन करायें। पथ्य में गौदुग्ध, गेहूं की रोटी और शक्कर दें। इससे समस्त प्रकार के चर्म रोगों में भी लाभ होता है।

गर्भरक्षा :

1. भांगरा के 4 ग्राम स्वरस में समभाग गौदुग्ध मिला नित्य प्रातः पिलाते रहने से अकाल में गर्भपात नहीं होने पाता। गर्भ पुष्ट होकर गर्भ रक्षा व गर्भिणी के रक्त की शुद्धि होती है। यह अत्यन्त निरापद व सहज व सरल उपाय है।
2. योनिमार्ग या मूत्र मार्ग से रक्तस्राव की शिकायत में, इसके पत्रों का चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर 20 से 50 ग्राम तक प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है। रक्त प्रदर में भी इस प्रयोग से लाभ होता है।

योनि शूल : प्रसव के पश्चात होने वाले योनि शूल में भांगरा का पंचांग तथा बेल दोनों की जड़ के बारीक चूर्ण को समभाग लेकर मधु मिलाकर उचित मात्रा में देने से शूल तुरन्त मिट जाता है।

अंडकोष वृद्धि : अंडकोष की सूजन पर इसके पंचांग को पीस टिकिया बनाकर बांधने से लाभ होता है।

अर्श :

1. इसके पत्र 50 ग्राम और काली मिर्च 5 ग्राम दोनों को खूब महीन पीसकर छोटे बेर जैसी गोलियां बनाकर छाया शुष्क कर रखें। प्रातः सायं 1 या 2 गोली जल के साथ दिन में 3 बार सेवन करने से वातज अर्श में शीघ्र लाभ होता है।
2. इसके पत्र 3 ग्राम व काली मिर्च 5 नग दोनों का महीन चूर्ण ताजे जल से दोनों समय सेवन करने से 7 दिन में ही आशातीत लाभ होता है।
3. इसके रस में गेहूं का आटा सानकर, गाय के घी में चूर्ण बनाकर छाछ में भिगोकर खायें। ऊपर से 1–2 मूली खायें, शीघ्र ही लाभ होता है।
4. अर्श के मस्सों पर इसके पत्तों का भफारा दोनों समय देने से विशेष लाभ होता है।

गुदभ्रंश : इसकी जड़ और हल्दी के चूर्ण को पीसकर लेप करते रहने से गुदभ्रंश में लाभ होता है।

पित्तजप्रमेह : भांगरे का चूर्ण और बबूल के फूल के चूर्ण समभाग मिश्री, मिश्रण के बराबर, 6 ग्राम की मात्रा में

Scanned by CamScanner

बकरी के दूध के साथ सेवन करें। यह प्रयोग सब तरह के प्रमेह में लाभप्रद है।

प्रमेह पिडिका : इसके 1 भाग रस, तुलसी पत्र, श्वेत रोग के पत्र और पटोल पत्र 1–1 भाग का चूर्ण मिलाकर तथा कॉंजी में पीसकर लेप करने से वातज प्रमेह पिडिका नष्ट होती है।

श्लीपद : इसके पंचांग की लुगदी को तिल के तेल में मिलाकर अथवा केवल इसके रस से श्लीपद में मालिश करने से अत्यन्त लाभ होगा।

वातशूल : इसके पंचांग को जल के साथ खूब महीन पीस, छानकर रोगी को 5–10 ग्राम की मात्रा में कई बार पिलाने से लाभ होता है।

अग्निदग्ध :

1. भांगरा के पत्तों को मेंहदी और मरवा के पत्तों के साथ पीसकर लेप करने से शीघ्र ही लाभ होता है तथा नवीन त्वचा शरीर के वर्ण की ही होती है।
2. जब व्रण कुछ ठीक होने लगे तब भांगरा के पत्तों का रस 2 भाग, काली तुलसी पत्र रस 1 भाग, दिन में 2–3 बार लगाते रहने से जलन शांत हो जाती है और शरीर पर किसी किस्म का दाग नहीं पड़ने पाता।

दाह : हाथ पैरों की जलन व शरीर की खुजली में और सूजन पर इसके स्वरस की मालिश करनी चाहिए।

खुजली : भांगरा के पत्ते 10 ग्राम, जवासा 10 ग्राम, चिरायता 60 ग्राम, शरपुंखा 60 ग्राम, इसको 100 ग्राम पानी में पीस छानकर, 20 ग्राम शहद मिलाकर प्रतिदिन 1 सप्ताह तक सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करने से, शरीर निरोग होकर खुजली का नामोनिशान नहीं रहता।

चक्कर आना : भांगरा का रस 4 ग्राम, शक्कर 3 ग्राम दोनों को मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से थोड़े ही दिनों में दुर्बलता दूर होकर चक्कर आने बंद हो जाते हैं।

व्रण :

1. दूषित व्रणों पर इसके रस का लेप करते रहने से तथा पुल्टिस बांधने से लाभ होता है।
2. हाथ, अंगूठे या उंगली में जो व्रण हो जाते हैं, उस पर भांगरे को पीसकर मोटा लेप करें तथा पानी न लगने दें। भीतर की गांठ निकलकर घाव अच्छा हो जायेगा।

विच्छू के विष पर : विच्छु दंश पर इसके पत्तों को पीसकर सूजे हुए स्थान पर मसलने से, वेदना डंक स्थान पर इकट्ठी हो जाती है फिर स्थान पर अच्छी तरह मसलकर पत्तों की लुग्दी बांध देनी चाहिए।

दीर्घायु :

1. ताजे भांगरा को पीसकर उसका निकाला हुआ स्वरस प्रातः काल पीने से (मात्रा 10 मिलीलीटर) और पथ्य में सिर्फ दूध पर ही रहने से 1 महीने में शरीर निरोग हो जाता है। बल और क्रांति बढ़ती है तथा मनुष्य दीर्घायु हो जाता है।[3]
2. इसके 15 ग्राम पत्रों के चूर्ण को प्रतिदिन घी, शहद और शक्कर मिलाकर 1 वर्ष तक लेते रहने से बल वीर्य की वृद्धि होती है तथा बुद्धि व स्मरण शक्ति भी बढ़ जाती है।

वाजीकरण : 10 ग्राम शुद्ध गंधक के बारीक चावल जैसे टुकड़े कर उन्हें 7 दिन तक धूप में, इसके रस की भावना दें, फिर उसमें जायफल, जावित्री कपूर और लौंग का दो–दो ग्राम चूर्ण मिलाकर गुड़ के साथ घोंटकर आधी–आधी ग्राम की गोलियां बना लें। प्रतिदिन प्रातः 1 या 2 गोली खाकर, 3 काली मिर्च चबाकर, 1 पाव दूध पीयें। यह निरापद व अत्यन्त बाजीकरण योग है।

विशिष्ट प्रयोग : भांगरा के पत्तों की छाया में शुष्क कर, कपड़छन चूर्ण को शीशी में भर लें।

1. चूर्ण 1 ग्राम, घी 6 ग्राम और मिश्री 5 ग्राम, एकत्र कर मिला,

Scanned by CamScanner

नित्य सेवन से भूख बढ़ती है। 60 दिन तक सेवन करने से शरीर हृष्ट–पुष्ट हो जाता है।

2. पत्र चूर्ण 1 भाग, काले तिल का चूर्ण आधा भाग तथा आंवला चूर्ण आधा भाग– सबके बराबर मिश्री या गुड़ मिलाकर घी के चिकने मिट्टी के पात्र में रखें। 10–10 ग्राम प्रातः सायं गौ दुग्ध के साथ सेवन से कोई रोग नहीं होता, बुढ़ापे का भय नहीं रहता। यह पौष्टिक रसायन है।

3. पत्र चूर्ण में समभाग काले तिल का चूर्ण मिलाकर कम से कम 1 मास तक सेवन करने से तथा भोजन में केवल दूध लेने से मनुष्य रोग रहित हो दीर्घायु हो जाता है।

4. यदि बच्चा मिट्टी खाना किसी भी प्रकार से न छोड रहा हो तो भांगरा पत्र स्वरस 1 चम्मच सुबह–शाम पिला देने से मिट्टी खाना तुरन्त छोड देता है।

1. भृंगारः कटुकस्तिक्तो रूक्षोष्णः कफवातनुत्।
केश्यस्त्वच्यः कृमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत्।।
दन्त्यो रसायनो बल्यः कुष्ठनेत्रशिरोर्तिनुत्। (भाव प्रकाश)

2. भृंगराजास्तु चक्षुष्यास्तिक्तोष्णाः केशरंजनाः।
कफशोफविषघ्नाश्च तत्र नीलो रसायनः।। (राज निघंटु)

3. ये मासमेकं स्वरसं पिबन्ति दिने–दिने भृंगराजः समुत्थम्।
क्षीराशिनस्ते बलवीर्ययुक्ताः, समाः शतं जीवितमाप्नुवन्ति।।
(भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

भारंगी

वैज्ञानिक नाम	:	*Clerodendrum serratum* (L.) Moon
कुलनाम	:	Verbenaceae
अंग्रेजी नाम	:	Turk's turban moon
संस्कृत	:	व्राह्मणयष्टिका, खरशाक, पद्मा (पद्मा)
हिन्दी	:	भारंगी
गुजराती	:	भारंगी
बंगाली	:	बामुनहाटी
तैलगु	:	गंटुवरंगी

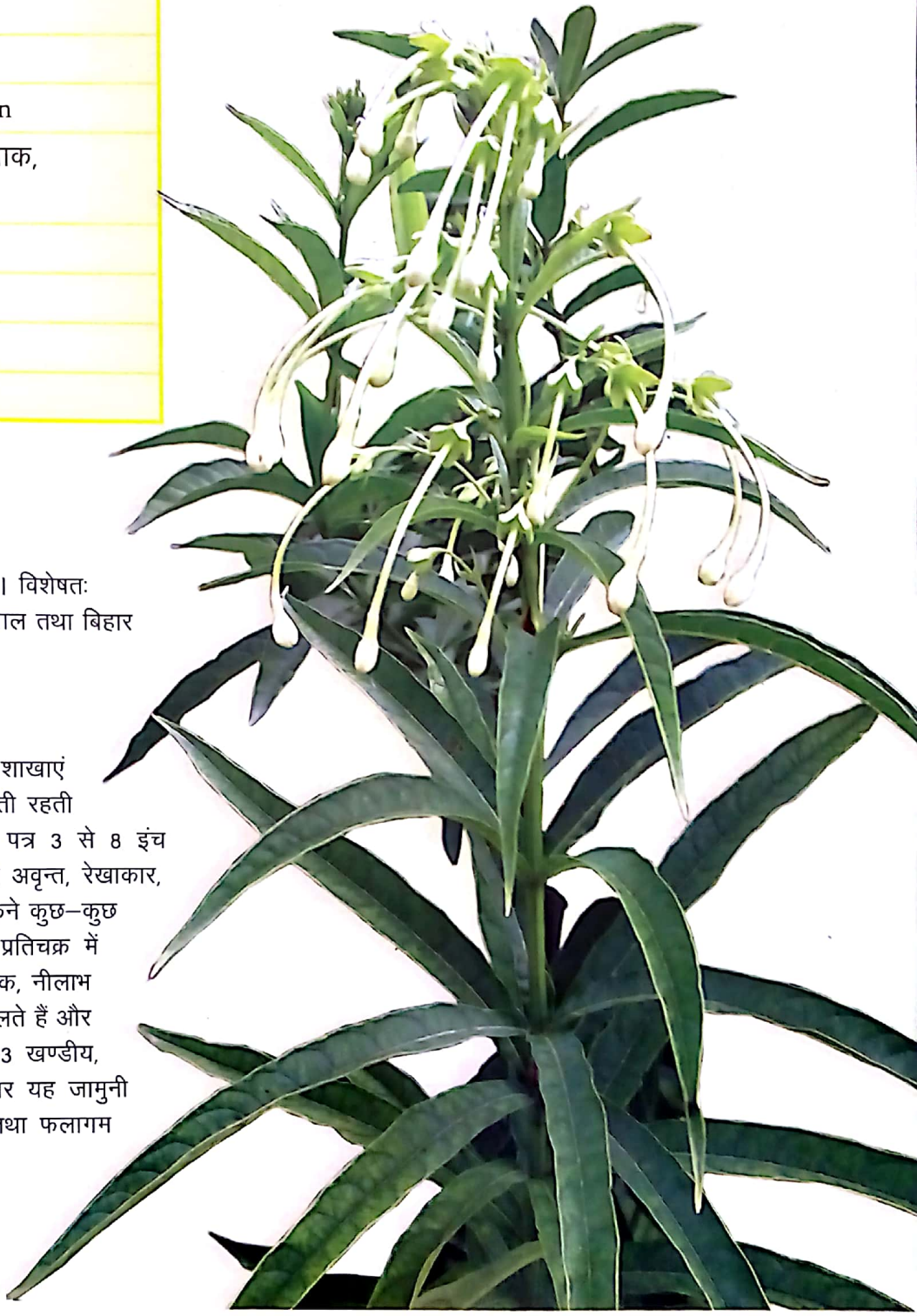

परिचय

प्रायः समस्त भारत में इसके क्षुप पाये जाते हैं। विशेषतः हिमालय की तराई, भोपाल, कुमायूं, गढ़वाल, बंगाल तथा बिहार आदि स्थानों में प्रचुरता से पाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसके बहुवर्षायु गुल्म होते हैं। कांड तथा शाखाएं चौपहल होती हैं। जिन स्थानों पर दावाग्नि होती रहती है, केवल यही मूलस्तम्भ बहुवर्षायु होता है। पत्र 3 से 8 इंच तक लम्बे, डेढ से ढाई इंच तक चौड़े लगभग अवृन्त, रेखाकार, आयताकार, अंडाकार, तीक्ष्ण, दंतुर, चिकने–चिकने कुछ–कुछ मांसल, आमने–सामने या तीन–तीन पत्तियां प्रतिचक्र में होती हैं। पुष्प व्यास में एक इंच या इससे अधिक, नीलाभ हल्के गुलाबी रंग के, शाखाओं पर गुच्छे में निकलते हैं और किंचित सुगन्धित होते हैं। फल अष्ठिफल 1–3 खण्डीय, परस्पर संयुक्त और मांसल होता है। पकने पर यह जामुनी काले रंग के हो जाते हैं। पुष्पागम ग्रीष्म में तथा फलागम वर्षान्त या सर्दी के आरम्भ में होता है।

रासायनिक संघटन

इसके मूल में रालीय, वसामय तथा क्षारोद स्वभाव के तत्व पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह कफ, वात, शामक, दीपन पाचन, शोथहर, रक्त शोधक, कफघ्न, श्वासहर व ज्वरघ्न है।[1] यह कास, श्वास, शोफ, व्रण, कृमि, दाह, ज्वर आदि का निवारण करती है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मस्तक शूल : भारंगी की जड़ को गरम जल में घिसकर, कपाल पर इसका लेप करने से मस्तक शूल मिट जाता है।

नेत्र : इसके पत्तों को तेल में उबालकर लगाने से आंख की पलकों की सूजन मिट जाती है और नेत्र मल नहीं आता है।

कर्ण शूल : इसकी जड़ को घिसकर, एक बूंद कान में डालने से लाभ होता है।

दमा और खांसी :

1. भारंगी मूलत्वक और सौंठ को समान भाग लेकर बनाया गया चूर्ण 2 ग्राम गरम जल के साथ बार–बार लेने से दमा और खांसी में आराम होता है।
2. इसकी मूल का स्वरस अदरक के स्वरस में 2–2 ग्राम की मात्रा में मिलाकर देने से श्वास का वेग शांत हो जाता है।
3. भारंगी के मूल का कपड़ छन चूर्ण, 1 से 2 ग्राम आवश्यकतानुसार दिन में 4–6 बार शहद के साथ चटाने से हिक्का निवृत्त हो जाती है।

गलगंड : इसकी जड़ को चावल की धोवन के साथ पीसकर लेप करने से गलगंड मिटता है।

राज्यक्ष्मा : इसकी जड़ के 1 ग्राम चूर्ण तथा शुंठी 1 ग्राम चूर्ण को उष्ण जल में घोल कर पिलाने से राज्यक्ष्मा मिटता है।

रक्त गुल्म : स्त्रियों के गर्भाशय में होने वाला रक्त गुल्म यदि बहुत बड़ा न हो तो भारंगी, पीपल, करंज की छाल और देवदारू को समभाग मिलाकर चूर्ण कर इसमें से 4 ग्राम चूर्ण, तिल के क्वाथ के साथ दो बार देते रहने से रक्त गुल्म नष्ट हो जाता है।

उदर विष में : इसकी 5 ग्राम मूल को कूटकर 100 मि०ली० जल में मिलाकर पिलाना चाहिए तथा शरीर पर इसकी मालिश करनी चाहिए।

हिचकी : हिचकी में इसकी जड़ का चूर्ण 1 चम्मच मिश्री में मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करना चाहिए।

उदर कृमि : 3 से 5 पत्रों को 400–500 ग्राम पानी में उबालकर जल को पीने से उदर कृमियों का नाश हो जाता है।

अण्डकोष वृद्धि : भारंगी की जड़ की छाल जौ के पानी में पीसकर गरम कर बांधने से अंडकोष की सूजन अवश्य मिटती है।

रेचक : इसके 5 ग्राम बीजों को कुचलकर मट्ठे में उबालकर लेने से पेट के संचित मल को मुलायम करके निकालने के लिए अत्यन्त लाभकारी है। ज्यादा देने पर दस्त लग सकते हैं। इससे अंदर का शोथ भी मिटता है।

हरपीज विसर्प : विसर्प में इसके पत्र तथा कोमल डालियों का रस लगाने से लाभ होता है।

शोथ : शोथ में इसके बीजों का चूर्ण घी में भूनकर खाने से लाभ होता है।

ज्वर :

1. भारंगी की लगभग 5 ग्राम जड़ का क्वाथ बनाकर सुबह–शाम पिलाने से ज्वर व जुकाम मिटता है।
2. मलेरिया ज्वर में इसके कोमल पत्रों का शाक बनाकर खिलाने से यह ज्वर नष्ट हो जाता है।

मांस क्षय : भारंगी पंचांग 1 किलो को 8 किलो पानी में पकाकर जब 2 किलो बचे, छानकर इसमें ½ किलो सरसों का तैल सिद्ध कर मांस क्षय वाले रोगी की मालिश करनी चाहिए। इसमें लाभ अवश्य होगा।

छत्तेदार फुंसी : इसके पत्ते और कोमल डालियों का निचोड़ा हुआ रस घी में मिलाकर छत्तेदार फुंसियों पर लगाना चाहिए। जिस ज्वर में फोड़े फुंसी होते हैं उस ज्वर में भी यही लेप करना चाहिए।

फोड़ा : पत्रों की पुल्टिस बनाकर फोड़ों पर लगाने से लाभ होता है। ज्यादा बढ़ा हुआ फोड़ा हो तो पककर फूट जाता है, कम पका हुआ हो तो बैठ जाता है।

1. भार्गी रूक्षा कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी लघुः।
दीपनी तुवरा गुल्मरक्तजिन्नाशयेद् ध्रुवम्।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान्।। (भाव प्रकाश)

2. भार्गी तु कटुतिक्तोष्णा कासश्वासविनाशिनी।
शोफव्रणकृमिघ्नी च दाहज्वरनिवारिणी।। (रा०नि०)

Scanned by CamScanner

भुई आंवला

40

वैज्ञानिक नाम	:	*Phyllanthus fraternus* Webster
कुलनाम	:	Eubhorbiaceae
संस्कृत	:	भूधात्री, तामलकी, बहुफला
हिन्दी	:	भुई आंवला, भोम आँवली
मराठी	:	भुई आंवली
बंगाली	:	भुई आमला
पंजाबी	:	पाताल आंवला
कन्नड़	:	किरूनेल्लि
तैलगु	:	नेलवुसरि

परिचय

भुई आंवला के एक वर्षायु, छोटे–छोटे क्षुप, वर्षा ऋतु में उत्पन्न होकर तथा शरद ऋतु में फूलने फलने के बाद ग्रीष्म ऋतु में सूख जाते हैं। यह भारत में सर्वत्र पाये जाते हैं। इसके फल धात्रीफल की भांति गोल, परन्तु आकार में छोटे होने के कारण इसको भूधात्री कहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

एक वर्षायु कोमल कांडीय, छोटे–छोटे पादप होते हैं, जिनके कांड पतले सीधे, खड़े, रक्ताभ, कुछ–कुछ फटे होते हैं। इसकी फैली हुई पर्णमय शाखाएं सपत्रक पर्णसदृश होती है, जबकि इसकी पत्तियां एकान्तर, सघन, द्विपंटिक, चौथाई इंच से आधा इंच तक लम्बी, लट्वाकार या आयताकार, अग्रगोल एवं तीक्ष्णाग्र तथा अधः स्तर पर फीके रंग की होती है। पुष्प छोटे एकल पत्रकोण से उद्भूत;

Scanned by CamScanner

अवृन्त या सूक्ष्म वृन्त युक्त पीताभ, फल धात्री फल सदृश गोल एवं शाखाओं के नीचे एक कतार में निकले हुए होते हैं।

रासायनिक संघटन

भूम्यामलकी की पत्तियों में हाइपो फिलैन्थीन तथा फिलैन्थीन नामक तिक्त कार्यकारी तत्व पाया जाता है।

गुण–धर्म

भुई आंवला, हल्का रूखा, शीतल, स्वाद में चरपरा, कसैला, मधुर तथा तृषा, खांसी, पित्त, रुधिर विकार, कफ, खुजली तथा क्षत–नाशक है। यह ज्वरघ्न विशेषतः विषम ज्वर प्रतिबंधक है। साथ ही यकृत के किसी भी प्रकार के जीर्ण रोग की एक दिव्य औषध है।[1] इसका लेप व्रणरोपण, शोथहर तथा कुष्ठघ्न होता है। कैयदेवनिघंटु के मतानुसार भुई आंवला शीतल कड़वा, करैला, मधुर, हल्का, रूचिकारक, पांडु, कुष्ठ, कफ, विष, रक्तपित्त, श्वांस, तृषा दाह, हिक्का, खांसी और क्षय का नाश करता है।[2] राज निघंटु के मत से भूम्यामलकी करैला, खट्टा पित्त और प्रमेह को नष्ट करने वाला, मूत्रकृच्छ को दूर करने वाला तथा दाह को शांत करने वाला है।[3]

औषधीय प्रयोग

मुख पाक : इसके 50 ग्राम पत्तों का 200 ग्राम जल में हिम बनाकर कुल्ले करने से मुख पाक मिटता है।

स्तन शोथ : इसके पंचाग को पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

कास–श्वास :

1. इसके 50 ग्राम पंचाग को आधा किलो जल के साथ ओटाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को एक–एक चम्मच दिन में दो बार पिलाना कास श्वास में लाभकारी है।
2. श्वास में इसकी जड़ 10 ग्राम की मात्रा में जल में पीसकर उसमें 1 चम्मच मिलाकर पिलाना चाहिए तथा इसका नस्य भी देना चाहिए।

कामला रोग : भूधात्री की 10 ग्राम जड़ को पीसकर प्रातः सायं 250 ग्राम दूध के साथ खाली पेट देने से कामला रोग मिटता है।

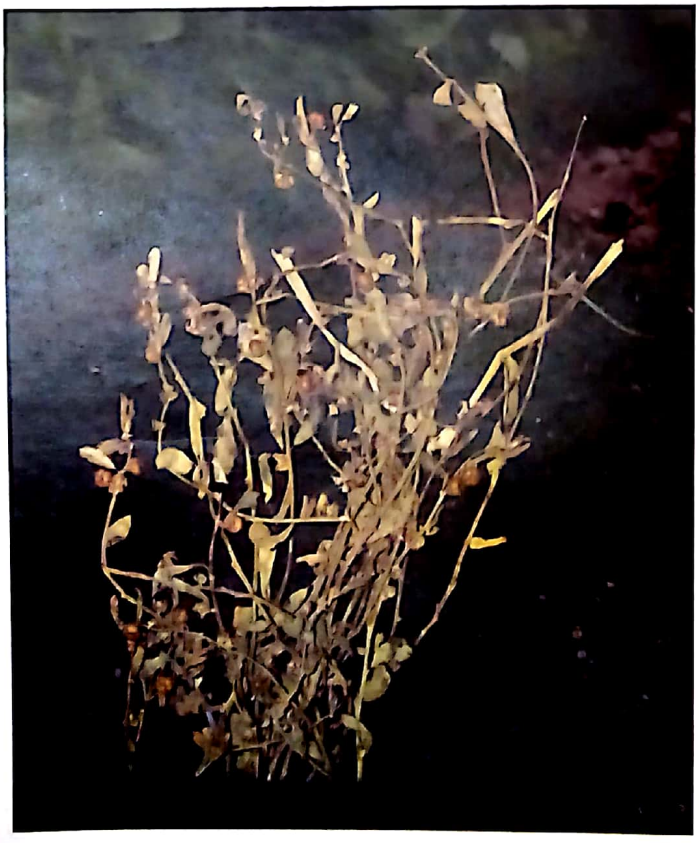

जलोदर :

1. इसकी जड़ और पत्तों का शीत निर्यास, लगभग 10 से 20 ग्राम दिन में दो बार लेने से पेशाब अधिक होकर जलोदर धीरे–धीरे ठीक हो जाता है।
2. इसके 100 ग्राम पत्तों को 250 ग्राम दूध के साथ मसलकर पिलाने से जलोदर और मूत्र संबंधी रोग मिटते हैं।
3. इसके 50 ग्राम पंचाग को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को 10 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन चार बार पिलाने से जलोदर मिटता है।

उदरशूल : इसके 20 ग्राम पत्तों को 200 ग्राम जल में उबालकर छानकर थोडा–थोडा पानी पीने से उदरशूल और आमातिसार में लाभ होता है।

जीर्णातिसार : इसे 50 ग्राम पंचाग को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ में मेथी चूर्ण 5 ग्राम मिलाकर थोडा–थोडा पीने से जीर्ण अतिसार में लाभ होता है।

मधुमेह : इसके 15 ग्राम पंचाग का चूर्ण और 20 काली मिर्च का सेवन दिन में दो तीन बार करने से जीर्ण प्रमेह नष्ट होता है।

रक्त प्रदर : रक्त प्रदर में इसके बीजों का पांच ग्राम चूर्ण, चावलों के पानी के साथ दो या तीन दिन पीने से मासिक धर्म में अधिक रक्त का आना निश्चय ही बंद होता है। अथवा इसकी जड़ के चूर्ण को भी इसी प्रकार देने से लाभ होता है।[4]

प्रमेह : भुई आंवले का 20 ग्राम स्वरस 2 चम्मच घी के साथ मिलाकर पीले रंग के प्रमेह में सवेरे शाम देने से लाभ होता है।

सुजाक : इसका एक चम्मच रस जीरे और शक्कर के साथ देने से नवीन सूजाक में मूत्र की जलन शांत होती है। कामला और पित्त विकार में भी यह प्रयोग लाभदायक है।

घाव :

1. इसका दूधिया रस घाव पर लगाने से वह जल्दी भर जाता है।
2. इसके कोमल पत्तों को पीसकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी भरता है। रगड़ पर लगाने से चोट की पीड़ा शांत हो जाती है।

Scanned by CamScanner

खुजली : इसके पत्तों को पीसकर उसमें नमक मिलाकर लगाने से गीली खुजली में लाभ होता है।

व्रणशोथ : इसके पंचाग की पुल्टिस चावलों के पानी के साथ बनाकर बांधने से लाभ होता है।

मलेरिया ज्वर : इसके कोमल पत्तों और काली मिर्च (चौथाई भाग) पीसकर उनकी जायफल के बराबर गोलियां बना कर 2–2 गोली दिन में दो बार देने से मलेरिया ज्वर और बार–बार आने वाला ज्वर छूटता है।

यकृत सम्बन्धी समस्त रोग : छाया में सुखाया हुआ भूमि आंवला को मोटा–मोटा कूटकर एवं 10 ग्राम को मिट्टी के बर्तन में 400 ग्राम पानी में पकाकर जब एक चौथाई से भी कम रह जाये, तब छानकर सुबह खाली पेट व रात्रि को भोजन से एक घण्टा पहले सेवन करें। यह यकृत शोथ, पीलिया, सर्वांग शोथ, आन्त्रवण (अल्सर) आदि अनेक रोगों की चमत्कारिक औषध है।

1. भूधात्री वातकृत्तिका कषाया मधुरा हिमा।
पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा।। (भाव प्रकाश)

2. तामलकी हिमा तिक्ता कषाया मधुरा लघुः।
रोचनी पांडुपित्तास्रकफकुष्ठविषापहा।
जयेच्छ्वासतृषादाहहिध्माकासक्षतक्षयान्।। (के0 नि0)

3. भूधात्री तुकषायाम्लपित्तमेहविनाशिनी।
शिशिरा मूत्ररोगार्त्तिशमनी दाहनाशिनी।। (रा0नि0)

4. भूम्यामलकीबीजं तु पीतं तंडुलवारिणा।
दिनद्वयत्रयेणैव स्त्रीरोगं नाशयेद् ध्रुवम।। (बंगसेन)

Scanned by CamScanner

41 ब्राह्मी

वैज्ञानिक नाम	:	*Centella asiatica* (L.) Urban
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian penny wort
संस्कृत	:	ब्राह्मी, शारदा, कपोतबंका, सोमवल्ली, महौषधि, दिव्या, सरस्वती, मण्डूकपर्णी, मण्डूकी
हिन्दी	:	ब्राह्मी
गुजराती	:	ब्राह्मी

परिचय

ब्राह्मी बूटी सम्पूर्ण भारतवर्ष में जलाशयों के किनारे उत्पन्न होती है परन्तु हरिद्वार से लेकर लगभग 200 फुट की ऊंचाई तक यह विशेष रूप से दर्शन देती हुई आभास कराती है कि यह विशेष रूप से ब्रह्म प्रभावित क्षेत्र है। ऐसा कहा जाता है कि इस दिव्य बूटी के सेवन से ब्राह्मी को ब्रह्म की साधना में मदद मिलती है। इसी से साधक जन प्रायः इस बूटी का सेवन करते रहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

यह एक भूप्रसारीय अत्यन्त कोमल लता होती है, क्योंकि मण्डूक के समान पत्र वाली तथा मण्डूकवत् इतस्तत फैलने के कारण इसे मण्डूक पर्णी कहा गया है। यह गीली और तर भूमि में फैलती है। इसके पर्व संधियों से मूल निकलकर पृथ्वी में घुस जाते हैं और स्वतंत्र पौधा बन जाता है। पत्र गोल, हरे, दलदार तथा एक साथ 2–3 लगते हैं। वृन्त की तरफ का हिस्सा खुला हुआ होता है। इसके पत्तों पर बहुत छोटे–छोटे चिन्ह पाये जाते हैं। पुष्पागम बसंत से ग्रीष्म तक और इसके बाद फल लगते हैं। पुष्प श्वेत, नीलाभ होते हैं। ब्राह्मी के सारे पौधे का स्वाद बहुत कड़वा होता है।

रासायनिक संघटन

इसमें हाइड्रोकोटिलीन नामक क्षाराभ, ताजी पत्तियों में

Scanned by CamScanner

एशियाटिकोसाइड नाम ग्लाइकोसाइड होता है, इनके अतिरिक्त इसमें वैलेरिन, राल, तिक्त पदार्थ, पैक्टिक अम्ल, स्टेरॉल, वसा अम्ल, टैनिन, उडनशील तेल तथा एस्कार्बिक एसिड, थानकुनिसाइड नामक ग्लुकोसाइड, ब्राह्मोसाइड, ब्राह्मिक एसिड आदि पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

प्रभाव मेध्य, स्मृति बुद्ध तथा कुष्ठ, पांडु, मस्तिष्क के रोग में लाभकारी है। यह हृदय के लिए बलकारक, स्तन्यजनन, स्तन्य शोधन, व्रणरोपण, व्रणशोधक, वयःस्थापन एवं रसायन है।[1]

औषधीय प्रयोग

स्मरण शक्ति :

1. शुष्क ब्राह्मी 1 भाग, बादाम गिरी 1 भाग, काली मिर्च चौथाई भाग, पानी से घोटकर 3–3 ग्राम की टिकिया बनायें। दिमाग को शक्ति देने के लिए एक टिकिया रोजाना प्रातः–सायं दूध के साथ दें।
2. ब्राह्मी 3 ग्राम, शंखपुष्पी 3 ग्राम, बादाम गिरी 6 ग्राम, छोटी इलायची के बीज 3 ग्राम, इन सभी को एक तोला जल में घोंट, छानकर मिश्री मिला कर पिलायें। स्मरण शक्ति के साथ–साथ यह योग खांसी, पित्त ज्वर और जीर्ण उन्माद के लिए बहुत लाभदायक है।
3. ब्राह्मी का ताजा रस लेकर, उसमें समभाग घी मिलाकर घी सिद्ध कर लें, इस घी को 5 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से स्मरण शक्ति बढती है। इसके पंचांग का चूर्ण दूध में मिलाकर सेवन करने से स्मरण शक्ति तेज होती है।

निद्रानाश :

1. ब्राह्मी का 3 ग्राम का चूर्ण गाय के आधा किलो कच्चे दूध में घोंट छानकर एक सप्ताह तक सेवन करने से पुराना निद्रानाश रोग में अवश्य लाभ हो जाता है।
2. ताजी ब्राह्मी के 5–10 ग्राम रस को 100–150 ग्राम कच्चे दूध में मिलाकर पीने से लाभ होता है। ताजी बूटी के अभाव में लगभग 5 ग्राम चूर्ण प्रयोग करें।

उन्माद रोग :

1. ब्राह्मी का रस 6 ग्राम, कूठ का चूर्ण डेढ़ ग्राम, मधु 6 ग्राम मिलाकर रोगी को दिन में तीन बार पिलायें, यह प्रयोग जीर्ण उन्माद मिटाने के लिए लाभप्रद है।
2. ब्राह्मी 3 ग्राम, काली मिर्च 2 नग, बादाम गिरी 3 ग्राम, मगज़ के बीज प्रत्येक 3–3 ग्राम, मिश्री सफेद 25 ग्राम जल में घोंट छानकर सुबह–शाम पिलायें, यह पित्तज जीर्ण उन्माद में भी लाभकारी है।
3. ब्राह्मी तीन ग्राम, कुछ दाने काली मिर्च के जल में घोंट छानकर दिन में 3–4 बार पिलाने से पुरातन मस्तिष्क शूल और दिमागी भूल मिटती है।
4. ब्राह्मी रस 1 किलो और मिश्री 2.500 किलोग्राम मिलाकर मंदाग्नि पर शरबत समान चाशनी बनाकर नीचे उतारकर तुरन्त छान लें। 15 से 25 ग्राम तक जल के साथ दिन में 3 बार पीने से वात नाड़ियों के जीर्ण रोगों में जैसे मस्तिष्क दौर्बल्य, रक्त का दबाव कम होना और जीर्ण उन्माद आदि में लाभदायक है।
5. ब्राह्मी के रस में कुठ चूर्ण तथा मधु को मिलाकर चाटने से उन्माद रोग शांत होता है।[2]
6. ब्राह्मी की पत्तियों का रस तथा बालवच, कूठ, शंखपुष्पी इनके कल्क के साथ गाय के पुराने घी का यथाविधि पान करें। यह घृत उन्माद, अपस्मार तथा अन्य पाप कर्मों से उत्पन्न होने वाले रोगों का विनाश करता है।[3]

केशों के लिए : बाल झड़ने पर ब्राह्मी के पंचांग का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम नियमित रूप से कुछ हफ्ते सेवन करें। यह प्रयोग निर्बलता निवारण में भी लाभप्रद है।

मधुर आवाज : ब्राह्मी सूखी 100 ग्राम, मुनक्का 100 ग्राम, शंखपुष्पी 50 ग्राम, सब को चौगुने पानी में मिलाकर अर्क निकालें। इसके प्रयोग से शरीर स्वस्थ और आवाज साफ हो जाती है।

मूत्रकृच्छ्र : ब्राह्मी के 2 चम्मच रस में, एक चम्मच मिश्री मिलाकर सेवन करने से मूत्रावरोध मिटता है।

दाह : 5 ग्राम ब्राह्मी के साथ धनिया मिलाकर रात भर भिगो दें। प्रातः पीस, छानकर मिश्री मिलाकर पिलायें।

रक्तचाप : ब्राह्मी के पत्तों का रस एक चम्मच की मात्रा में आधे चम्मच शहद के साथ सेवन करने से उच्च रक्तचाप सामान्य हो

Scanned by CamScanner

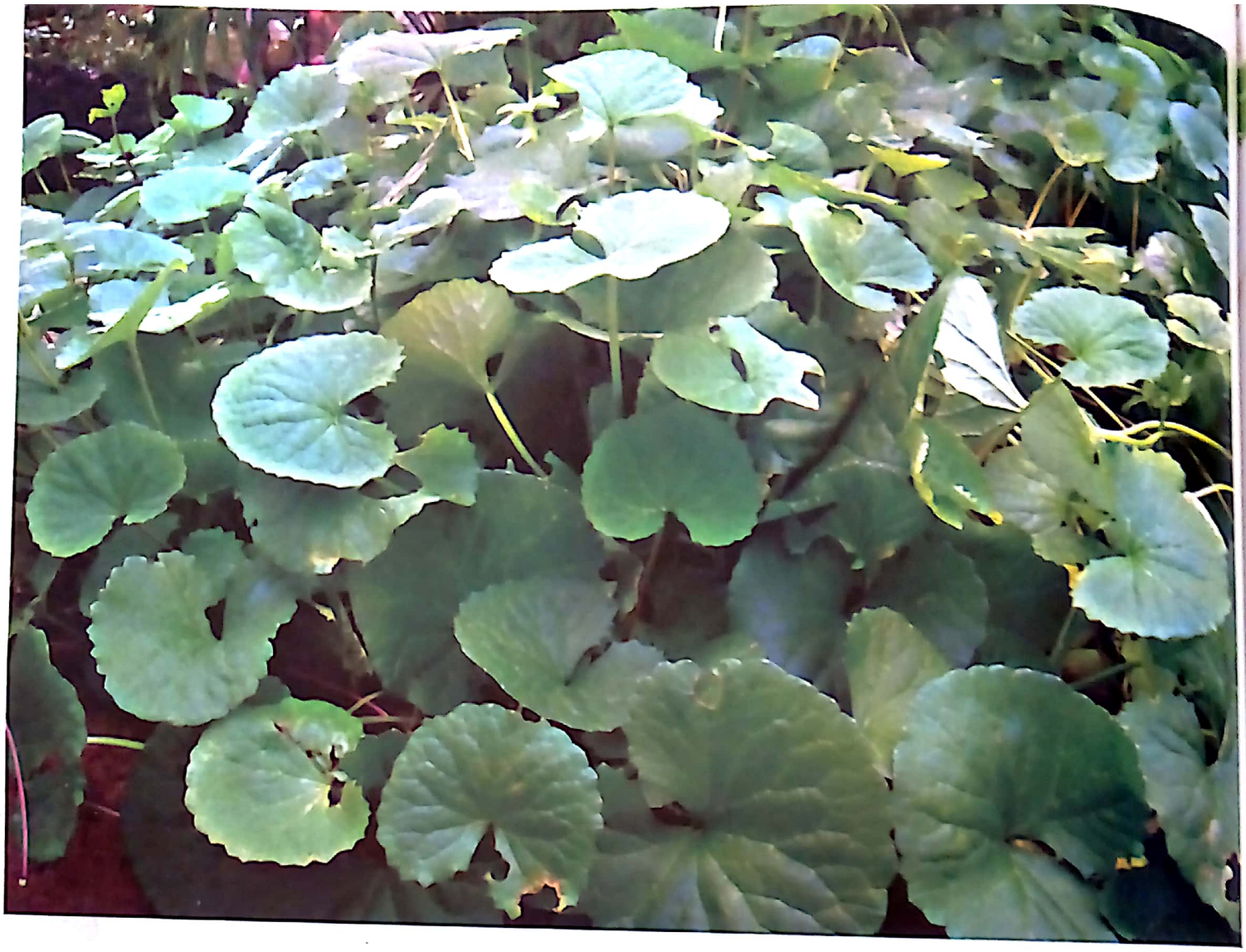

जाता है।

मसूरिका : इसके स्वरस में मधु मिलाकर पिलाने से मसूरिका मिटती है।

अहित प्रभाव : ब्राह्मी के अहितकर अतियोग से कभी–कभी शीतजन्य वातवृद्धि के कारण मद, शिरःशूल, भ्रम और अवसाद उत्पन्न होते हैं। त्वचा में लालिमा और खुजली होती है। ऐसी अवस्था में मात्रा कम कर दें या प्रयोग बंद कर दें।

निवारण : इसके अहितकर प्रभाव के निवारण के लिए सैंधव तथा अन्य वातशामक औषधियां, विशेषतः सूखी धनियां उपयुक्त होती है।

1. ब्राह्मी हिमासरा तिक्ता लघुः मेध्या च शीतला।
कषाया मधुरा स्वादुपाकायुष्या रसायनी।।
स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपांडु मेहास्रकासजित्।
विष शोथज्वरहरी, तद्वन्मण्डूकपर्णिनी।। (भाव प्रकाश)

2. ब्राह्मीकूष्माण्डीफलषड्ग्रन्थाशंखपुष्पिकास्वरसाः।
दृष्टा उन्मादहृतः पृथगेते कुष्ठमधुमिश्राः।। (भैषज्य रत्नावली)

3. ब्राह्मीरसवचाकुष्ठषंखपुष्पीभिरेव च।
पुराणं घृतंमुन्मादा लक्ष्म्यपस्मारपापनुत्।। (चरक)

Scanned by CamScanner

चालमोंगरा

42

वैज्ञानिक नाम	:	*Hydnocarpus pentandra* (Buch.-Ham.) Oken
कुलनाम	:	Flacourtiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Hydnocarpus oil
संस्कृत	:	तुवरक, कटुकपित्थ, कुष्ठ बैरी
हिन्दी	:	चालमुगरा, चालमोंगरा, पपीता
मराठी	:	कडुक वीठ, कडुक बठी,
बंगाली	:	चौलमुगरा
तैलगु	:	अडविवादामु
फारसी	:	बिरंजमोगरा

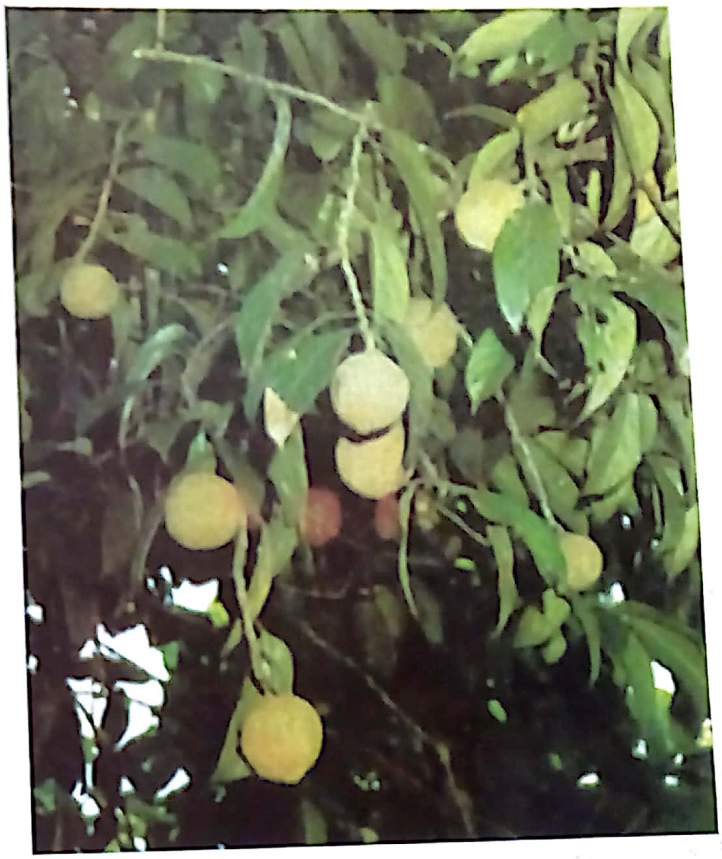

परिचय

चालमोगरा के वन्यज वृक्ष दक्षिण भारत में पश्चिम घाट के पर्वतों पर तथा दक्षिण कोंकण और ट्रावनकोर में तथा लंका में बहुतायत में पाये जाते हैं। इसके बीजों से प्राप्त होने वाले तेल का तथा बीजों का औषधीय व्यवहार किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

तुवरक के वृक्ष अति सुन्दर, 50 फुट या इससे अधिक ऊंचे होते हैं। पत्र–शरीफे की भांति 10 इंच लम्बे, डेढ से 4 इंच तक चौड़े, लट्वाकार, मालाकार, चिकने, कोमल तथा चमकीले व अग्रभाग पर नुकीले होते हैं। पुष्प–श्वेत, गुच्छों में तथा एकलिंगी होते हैं नर और मादा पुष्प अलग–अलग वृक्षों पर खिलते हैं। फल 2–4 इंच व्यास के सेव के सदृश परन्तु रोमश होते हैं। बीज, घूसर वर्ण अनेक कोणीय छोटे बादाम जैसे पुष्कल और हर फल में 10–20 तक बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

तुवरक के बीजों से स्थिर तेल प्राप्त होता है। जिसमें चालमोगरिक एसिड, हिडनोकार्पिक एसिड, पामिटिक एसिड आदि होते हैं। तुबरक तेल पीताभ या भूरे–पीले रंग का गाढ़ा होता है। इसमें एक विशिष्ट प्रकार की गंध होती है तथा 25 डिग्री सेल्सियस या इससे कम तापक्रम पर यह जमकर घी के समान सफेद और घनरूप हो जाता है।

गुण–धर्म

स्थानिक प्रयोग से कंडूघ्न, कुष्ठघ्न, व्रणरोपण, व्रणशोथघ्न, अन्तः प्रयोग से रेचक, वमन कराने वाला, कीड़ा–नाशक, प्रमेहघ्न तथा रक्त प्रसादन है।'

विशेष : चालमोगरा का तेल एक कुष्ठ–नाशक औषधि है, आजकल इंजेक्शन द्वारा भी इसका प्रयोग किया जाता है।

औषधीय प्रयोग

कंठमाला : चालमोगरा की फल की गिरी का चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार खाने से कंठमाला में लाभ होता है। इसके तेल को मक्खन में मिलाकर गांठों पर लेप करें।

मूर्च्छा : बीजों का चूर्ण मस्तक पर मलने से मूर्च्छा दूर होती है।

क्षयरोग : क्षयरोग में इसके तेल की 5–6 बूंदे दूध के साथ दिन में दो बार लेने तथा मक्खन में मिलाकर छाती पर मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

मधुमेह : इसकी फल की गिरी का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार खाने से पेशाब से शक्कर जाना कम हो जाती है, जब मूत्र में शक्कर जाना बंद हो जाये तो प्रयोग बंद कर दें।

Scanned by CamScanner

गठिया : इसके बीजों का चूर्ण एक ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार खाने से गठिया में आराम मिलता है।

दाद : दाद के ऊपर इसके तेल की मालिश नीम के तेल या मक्खन में मिलाकर करने से एक महीने में दाद ठीक हो जाता है। 10 ग्राम तेल को 50 ग्राम वैसलीन में मिलाकर रख लें और प्रयोग करते रहें।

कुष्ठ रोग : कुष्ठ रोगी को पहले 10 बूंदे तेल की पिलानी चाहिए जिससे वमन होकर शरीर के सब दोष बाहर आ जायें। तत्पश्चात 5–6 बूंदों को कैप्सूल में डालकर या दूध व मक्खन में भोजनोपरांत सुबह–शाम दें। धीरे–धीरे मात्रा बढ़ाकर 60 बूंदे तक ले जायें। इस तेल को नीम के तेल में मिलाकर बाह्य लेप करे, कुष्ठ की प्रारम्भिक अवस्था में इस औषधि का सेवन करें। खटाई मिर्च मसाले वर्जित है।

रक्त विकार :

1. नाखून काले पड़ जायें या रक्त में कोई ओर विकार हो तो चालमुगरा तेल की 5 बूंदे, कैप्सूल में भरकर या मक्खन के साथ आधा घण्टे के पश्चात सुबह–शाम खाने से रक्त विकार दूर होते हैं।
2. इस तेल का बाह्य लेप, इसको नीम के चार गुने तेल में मिलाकर या मक्खन में मिलाकर करने से भी लाभ होता है।

खाज–खुजली : खाज–खुजली पर इसके तेल को एरण्ड तेल में मिलाकर उसमें गंधक, कपूर और नींबू का रस मिलाकर लगाने से बहुत जल्दी लाभ होता है।

पामा :

1. एरण्ड के बीजों को छिल्के सहित पीसकर एरंड तेल में मिलाकर पामा पर लेप करने से पामा मिटता है।
2. बीजों को गोमूत्र में पीसकर बनाये लेप को दिन में 2–3 बार लगाने से वेदना कम होती है।

उपदंश : पूरे शरीर में फैले हुए उपदंश के रोग और पुरानी गठिया में इसके तैल की 5–6 बूंदों से शुरू कर मात्रा बढ़ाते हुए 60 बूंद तक सेवन करने से उपदंश शांत होता है। पथ्य जब तक इस दवा का सेवन करें तब तक मिर्च, मसाले, खटाई का परहेज रखें। दूध घी और मक्खन का अधिक सेवन करें।

व्रण रोपण : बीजों को खूब महीन पीसकर उनका बारीक चूर्ण व्रण पर लगाने से रक्तस्राव बंद होकर घाव शीघ्र भर जाता है।

हैजा : इसकी फल की गिरी का एक ग्राम चूर्ण जल में पीसकर 2–3 बार पिलाने से विसूचिका में आराम मिलता है।

दोष : इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए, क्योंकि यह आमाशय को हानि पहुंचाता है। तेल को मक्खन में मिलाकर या कैप्सूल में भरकर भोजन के बाद ही लेना चाहिए।

उपद्रव निवारण : अहितकर प्रभाव निवारणार्थ दुग्ध–घृत का प्रयोग करना चाहिए।

1. तीक्ष्णोष्णं तुवरी तेलं लघु ग्राहि कफास्त्रनित्।
वह्निकृद्विषहत्कंडू कोठ क्रिमी प्रणुत। मेदो दोषा यहं चापि व्रण शोथहरं परमार (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

चमेली

43

वैज्ञानिक नाम	:	*Jasminum grandiflorum* L.
कुलनाम	:	Oleaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sparnish or common Jasmine
संस्कृत	:	सौमनस्यायनी, सुमना, हृद्यगंधा, चेतिका, जाती
हिन्दी	:	चमेली
गुजराती	:	चबेली
मराठी	:	चबेली
बंगाली	:	चामेली
तैलगु	:	मल्लि
अरबी	:	यासमीन
फारसी	:	समन

परिचय

चमेली की बेल पूरे भारतवर्ष में घरों में, वाटिकाओं में, गमलों में, मन्दिरों में, सौन्दर्य बढाने के लिए लगाई जाती है। इसके पुष्पों से इत्र और तेल बनाया जाता है। चमेली का एक पौधा आठ से पन्द्रह वर्षो तक फूल देता है। इसके फूलों की गंध इतनी प्रिय और मनोहारिणी होती है कि अवसादित निराश हृदय में नवीन चेतना व स्पदंन का संचार कर देती है। इसीलिये इसे सुमना, हृद्य, गंध चेतिका इत्यादि नाम दिये गये है। पुष्प भेद में इसकी दो जातियाँ पाई जाती है। जो निम्न प्रकार हैं।

1. इसे स्वर्ण जाती कहते है। लैटिन में इसका नाम *Jasmine humile* है। इसके पुष्प पीले सुंगन्धित होते है।
2. *Jasmine grandiflorum* श्वेत पुष्प वाली, इसका वर्णन यहाँ किया गया है।

बाह्य–स्वरूप

इसका गुल्म लता के रूप में होता है। शाखाएं धारीयुक्त, पत्र

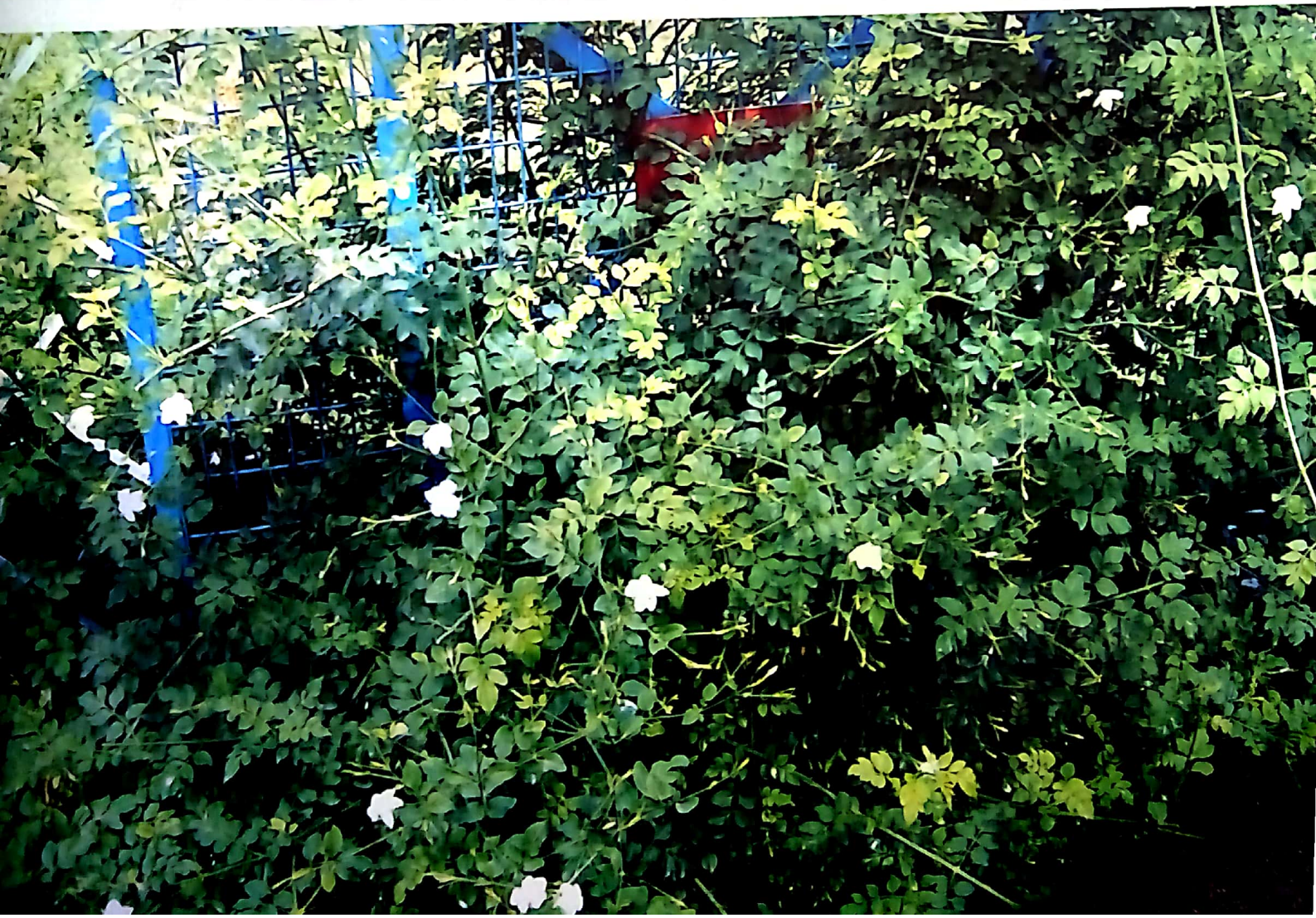

Scanned by CamScanner

अभिमुख असमपक्षवत्। पत्रक 6–11 तथा शीर्ष पत्रक सबसे बड़ा होता है। पुष्प वृन्त अक्षीय या अन्त्य पत्रों से बड़े होते हैं। पुष्प वृन्तों पर श्वेत सुगन्धित पुष्प खिले रहते है। वर्षाकाल में इस पर पुष्प खिलते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके पत्रों में जैस्मिनाइन नामक एक उपक्षार तथा रैजिन पाया जाता है। इसके तेल में बेंजिल एसीटेट, मेथिल एंथर निलेट और आंइलिकूल नामक पदार्थ पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह कफ पित्तशामक, वातशामक, त्रिदोषहर व्रणरोपण, व्रणाशोधन, वर्ण्य, वाजीकरण और वेदना स्थापन है। तेल वातशामक और सौमनस्यजनन है।

पत्र

मुखरोग नाशक, कुष्ठघ्न, कंडूघ्न तथा दांतो के लिये हितकारी है।

औषधीय प्रयोग

मुखरोग :

1. चमेली के 25 से 50 ग्राम पत्रों का क्वाथ बनाकर गंडूष करने से मुँह के छाले व मसूड़ों के रोगों में लाभ होता है।
2. इसके पत्तों को चबाने से मुंह के छालों में तथा मसूड़ों के विकार में लाभ होता है।

कर्णरोग :

1. कान में यदि शूल हो पीब निकलती हो, तब चमेली के 20 ग्राम पत्रों को 100 ग्राम तिल के तेल में उबालकर तेल को कान में 1–1 बूंद डालने से पीब बहना बन्द हो जाता है।
2. चमेली के तेल में एलुबा मिला के कान में डालने से कान की खुजली मिटती है। इसके पत्तों का 5 मिलीलीटर रस 10 मिली गौमूत्र में मिलाकर गरमकर कान में डालने से कर्ण शूल मिटता है।

मस्तक पीड़ा : इसके तीनों पत्रों को गुल रोगन के साथ पीसकर 2–2 बूंद नाक में टपकाने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

मुख की कान्ति : इसके 10–20 फूलों को पीसकर चेहरे पर लेप करने से चेहरे की कान्ति बढ़ती है।

आंख की फूली : फूलों की 5–6 सफेद कोमल पंखुडियों को थोड़ी सी मिश्री के साथ खरल करके, आंख की फुली पर लगाने से कुछ दिनों में वह फूली कट जाती है।

अर्दित : पक्षाघात, अर्दित आदि विकारों में मूल को पीसकर लेप करने तथा तेल की मालिश करने से लाभ होता है।

उदरकृमि : इसके 10 ग्राम पत्तों को पानी में थोड़ा जोश देकर पीने से पेट के कीडे निकल जाते हैं। मासिक धर्म साफ भी होता है।

वायुशूल : चमेली के गरम तेल में रूई का फोहा भिगो के नाभि पर रखने से वायुशूल मिटता है।

उदावर्त : उदावर्त–आनाह में इसकी जड़ का क्वाथ 10–20 ग्राम की मात्रा में नियमित रूप से सेवन करना चाहिए।

नपुंसकता :

1. चमेली के पुष्प व पत्रस्वरस से सिद्ध तेल की मालिश या जड़ का लेप इन्द्री पर करने से ध्वज भंग और नपुंसकता में लाभ होता है।
2. इसके पत्रस्वरस से सिद्ध 10 मिलीलीटर तेल में 2 ग्राम राई को पीसकर मूत्रेन्द्रिय, बस्ति, और जांघों पर लेप करने से नपुंसकता मिटती है। यह लेप बहुत उग्र है। इसलिये इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिये।
3. इसके 5–10 फूल पीसकर कामेन्द्रियों पर लेप करने से स्तम्भन की शक्ति बढ़ती है।
4. इसके 10–20 पुष्पों को कुचल कर नाभि और कमर पर बांधने से पेशाब साफ होता है। काम वासना बढ़ती है। और मासिक धर्म का कष्ट दूर होता है।

मासिक धर्म : चमेली के 20 ग्राम पंचाग को आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से तिल्ली आदि अंगों के बहाव की रूकावट और मासिक धर्म की रूकावट मिटती है।

उपदंश :

1. इस रोग में चमेली के पत्रों का स्वरस

Scanned by CamScanner

20 ग्राम, राल का चूर्ण 125 मिलीग्राम दोनो को मिलाकर प्रतिदिन सवेरे पीने से 15–20 दिन मे गर्मी का रोग नष्ट हो जाता है। पथ्य में सिर्फ गेहूँ की रोटी, दूध, भात और घी शक्कर का ही प्रयोग करना चाहिये।

2. इसके पत्रों के क्वाथ से उपदंश के घाव धोने से लाभ होता है।
3. इसके पत्तों का क्वाथ कृमिनाशक और मूत्रल है।
4. चमेली के पत्तों के सुखोष्ण क्वाथ में अथवा त्रिफला के सुखोष्ण क्वाथ में मूत्रेन्द्रिय को डुबाने से घोर पीड़ा शान्त होती है और रोग हल्का पड़ जाता है।[1]

बिवाई : इसके पत्तों के ताजा रस को पैरों की बिवाई पर लगाने से बिवाई अच्छी हो जाती है।

व्रणरोपण : व्रणों के शोधन एवं रोपण के लिये, इसके पत्रों के क्वाथ से व्रणों को धोना, एवं पत्रों एवं पत्रों से सिद्धतेल को लगाने में लाभदायक है।

कुष्ठ :

1. चमेली की नई पत्तियाँ, इन्द्र जौ, सफेद कनेर की जड़, करंज के फल, दारू हल्दी की छाल का लेप कुष्ठनाशक है।
2. इसकी जड़ के क्वाथ का सेवन करने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।

ज्वर : चमेली की पत्ती, ऑवला, नागरमोथा, यवासा, समभाग के तैयार क्वाथ में गुड़ मिलाकर दिन में दो बार 30 मि0ली0 मात्रा में सेवन करने से ज्वर के रोगी के भीतर रूके हुये दोष शीघ्र ही बाहर निकल जाते है।

चर्मरोग :

1. चमेली का तेल चर्मरोगों की एक अचूक व चमत्कारिक दवा है। इसको लगाने से सब प्रकार के जहरीले घाव, खाज, खुजली, अग्नि दाह, मर्मस्थान के नहीं भरने वाले घाव इत्यादि रोग बहुत जल्दी ठीक हो जाते है।
2. चर्म रोग तथा रक्त विकार जन्य रोगों मे इसके 8–10 फूलों को पीसकर लेप करने से बहुत आराम मिलता है।

विस्फोटक : इस रोग में इसके 1–15 फूलों का लेप शान्तिदायक है।

दाह : चमेली के फूलों से निर्मित सुगन्धित तेल दाह को ऐसे शान्त करती है जैसे जल अग्नि को।

दोष : इसके अधिक सेवन से गरम प्रकृति वालों के सिर में दर्द होता है। इसके दर्द का नाश करने के लिये, गुलाब का तेल और कपूर का प्रयोग करना चाहिये।

1. जातीयुगं तिक्तमुष्णं तुवरं लघु दोषजित्।
शिरोऽक्षिमुखदन्तार्त्तिविषकुष्ठव्रणाश्रजित्।। (भाव प्रकाश)
2. मालती तु वरा तिक्ता कटूष्णा दोषनाशिनी। (कै०नि०)
3. मुखपाके सिरावेधः शिरः कायविरेचनम्।
कार्यञ्च बहुधा नित्यं जातीपत्रस्य चर्वणम्। (भाव प्रकाश)
4. जातीपत्ररसैस्तैलं विपक्वं पूतिकर्णजित। (चक्रदत्त)
5. कोष्णो जाथा बराया का क्वाथे शिश्नं निमज्जयेत्
वेदनो परमस्तेन व्याधेस्य बल संक्षयः (मै० र०)
6. श्वेत करवीर मूलं कुटज करंजयो फल त्वचो दार्व्या
सुमनः प्रबाल युक्तो लेपः कुष्ठायहाः सिद्धः। (चरक)
7. जात्याभलक मुस्तानि तद्वद धन्वय वारूकम्।।
पिबहदोषो ज्वरितः कषाय सगुड पिबेत्। (चरक)

Scanned by CamScanner

44 चांगेरी

वैज्ञानिक नाम	:	*Oxalis corniculata* L.
कुलनाम	:	Oxalidaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian sorrel
संस्कृत	:	चांगेरी, अम्ल पत्रिका
हिन्दी	:	तिनपतिया
बंगाली	:	आम्रूल
मराठी	:	अंबुटी
पंजाबी	:	खट्टी बूटी, खट–मिट्ठा
गुजराती	:	आंबोती
द्राविड़ी	:	पुड़िया रै (ई)
कन्नड	:	पुल्लु पुलुचे

परिचय

चांगेरी भारतवर्ष के समस्त उष्ण प्रदेशों में तथा हिमालय में 6,000 फुट की ऊंचाई तक होता है। इस पर पुष्प और फल वर्ष भर मिलते है।

बाह्य–स्वरूप

इसका पौधा बहुत ही छोटा, प्रसरणशील 2.5 से 10 इंच तक लम्बा, पत्र लम्बे पत्रवृन्तों पर बहुत थोडे, त्रिपत्रकीय, अभिहृदयाकृत पुष्प अक्षीय प्रायः गुलाबी या पीतवर्ण के फल लम्बे, गोल, रोमश, बीज अनेक गहरे भूरे रंग के अंडाकार अनुप्रस्थ धारियों से युक्त होते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमे पौटेशियम और आक्जेलिक अम्ल होता है।

गुण–धर्म

चांगेरी अम्ल, कषाय रस, तथा उष्ण वीर्य होती है। यह कफवात शामक, पित्तवर्धक, शोथहर, वेदनास्थापन, लेखन, मदनाशक, संज्ञा प्रबोधन, रोचन, दीपन, यकृत उत्तेजक, ग्राही, हृद्य, रक्तस्तंभन, स्पर्श में शीत, दाह प्रशमन और ज्वरघ्न है। यह विटामीन सी का अच्छा स्रोत है।

औषधीय प्रयोग

सिर दर्द : इसके रस में प्याज का रस समभाग मिलाकर सिर पर लेप करने से पित्तज शिरशूल दूर होता है।

मसूढों के रोग : इसके पत्तों के रस से कुल्ले करने पर मसूढ़ो के असाध्य रोग भी मिट जाते हैं।

मुख की दुर्गन्ध : इसके 2–3 पत्तों को मुंह में पान की तरह रखने से मुख की दुर्गन्ध मिट जाती है।

दंतमंजन : इसके सूखे हुए पत्तों से दांतों का मंजन करना चाहिए।

संग्रहणी : संग्रहणी में इसके पंचाग का स्वरस एवं इसमें पीपल मिलाकर तथा रस से चार गुनी दही मिलाकर घी पका लेना चाहिए, यह घी संग्रहणी के लिए हितकारी है।

उदरशूल : इसके पत्तों के 40–60 ग्राम क्वाथ में भुनी हुई हींग व

Scanned by CamScanner

मुरब्बा मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से उदरशूल मिटता है।

अंतर्दाह : इसके 5–7 पत्तों को ठंडाई के समान घोटकर उसमें मिश्री मिलाकर प्रातः–सायं पीने से अंतर्दाह मिटती है।

मंदाग्नि : अग्निमांद्य में इस बूटी के 8–10 ताजे पत्तों की कढ़ी बनाकर देने से पाचन शक्ति दुरूस्त होकर भूख बढ़ती है।

अर्श

1. अर्श में इसके पंचांग को घी में सेंक कर शाक बनाकर दही के साथ सेवन से लाभ होता है।
2. चांगेरी, निशोथ, दन्ती, पलाश, चित्रक इन सबकी ताजी पत्तियों को समान मात्रा में लेकर घी में भूनकर, इस शाक को दही मिलाकर शुष्कार्श में खिलायें।[2]

अतिसार :

1. इसका 2–5 ग्राम स्वरस दिन में दो बार पीने पर पेचिश और अतिसार में भी लाभदायक है।
2. सह सौंठ और इन्द्रजौ के समभाग चूर्ण को चावलों के पानी के साथ पीने को दें। जब चूर्ण पच जाये तो छाछ, चांगेरी, दाड़िम का रस डालकर पकाई गयी यवागू अतिसार में खाने को दें।[1]
3. पुरानी पेचिश में इसके 4–5 पत्तों को उबालकर मट्ठे या दूध के साथ देने से बहुत लाभ होता है।

गुदभ्रंश : चांगेरी के रस में घी को सिद्ध करके गुदा पर लेप करने से कांच का निकलना बंद हो जाता है।

रक्तस्राव : इसके पंचांग के स्वरस की 5–10 मिलीलीटर मात्रा में दिन में दो बार प्रयोग करने से पतली धमनियों का संकोच होकर रक्तस्राव मिटता है।

दाह :

1. चांगेरी के 10–15 पत्तों को पानी के साथ पीसकर इनकी पुल्टिस बनाकर सूजन पर बांधने से सूजन की दाह मिटती है।
2. इसके पत्तों का लेप छोटे बच्चों के फोड़े–फुन्सियों पर भी लाभदायक है।

चौथिया ज्वर : चौथिया ज्वर में इसके लगभग एक हजार पत्तो को अच्छी तरह पीसकर, 16 गुने जल में उबालने चाहिए, जब यह गाढ़ा हो जाये तो इसमें इतना घी डाले कि रबड़ी जैसा हो जाये, इसका 5–10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से ज्वर तीन दिन में उतर जाता है।

धतूरे का नशा : इसके ताजा पत्तों का 20–40 मिलीलीटर रस पिलाने से धतूरे का नशा उतरता है।

मेद : इसके 8–10 पत्तों का लेप मेद पर करने से लाभ होता है।

बड़ी चांगेरी

छोटी चांगेरी

1. सनागरा निन्द्रयवान् लाभदेय बारडु लाम्बुना।
सिद्धा यबागू जीर्ण च चांगेरी तक दाडिमैः।। (चरक)

2. त्रिवृछन्ती पलाशाना, चांगेरी त्रिस्त्रस्त्रय च।
चमके मार्जितं दद्याच्छाकं दधि समन्वितम्।। (चरक)

45 चित्रक

वैज्ञानिक नाम	:	*Plumbago zeylanica* L
कुलनाम	:	Plumbaginaceae
अंग्रेजी नाम	:	Leadwort
संस्कृत	:	चित्रक, दहन, अग्नि, ब्याल, कालमूल
हिन्दी	:	चित्रक, चीता
गुजराती	:	चित्रो, चित्रा
मराठी	:	चित्रमूल
बंगाली	:	चिता
पंजाबी	:	चित्रा
तेलगु	:	चित्र मूलमु
द्राविड़ी	:	चित्रमूलं
अरबी	:	शैतरज
फारसी	:	बेख बरंदा

परिचय

चित्रक की खेती पूरे भारतवर्ष में की जाती है। रंग भेद से इसकी दो जातियां, श्वेत और रक्त क्रमशः *Plumbago zeylanica* और *Plumbago indica* पाई जाती है। लाल चित्रक के रक्तवर्ण और श्वेत के पुष्प श्वेत वर्ण के होते हैं। श्वेत चित्रक विशेषतः पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, दक्षिण भारत तथा श्रीलंका में होता है। रक्त चित्रक खासिया पहाड़, सिक्किम, कूच बिहार में अधिक मिलता है। इसका मूल, अर्क तथा पत्तों का प्रयोग किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

चित्रक का 3–6 फुट ऊंचा झाड़ीनुमा पौधा बहुवर्षायु और सदाबहार होता है। कांड बहुत छोटा, भूमि के उपर से ही कई कोमल पतली–पतली चिकने हरे रंग की शाखायें निकलती हैं। इसके पत्ते अभिमुख लट्वाकार या आयत लट्वाकार 3 इंच लम्बे और 1 इंच तक चौड़े अग्रभाग तीक्ष्ण, बहुत फलदार तथा हरे रंग के होते हैं। पुष्प 4–12 इंच लम्बे, शाखा युक्त, पुष्प दंड पर लम्बी नलिका वाले श्वेत वर्ण निर्गन्ध गुच्छों में लगे रहते हैं। फल लम्बे, गोल तथा एकबीजीय होते हैं। इसकी जंशु अंगुली जितनी मोटी बाहर से कृष्णाभ, अरूण और भीतर से श्वेत होती है। छाल पर छोटे–छोटे उभार होते हैं जो उपमूलों के अवशेष हैं। इसकी जड़

Scanned by CamScanner

तोड़ने पर टूट जाती है। इसका स्वाद कटु तीक्ष्ण और इसकी गन्ध अप्रिय होती है। पुष्प सितम्बर–नवम्बर में लगते हैं। फल चिपचिपे रोम से भरे रहते हैं।

रासायनिक संघटन

चित्रक मूल में प्ल्म्बेजिन नामक एक तत्व पाया जाता है। इसके अतिरिक्त स्वतन्त्र द्राक्षशर्करा, फलशर्करा तथा प्रोटिएज और इन्वर्टेज एंजाइम्स होते हैं।

गुण–धर्म

यह त्रिदोष हर है। उष्ण होने से वात को शान्त करती है। तिक्त कटु और उष्ण होने से दीपन पाचन, छर्दिनिग्रहण, ग्राही, अर्शोघ्न और कृमिघ्न है। यह आमपाचन है तथा महास्रोत में मल को निकालकर बाद में स्तम्भन करता है। तिक्त होने से यह स्तन्य–शोधन, रक्तशोधक, शोथहर और कटु पौष्टिक है। यह कफघ्न, ज्वरघ्न और विषम ज्वर प्रतिबन्धक है। रूक्ष होने से यह लेखन है।[1] यह औषधि अर्शोघ्न होती है। चित्रक, करेला आदि यह आरग्वधादि–गण की वनस्पतियां श्लेष्मा, विष, कुष्ठ, प्रमेह, वमन, कंडुनाशक तथा व्रणशोधक है।[2] चित्रक, कुटज, पलाश और त्रिफला, प्रमेह, अर्श, पांडु रोगनाशक एवं शर्करा को दूर करने वाले हैं।[3] चित्रक, हरीतकी, आंवला, बहेड़ा, पाढा यह मुष्ककादिगण कफनाशक, योनिदोषनाशक, दूध का शोधन करने वाले और पाचन हैं।[4] चित्रक, अदरक, मरिच, इन्द्रयव, पाठा, जीरा, कायफल यह कफघ्न, प्रतिश्याय, वायु, अरूचिनाशक, दीपन, गुल्मनाशक एवं आम पाचक है।

औषधीय प्रयोग

नकसीर : इसके 2 ग्राम चूर्ण को शहद के साथ चाटने से नक्सीर बंद होती है।

स्वर भेद : अजमोदा, हल्दी, आंवला, यवक्षार, चित्रक के चूर्ण को मधु तथा घृत के साथ चाटने से स्वर भेद दूर होता हैं। मात्रा 1 से 2 ग्राम तक दिन में तीन बार देनी चाहिए।

अग्निवर्धक :

1. सैन्धव लवण, हरड़, पिप्पली, चित्रक इन्हें समभाग में मिश्रित कर गरम जल के साथ सेवन करने से अग्नि प्रदीप्त होती है। इसके सेवन से घी, मांस और नये चावल का ओदन क्षणमात्र में पच जाता है। मात्रा 1 से 2 ग्राम तक प्रातः–सायं।[5]
2. अरूचि, अग्निमांद्य और अजीर्ण के विकारों में इसकी ताजी जड़ के 2–5 ग्राम चूर्ण को समभाग वायविडंग और नागरमोथे के साथ प्रातः–सायं भोजन से पहले देने से पाचन शक्ति की व्यवस्था ठीक होकर नियमित भूख लगने लगती है।

संग्रहणी : चित्रक के क्वाथ और कल्क से सिद्ध किये घी का 5–10 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं भोजनोपरान्त सेवन करने से संग्रहणी मिटती है।

तिल्ली :

1. घृतकुमारी के 10–20 ग्राम गूदे पर चित्रक की छाल के 1–2 ग्राम चूर्ण को बुरककर प्रातः–सायं खिलाने से तिल्ली की सूजन मिटती है।

प्लीहा : चित्रक मूल, हल्दी, अर्क (मदार) का पका हुआ पत्ता, धातकी के फूल का चूर्ण इनमें से किसी एक को गुड़ के साथ दिन में तीन बार 1 से 2 ग्राम तक खाने से प्लीहा रोग नष्ट हो जाता है।[6]

अर्श :

1. चित्रक के मूल त्वक के 2 ग्राम चूर्ण को तक्र के साथ प्रातः–सायं भोजन से पहले पीने से बवासीर में लाभ होता है।
2. इसकी जड़ को पीसकर मिट्टी के बरतन में लेप कर, इसमे दही जमाकर, फिर उसी बर्तन में बिलोकर उस छाछ को पीने से अर्श मिटता है।

सुख प्रसव : 10 ग्राम चित्रक की जड़ के चूर्ण को 2 चम्मच मधु के साथ स्त्री को चटाने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।

वात रोग : चित्रक की जड़, इन्द्रजौं, काली पहाड़ की जड़, कुटकी, अतीस और हरड़ ये सब चीजें समान भाग लेकर चूर्ण बनाकर 3 ग्राम तक की मात्रा में प्रातः–सांय लेने से सब प्रकार के वात रोग मिटते हैं।

सन्धिवात : चित्रक मूल, आंवला, हरड़, पीपल, रेबंद चीनी और सेंधा नमक इन सब चीजों को समान भाग लेकर चूर्ण बनाकर 4 से 5 ग्राम तक की मात्रा में प्रतिदिन सोते समय गरम पानी के साथ लेने से पुराना सन्धिवात, वायु के रोग और आंतों के रोग मिटते हैं।

हिस्टीरिया : चित्रक की जड़, ब्राह्मी और वच का समान भाग चूर्ण बनाकर 1 से 2 ग्राम तक की मात्रा में दिन में तीन बार देने से हिस्टीरिया में लाभ होता है।

गठिया : लाल चित्रक मूलत्वक को तेल में मिलाकर मर्दन करने से पक्षाघात और गठिया मिटता है।

ज्वर :

1. ज्वर में इसकी जड़ के चूर्ण को

रक्त चित्रक

Scanned by CamScanner

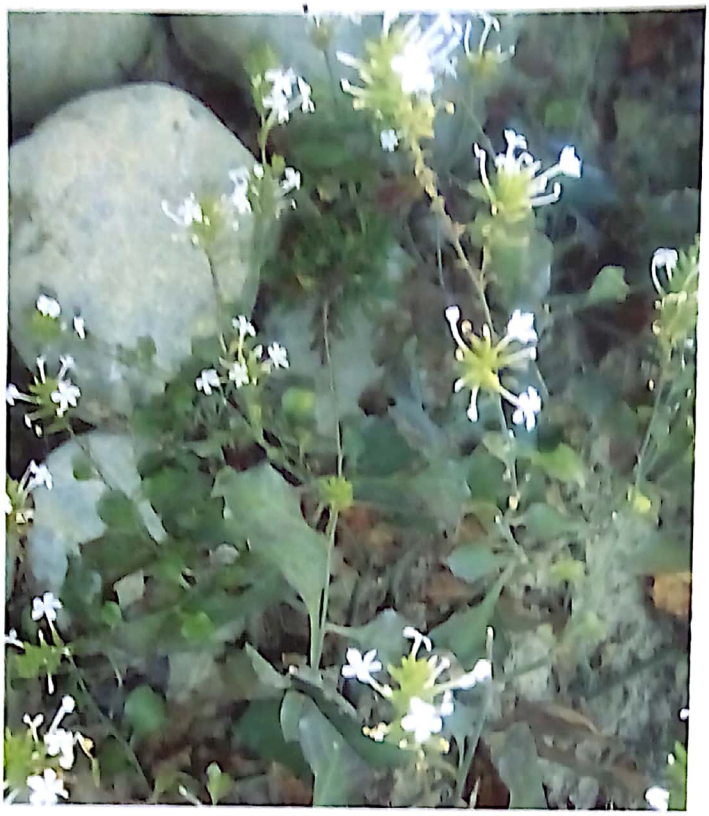

सौंठ, मरिच, पीपल के साथ 2–5 ग्राम की मात्रा में देने से अच्छा लाभ होता है।

2. ज्वर में जब रक्ताभिसरण क्रिया मन्द हो जाती है और रोगी अन्न नहीं खा सकता, उस समय चित्रक मूल के टुकड़े को चबाने से अच्छा लाभ होता है।

3. प्रसूतिका ज्वर में चित्रक की जड़ का 2–5 ग्राम चूर्ण दिन में तीन बार देने से ज्वर मन्द हो जाता है तथा दूसरे गर्भाशय उत्तेजित होकर दूषित आर्तव बहने लगता है, जिससे मक्कल शूल मिटता है। प्रसूतिका ज्वर में इसे निर्गुंडी के 10–20 मिलीलीटर स्वरस के साथ देना चाहिये।

वर्मरोग : चित्रक की छाल को दूध या जल के साथ पीसकर कोढ़ और त्वचा के दूसरे प्रकार के रोगों पर लेप करना चाहिये अथवा इन्हीं चीजों के साथ पीसकर पुल्टिस बनाकर तब तक बंधा रखना चाहिये जब तक कि छाला न उठ जाये। इस छाले के आराम होने

पर श्वेत कुष्ठ के दाग मिट जाते हैं।

खुजली : लाल चित्रक के दूध का लेप करने से खुजली मिटती है।

कुष्ठ : लाल चित्रक की सूखी जड़ की छाल के 2–5 ग्राम चूर्ण के प्रातः–सायं प्रयोग से उपदंश और कुष्ठ मिटता है।

पूतिव्रण : जिन घावों से पीप बहता हो, उनका मुंह बंद करने के लिए चित्रक छाल को जल में पीसकर लेप करना चाहिए।

चूहे का विष : इसकी छाल के चूर्ण को तेल में पकाकर तलुए पर मलने से मूषक विष उतर जाता है।

विशेष : इसका प्रयोग अधिक मात्रा में नहीं करना चाहिये, योग्य और निर्धारित मात्रा में ही इसका सेवन हितकारी है व अधिक मात्रा में इसका प्रयोग करने से ये विष का कार्य करती है।

नीला चित्रक

1. चित्रक : कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः।।
रुक्षोष्णो ग्रहणी कुष्ठशोथार्शः कृमिकासनुत्।
वात श्लेष्महरो ग्राही वातघ्नः श्लेष्मपित्तहृत्।। (भाव प्रकाश)
2. आरग्वधमदनगोप घोण्टाकण्टकीकुटजपाठापाटलाम्। (सुश्रुत)
3. पिप्पलीभूतावव्यचित्रकशृंगवेरमरिचहरितं।। (सुश्रुत)
4. मुष्ककादिर्गणो ह्यपेश मेदोघ्नः शुक्रदोषहृत्।
मेहार्श: पांडुरोगाश्मशर्करानाशनः परः।। (सुश्रुत)
5. सिन्धूत्थपथ्यमगधोद्भववह्निचूर्णं मुण्णाम्बुना पिबति यः खलुनष्टवह्निः।
तस्याभिषेण सघृतेन वरं नवान्नं भस्मीभवत्यशित मात्रमिहक्षणेन।। (भैषज्य रत्नावली)
6. गुडैश्चित्रक मूलं वा रजन्यर्कदलं तथा।
धातकीपुष्पचूर्णं वा प्रत्येकं प्लीहनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

दालचीनी

46

वैज्ञानिक नाम	:	*Cinnamomum zeylanicum* Bl
कुलनाम	:	Lauraceae
अंग्रेजी नाम	:	Cinnamon
संस्कृत	:	गुडत्वक, चोंच, त्वक्, उत्कट, दारूसिता
हिन्दी	:	दालचीनी
गुजराती	:	तज, बेल, बालची
मराठी	:	दालचीनी, पूहरचक
बंगाली	:	दारूचिनी, पोइ
पंजाबी	:	दालचीनी
तेलगु	:	लवंण वक्ल
कन्नड़	:	लवंग पट्टे
फारसी	:	दारचीनी
अरबी	:	दारसीनी, किर्फा

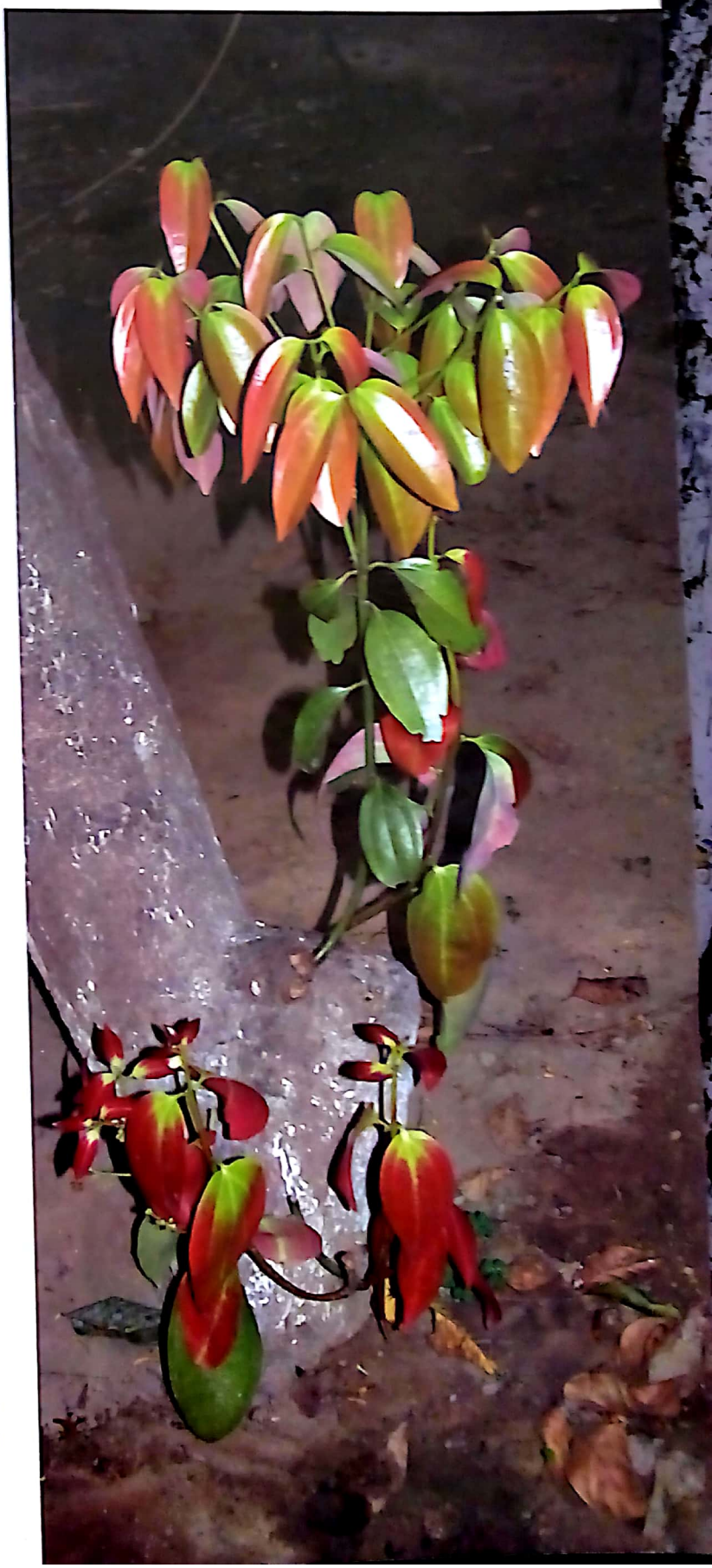

परिचय

दालचीनी, हिमालय प्रदेश, सीलोन और मलाया प्रायःद्वीप में पैदा होती है। देश भेद से यह तीन प्रकार की होती है :

1. *C. cassia* : यह चीनी से आती है और इसकी छाल मोटी होती हैं।
2. *Cinnamomum sp.* : इसका भारत में आयात श्रीलंका से किया जाता है, यह चीनी जाति से पतली, अधिक मधुर तथा कम तीक्ष्ण होती है। औषधि के लिये, सिंहल द्वीप की दालचीनी ही सर्वोत्तम है।
3. *Cinnamomum tamal* : यह मोटी, कम तीक्ष्ण तथा जल से पीसने पर लुआबदार हो जाती है। इसी के पत्र का प्रयोग तेज़पत्र के नाम से किया जाता है। भारतीय तथा चीनी जाति की दारूसिता को तज कहते हैं। तज में से तेल नहीं निकाला जाता, केवल छाल का ही प्रयोग किया जाता है। दालचीनी मसाले के रूप में हर घर में प्रयोग की जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका सदाहरित वृक्ष प्रायः 20 से 25 फुट ऊँचा होता है, इसके पत्र अभिमुख, चर्मवत् 4–7 इंच लबे होते है। उनका ऊपरी भाग

Scanned by CamScanner

चमकीला होता है और सिरायें 3–5 होती है. पत्तियों के मलने पर तीक्ष्ण गंध आती है. स्वाद भी इनका कटु होता है। पुष्प लम्बे पुष्पदंडो पर गुच्छो में दुर्गन्धयुक्त होते है। फल आधे से एक इंच लम्बे, अण्डाकार, गहरे बैंगनी रंग के, घंटिकाकार परिपुष्प से आवृत्त होते है, जिनके भीतर एक बीज होता है। फलों को तोड़ने पर भीतर से तारपीन की सी गन्ध आती है। दारूसिता के नये वृक्षों की छाल चिकनी पाण्डुवर्ण की तथा पुराने वृक्षों की रूखी और भूरे रंग की प्रायः 6 मिलीमीटर मोटी और भंगुर होती है।

रासायनिक संघटन

छाल में ½ से 1 प्रतिशत तक एक तेल पाया जाता है, जिसमें सिन्नामल्डीहाइड तथा यूजीनोल होता है। प्रारम्भ में यह हल्के पीले रंग का, परन्तु रखने पर लाल हो जाता है। पत्तियों से भी एक तेल निकाला जाता है, जिसमे लवण सदृश युजिनोल होता है। बीजों से 33 प्रतिशत एक स्थिर तेल निकलता है। मूलत्वक से रंगहीन कपूर गन्धि तेल निकलता है।

गुण–धर्म

दीपन, पाचन, वातानुलोमन, यकृत उत्तेजक, पित्तशामक, वेदना स्थापक, मुख–शोधक है। मुख की दुर्गन्ध का नाश करती है। आवाज अगर बैठ जाये तो इसे खोल देती है। यह हृदय को उत्तेजना देने वाली ओजवर्धक है। अफारा, मरोड़ी अतिसार, जीर्ण अतिसार संग्रहणी और वमन बन्ध के लिये दालचीनी का प्रयोग करना चाहिये।

दालचीनी तेजपात यह सब वायु, कफ, विष को नष्ट करते है। पेट को स्वच्छ करते है। कडू, पिडिका और कुष्ठ को नष्ट करते है।

औषधीय प्रयोग

दंत शूल :

1. दंतशूल में दालचीनी के तेल का रूई का फोवा बनाकर लगाने से लाभ होता है।
2. इसके 5–6 पत्तों को पीसकर मंजन करने से दांत स्वच्छ और चमकीले हो जाते हैं।

इनफ्लूएंजा : दालचीनी 3½ ग्राम, लौंग 600 मिलीग्राम, सौंठ 2 ग्राम इन तीनों को एक किलो पानी में उबाले, 250 ग्राम शेष रहने पर उतार कर छान लें। इसको दिन में 3 बार, 50 ग्राम की मात्रा में देने से इनफ्लूएंजा ज्वर में बड़ा लाभ होता है

कान का बहिरापन : दाल चीनी का तेल कान में 2–2 बूँद टपकाने से कान के बहिरेपन में लाभ होता है।

नेत्र : दालचीनी का तेल आंखों के ऊपर लगाने से आंख का फड़कना बन्द हो जाता है और नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

कासरोग : एक चम्मच तेजपात का चूर्ण, 2 चम्मच मधु के साथ सुबह शाम सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है।

कासप्रतिश्याय : एक चौथाई चम्मच दालचीनी चूर्ण में 1 चम्मच

Scanned by CamScanner

मधु को थोड़ा सा गुनगुना करके, मिलाकर दिन में तीन बार देने से कास प्रतिश्याय नष्ट होता है।

सिरदर्द :

1. तेजपात के 8–10 पत्तों को पीसकर बनाये गये लेप को कपाल पर लगाने से ठंड या गर्मी से उत्पन्न सिर दर्द में आराम मिलता है। आराम मिलने पर लेप को धोकर साफ कर लें।
2. दालचीनी के तेल को ललाट पर मलने से सर्दी की वजह से पैदा हुआ सिरदर्द मिट जाता है।
3. जुकाम के कारण शिरोवेदना में दालचीनी को घिसकर गरम कर लेप करना चाहिये या दालचीनी का अर्क निकालकर मस्तिष्क पर लेप करने से लाभ होता है।

हिक्का : दालचीनी का 10–20 ग्राम काढ़ा, 250 मिलीग्राम मस्तंगी के साथ देने से कफ की हिचकी मिटती है।

यक्ष्मा : दालचीनी के तेल का अल्प मात्रा में सेवन करने से कीटाणुओं का नाश होकर रोग ठीक हो जाता है।

प्रसवपीड़ा : प्रसव पीड़ा में मांस पेशियों की शिथिलता घटाने के लिये 5–10 ग्राम दालचीनी का प्रयोग 1 ग्राम पीपलमूल एवं 500 मिलीग्राम भाँग के साथ करने से लाभ होता है।

संधिवात : संधिवात में दालचीनी का 10–20 ग्राम चूर्ण को 20–30 ग्राम मधु में मिलाकर पेस्ट बना लें। पीड़ायुक्त संधि पर इसकी धीरे–धीरे मालिश करने से लाभ होता है। इसके साथ–साथ एक कप गुनगुने जल में 1 चम्मच मधु एवं दालचीनी का 2 ग्राम चूर्ण मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करना चाहिये।

रक्तस्त्राव :

1. दालचीनी के क्वाथ से रक्तस्राव बन्द होता है, अतः फेफड़ो में रक्तस्राव हो, गर्भाशय के द्वारा अत्यधिक रक्तस्राव हो और अन्य किसी भी प्रकार के रक्तस्राव में दालचीनी का काढ़ा 10–20 मि॰लि॰ सुबह, दोपहर तथा शाम देने से लाभ पहुंचता है।
2. शरीर के किसी भी अंग से रक्तस्राव होने पर एक चम्मच तेजपात का चूर्ण एक कप पानी के साथ 2–3 बार सेवन करने पर रोग में लाभ होता है।

कोलस्ट्रोल : एक कप पानी में दो चम्मच मधु तथा तीन चम्मच दालचीनी चूर्ण मिलाकर प्रतिदिन 3 बार सेवन करने से रक्त में कोलेस्ट्राल की मात्रा कम होती है।

उदर रोग :

1. 5 ग्राम दालचीनी चूर्ण में 1 चम्मच मधु मिलाकर, दिन में 3 बार चाटने से उदर रोग, अतिसार, जीर्ण अतिसार, ग्रहणी रोग और अफारे में लाभ होता है।
2. दालचीनी का चूर्ण 750 मिलीग्राम, कत्था चूर्ण 750 मिलीग्राम दोनों की फंकी जल के साथ दिन में तीन बार लेने से दस्त बन्द हो जाते हैं।
3. शुंठी चूर्ण 500 मिलीग्राम, इलायची 500 मिलीग्राम, दाल. चीनी 500 मिलीग्राम इन तीनों को पीसकर भोजन के पहले प्रातः–सायं लेने से भूख बढ़ती है और कब्जियत मिटती है।
4. दालचीनी का तेल पेट पर मलने से आंतों का खिंचाव दूर हो जाता है।
5. दालचीनी 4 ग्राम, कत्था 10 ग्राम, दोनों को मिलाकर पीस ले। इसमे 250 ग्राम खौलता हुआ पानी डालकर ढ़क देना चाहिये। दो घंटे बाद इसको छानकर दो हिस्से करके पीना चाहिये। इससे दस्त बन्द हो जाते है।
6. दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता, बराबर–बराबर लेकर क्वाथ करें इसके सेवन से अमाशय की ऐंठन दूर होती है।
7. दालचीनी और लंवग का क्वाथ 10–20 ग्राम पिलाने से वमन बन्द होती है।
8. बेलगिरी के शर्बत में दालचीनी का 2–5 ग्राम चूर्ण मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से अतिसार मिटता है।
9. पित्तज वमन में दालचीनी का क्वाथ 10–20 ग्राम पिलाने से लाभ होता है।
10. आमाशयिक शूल एवं वमन में इसके 5–10 मिलीलीटर तेल को 10 ग्राम मिश्री के साथ खिलाने से लाभ होता है।

चर्मरोग : शहद एवं दालचीनी का मिश्रण रोग ग्रसित भाग पर लगाने से थोड़े ही दिनों में खुजली खाज तथा फोड़े फुन्सी जैसे चर्म रोग नष्ट हो जाते है।

ज्वर : शीतप्रधान संक्रामक ज्वर में 1 चम्मच शहद में 5 ग्राम दालचीनी का चूर्ण मिलाकर सुबह, दोपहर तथा सायं सेवन करने से लाभ होता है।

हानि : इसकी अधिक मात्रा उष्ण प्रकृति वालों को सिर दर्द पैदा करती है। दालचीनी गर्भवती स्त्रियों को नहीं देनी चाहिये, क्योंकि यह गर्भ को गिरा देती है। गर्भाशय में भी इसको रखने से गर्भ गिर जाता है।

प्रतिनिधि : कबाब चीनी और कुलंजन इसके प्रतिनिधि है।

दर्पनाशक : कतीरा, असारून, सफेद चन्दन, खमीरा और बनफसा हैं।

1. त्वचं लघूष्णं कटुकं स्वादु तिक्तं च रूक्षकम्।
पित्तलं कफ वातघ्नं कडूंवामारूचि नाशनम्। (भाव प्रकाश)

2. एलातगरकुष्ठमांसीध्यामकत्वक्पत्रनागपुष्पप्रियंगुहरेणु.....।। (सु॰ सू॰)

Scanned by CamScanner

47 धनिया

वैज्ञानिक नाम	:	*Coriandrum sativum* L.
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Coriander
संस्कृत	:	धान्यक, कुस्तुम्बुरू, वितुन्नक
हिन्दी	:	धनिया
गुजराती	:	कोथमीर, धाणा
मराठी	:	धणों, कोथिब्या
बंगाली	:	धने
पंजाबी	:	धनिया
तैलगु	:	धनियालु
तमिल	:	कोतामल्लि
फारसी	:	कश्नीज
अरबी	:	कुज्वर

परिचय

सम्पूर्ण भारतवर्ष में धनिये के सूखे फलों का व्यवहारिक प्रयोग मसाले के तौर पर हर घर में किया जाता है। मसाले के रूप में धनिये की प्रसिद्धि से सब परिचित है। यहाँ पर धनिये के औषधीय गुण और औषध्यार्थ उपयोग का ही प्रस्तुतीकरण किया गया है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वर्षायु कोमल शाखा प्रशाखायुक्त, गन्धयुक्त 1–3 फुट ऊँचा क्षुप होता है। पत्र पक्षवत् विभक्त होते है। जिसमें नीचे के पत्रक लट्वाकर, खंडयुक्त तथा दन्तुर और ऊपर के पत्रक रेखाकार होते है। पुष्प श्वेत या बैंगनी रंग के संयुक्त होते है। फल गोलाकार,

पीताभ, भूरे तथा धारीदार होते है जो दबाने पर दो भागों में विभक्त हो जाते है जिसमे एक–एक बीज होता है। शीत ऋतु के अन्त में फूल और फल होते है।

रासायनिक संघटन

धनिये में 0.36 से 1.6 प्रतिशत तक एक उड़नशील तेल तथा 13 प्रतिशत तक स्थिर तेल पाया जाता है। उड़नशील तेल में मुख्यत कोरिएन्ड्रोल पाया जाता है, धनिये को विशेष तथा चूर्ण को अच्छी तरह मुखबन्द पात्रों में भरकर शीतल स्थान में रखना चाहिये अन्यथा इसका उड़नशील तेल उड़जाने से औषधि निर्वीर्य हो जाती है।

गुण–धर्म

त्रिदोषहर, शोथहर, वेदना स्थापन, तृष्णा निग्रहण, रोचन, दीपन, पाचन, ग्राही, यकृत उत्तेजक, रक्तपित्त शामक, हृद्य, कफघ्न, मूत्रविरंजनीय मूत्रजनन, ज्वरहन मस्तिष्क बल्य, तथा शुक्रनाशक है।

औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग :

1. 20 ग्राम धनिया को कूटकर एक गिलास पानी में उबालकर पानी को कपडे से छान कर एक–एक बूंद आंखों में टपकाने से नेत्राभिष्यन्द रोग या आँखों के दुखने में बहुत लाभ होता है। इससे आंखों की जलन कम होती है, इनमें से पानी का बहना बन्द हो जाता है।
2. धनिया के रस को स्त्री के दूध में मिलाकर आंख में एक–एक बूंद टपकाने से आंख का कठिन दर्द भी दूर हो जाता है।
3. धनिया के पत्तों के रस को आंख में एक या दो बूंद दिन में दो बार टपकाने से चेचक का दाना आंख में नहीं निकलता है।
4. 20 ग्राम धनिया को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष काढ़े से नेत्रों को धोने से आंख की सफेदी, पुरानी सूजन और

Scanned by CamScanner

चेचक की वजह से होने वाला आंख का जख्म मिट जाता है।

5. धनिया के बीजों को और जौ समभाग लेकर पीसकर, उनका पुल्टिस बनाकर आंखों पर बांधने से आंखों की सूजन पर लाभ होता है।

कंठमाला : 10–20 ग्राम धनिया को पीसकर जौ के सत्तू में मिलाकर लगाने से कंठमाला मिटती है।

कंठपीड़ा : धनिया के 5–10 ग्राम बीजों को दिन में दो–तीन बार चबाने से गले की पीड़ा मिटती है।

मस्तक पीड़ा : समभाग धनिया और आंवलों को रात भर पानी में भिगोकर, प्रातः काल घोटें और छानकर मिश्री मिलाकर पिलाने से, गरमी से होने वाली मस्तक पीड़ा मिटती है।

श्वांस की दुर्गन्ध : 5–10 ग्राम धनिया को नियमित रूप से चबाने से श्वास की दुर्गन्ध मिटती है।

सिरगंज : धनिया के 100 ग्राम चूर्ण को 100 ग्राम सिरका के साथ पीस कर लेप करने से सिर की गंज मिटती है।

नक्सीर : धनिया के 20 ग्राम पत्तों को पीसकर उसमें जरा सा कपूर मिलाकर 1–2 बूंद नाक में टपकाने से और सिर पर मलने से नकसीर बन्द हो जाते है।

बच्चों की खांसी : चावलों के पानी में 10–20 ग्राम धनिया को घोटकर शक्कर मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से बच्चों की खांसी और दमें में लाभ होता है।

बवासीर :

1. 10–20 ग्राम धनिया के बीजों को एक गिलास पानी व 10 ग्राम मिश्री के साथ उबालकर पिलाने से बवासीर से बहने वाला खून रूक जाता है।
2. हरड़, गिलोय, धनिया, इनको समभाग में लेकर चार गुने पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में गुड़ डालकर सेवन करने से सब प्रकार के अर्श नष्ट होते है।

रक्तप्रदर : धनिया का क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में दो–तीन बार पिलाने से मासिक धर्म में प्रमाण से अधिक रूधिर का बहना बन्द हो जाता है।

जोडों का दर्द : 6 ग्राम धनिया के चूर्ण में 10 ग्राम शक्कर मिलाकर सुबह–शाम खाने से गर्मी से होने वाला जोड़ो का दर्द मिट जाता है।

उदर विकार :

1. गर्मी से होने वाले उदर शूल में धनिया के 2 ग्राम चूर्ण को 5 ग्राम मिश्री के साथ दिन में दो–तीन बार देने से लाभ होता है।
2. दस्त के साथ यदि रक्त आता हो तो 20 ग्राम धनिया को एक गिलास पानी में भिगोकर पीस छानकर प्रातः–सायं पिलाना चाहिये।
3. धनिया के 1 ग्राम चूर्ण को 20 मिलीलीटर शराब के साथ पीने से पेट के कीड़े निकल जाते है। और पुनः उत्पन्न नहीं होते।
4. अतिसार में 10 ग्राम भुना हुआ धनिया खाने से दस्त फौरन बन्द हो जाते है।
5. पेट में यदि अफारा हो तो धनिया के तेल को 10–15 मि॰ली॰ मात्रा में सेवन से तुरन्त आराम होता है।

वमन :

1. गर्भावस्था की वमन में धनिया के 100 ग्राम काढे में 20 ग्राम मिश्री और चावल का पानी 20 ग्राम मिलाकर थोड़ा–थोड़ा पिलाने से गर्भवती स्त्री की वमन बन्द होती है।
2. धनियां, सौंठ, मिश्री, नागरमोथा, 5–5 ग्राम, 32 ग्राम जल में क्वाथ बनाकर गर्भवती को पिलाने से अथवा अन्य किसी को भी, किसी कारण से उल्टी होने पर पिलाने से वमन तुरन्त बन्द हो जाती है।

अग्निमांद्य : श्वास, विषम ज्वर तथा अजीर्ण में धनियां, लौंग, सौंठ तथा निशोथ, सबका समभाग चूर्ण बनाकर उष्ण जल के साथ 2–2 ग्राम सुबह–शाम सेवन करना चाहिये।

आंव :

1. धनिया तथा सौंठ के 20 ग्राम क्वाथ में एरंड मूल का चूर्ण 1 ग्राम मिलाकर दिन में दो बार पिलाना चाहिये।
2. समभाग धनिया और सौंठ का क्वाथ 10–20 ग्राम सुबह–शाम पीने से पाचन शक्ति बढ़ जाती है।

तृषा : धनिया के पानी में मधु और मिश्री मिलाकर पिलाने से पित्त रोग से पैदा हुई प्यास मिटती है।

पित्तज्वर : 10 ग्राम धनिया और चावल समभाग को रातभर भिगोकर, प्रातःकाल उनका क्वाथ कर 30 मि0ली. सुबह–शाम पिलाने से अंतरदाह और पित्त ज्वर मिटता है।

मूत्राघातः 10 ग्राम धनिया तथा 10 ग्राम गोक्षुर के फलों को

Scanned by CamScanner

400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में घी मिलाकर सुबह–शाम 20 मिलीलीटर की मात्रा में पिलाना चाहियें।

मस्से : 10–20 ग्राम धनिया को या इसकी 20–30 हरी पत्तियों को पीसकर लगाने से चेहरे के तिल और मस्से मिटते है।

सफेद छाले : 5 ग्राम धनिया को 100 ग्राम पानी में रात्रि में भिगोकर सुबह मसल कर छानकर तैयार हिम, फांट, या क्वाथ के कुल्ले करने से बच्चों के मुंह के सफेद छाले मिटते है।

शिरोभ्रम : धनिया का 6 ग्राम अवलेह नित्य लेने से मस्तक पीड़ा, भ्रम और चक्कर मिटते है।

बच्चों का उदर शूल : 5 ग्राम धनिया को 100 ग्राम पानी में रात्रि में भिगोकर सुबह मसलकर छान कर तैयार किया हिम बच्चे को पिलावें।

सूजन वेदना :

1. शरीर के अन्दर कहीं भी चीसें चलती हो तों इसके तर और ताजा पत्तों के रस को दूध या रोगन गुल बारतुंग में मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।
2. गर्मी की सूजन में इसके पत्तों के 10–20 ग्राम रस को 10 ग्राम सिरके में मिलाकर लगाने से सूजन मिट जाती है।

ददर्द–शीत पित्त : शरीर में पित्ती उछलने पर धनिया के पत्तों के रस को शहद और रोगन गुल के साथ मिलाकर लगाना चाहिये और साढ़े सत्रह ग्राम शक्कर तथा उन्नाव का पानी मिलाकर पिलाना चाहिये।

जहरबाद : जहर बाद और सख्त सूजन में धनिया के 20–25 ग्राम ताजे पत्तों को पीसकर उनमें चने का आटा और रोगन गुल मिलाकर लेप करने से फायदा होता है।

कारबकल : धनिया के रस को खरल में डालकर, रोगनगुल मिलाकर तथा शीशे के डंडे से खूब घोटकर कारबकल पर लगाने से बहुत फायदा होता हैं।

दाह:

1. धनिया के पत्तों की चटनी बनाकर खाने से दाह शान्त होती है।

2. अधकुटा धनिया 20 ग्राम, जल 120 ग्राम एक मिट्टी के बरतन में डालकर रात्रि भर पड़ा रहने दें। प्रातः काल इस शीतकषाय को छानकर 13 ग्राम खांड डालकर थोड़ा–थोड़ा पीने से पित्तज्वर जन्य अन्तर्दाह शान्त हो जाता है। इसे अत्यन्त प्यास और कब्ज होने पर पीते है।[2]

हानि : धनिया के पत्ते और बीजों को अधिक मात्रा में सेवन करने से मनुष्य की काम शक्ति कम हो जाती है। मासिक धर्म रूक जाता है। और दमे की बीमारी में नुकसान पहुँचाता है।

दर्पनाशक : इसके दर्प का नाश करने के लिये, शहद, दालचीनी और अंडे की जर्दी प्रयोग करते हैं।

1. धान्यकं तुवरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु।
तिक्तंकटुकमुष्णं च दीपनं स्मृतम्।।
ज्वरघ्नं रोचनं ग्राहि स्वादुपाकि त्रिदोषनुत्।
तृष्णादाहवमिश्वासकासामार्शः कृमिप्रणुत्।।
आर्द्रं तु तद्गुणं स्वादु विशेषात् पित्तनाशि तत्।।
(भाव प्रकाश)

2. धान्यकं कासतृड्छर्दिज्वरघ्नच्चक्षुषो हितम्।
कषायं तिक्तमधुरं हृद्यं रोचनदीपनम्।। (ध०नि०)

3. धान्यतुम्बरू। रोचनं दीपनं वातकफदौर्गन्ध्य नाशनम्।।
(च०सू०27)

4. आर्द्रा कुस्तुम्बरी कुर्यात् स्वादुसौगन्ध्यहृद्यताम्।। (सु०सु०)

5. धान्यनागरसिद्ध तु तोयं दद्यात् विचक्षणः।
आमाजीर्ण प्रशमनं शूलघ्नं वस्तिशोधनम्।। (बंगसेन)

6. व्युपितं धन्याक जलं प्रातः पीतं सशर्करं पुंसाम।
अन्तदहि शमथव्यथिरात् दूर प्ररूऽमपि।। (भै०र०)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Woodfordia fruticosa* (L.) Kurz.
कुलनाम	:	Lytheraceae
अंग्रेजी नाम	:	Fire flame bush
संस्कृत	:	धातकी, धातुपुष्पी, वह्निज्वाला, ताम्रपुष्पी
हिन्दी	:	धातकी, धवई, धाय, धाई, धावा
गुजराती	:	धावडी, धावणी
मराठी	:	धायटी, धादस, धालस
बंगाली	:	धाई, धाईफूल
पंजाबी,	:	धावी
फारसी	:	धालस, धावा
तैलगु	:	सिरींजी, एरांपुर्वु

परिचय

धातकी के लगभग 10 से 15 फुट ऊंचे गुल्म समस्त भारतवर्ष में 5,000 फुट की ऊंचाई तक देखने को मिल जाते हैं, प्रायः बंगाल के जलीय प्रदेश और दक्षिण भारत में देखने को नहीं मिलते हैं। जनवरी से अप्रैल तक, जब यह फूलों से भर जाता है, तब इसके पत्ते झड़ जाते हैं तथा फरवरी से मार्च में यह नये पत्ते धारण करता है।

बाह्य–स्वरूप

कांड छोटा, बहुशाखीय, कांड त्वक, रक्ताभ, भूरे रंग की पतले टुकड़ों में छूटती रहती है। पत्र संवृन्त दाड़िम की भांति परन्तु आकार में उनसे छोटे, पीत वर्ण के अभिमुख, अधर तल पर सूक्ष्म रोमयुक्त होते हैं। इसकी शाखाओं और पत्तों पर विशेष प्रकार के काले–काले बिन्दुओं का जमघट होता है। पुष्प चमकीले लाल रंग के, पत्रों के नीचे से निकले पुष्प दंड पर गुच्छों में लगते हैं। फल पतले व अंडाकार फल में भूरे रंग के छोटे, चिकने बीज भरे रहते हैं।[1]

रासायनिक संघटन

पुष्पों में टैनिन 24.1 प्रतिशत तथा शर्करा 11.81 प्रतिशत होती है। पत्तियों में 12–20 प्रतिशत टैनिन तथा मेंहदी की तरह का रंजक पदार्थ लॉसोन होता है। इसकी छाल में भी टैनिन 20–27.1 प्रतिशत पाया जाता है तथा तने से एक प्रकार का गोंद निकलता है।

गुण–धर्म

1. धातकी के फूल चरपरे, शीतल, मृदुता करने वाले, कसैले, हल्के तथा तृषा, अतिसार, पित्त, रूधिर दोष, विषकृमि तथा विसर्प नाशक हैं।[2,3,4]
2. यह गर्भ–स्थापक तथा योनि से होने वाले विविध प्रकार के स्रावों को रोकता है।
3. धातकी, नागपुष्पी, चन्दन यह सब अतिसार का नाश करने वाले हैं, टूटी अस्थियों को जोड़ने वाले, पित्त में हितकारी और व्रणों का रोपण करने वाले हैं।[5]

औषधीय प्रयोग

नकसीर : धाय के फूल, मोचरस, पठानी लोध्र, आम की गुठली का रस तथा मजीठ के रस को चीनी के शरबत में पीसकर कपड़े से छानकर, निचोड़ लें, इस रस का अवपीड नस्य दें[7], इससे नकसीर में आराम मिलता है।

Scanned by CamScanner

दंत विकार : धातकी के पत्ते तथा फूल, दोनों को समभाग लेकर, बनाये गये काढ़े से गरारे करने से सब प्रकार के दंत विकारों में लाभ होता है।

प्लीहा रोग : 2–3 ग्राम धातकी के फूलों का चूर्ण, चित्रक मूल चूर्ण, हल्दी चूर्ण वा मदार का पत्ता, इनमें से किसी एक का भी सेवन 50 ग्राम गुड़ के साथ करने से प्लीहा रोग नष्ट हो जाता है।[6]

उदर कृमि : इसके चूर्ण को 3 ग्राम प्रातः खाली पेट ताजे जल के साथ कुछ समय तक सेवन से पेट में कीड़े मर जाते हैं।

अतिसार : अतिसार व प्रवाहिका में धातकी के पुष्पों का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में 2 चम्मच शहद या एक कप मट्ठे के साथ दिन में तीन बार लेने से लाभ होता है। जिन्हें बार–बार शौच जाना पड़ता है, उन्हें इस निरापद दिव्य औषध का सेवन कर लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

पेचिस व प्रवाहिका : 10 ग्राम धातकी के पुष्पों को लगभग 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष रहने पर प्रातः खाली पेट व सायंकाल भोजन से 1 घंटा पहले सेवन करें। हल्का व सुपाच्य भोजन का सेवन करें। कुछ समय के लिए दूध व घृत का भी सेवन न करें, निश्चित लाभ प्राप्त होगा।

रक्तार्श : इसके फूलों का शर्बत पिलाने से रक्तार्श मिटता है। खूनी बवासीर, रक्त प्रदर या अन्य किसी प्रकार का रक्त स्राव रोकने के लिए एक चम्मच चूर्ण में दो चम्मच शहद मिलाकर दिन में 2–3 बार सेवन करने से लाभ होता है।

गर्भ स्थापन के लिए : सम्पूर्ण चिकित्सकीय परीक्षण सामान्य होने पर भी जिन महिलाओं को गर्भस्थापन नहीं होता है। उनके लिए नील कमल का चूर्ण तथा धातकी पुष्प चूर्ण दोनों को समभाग मिलाकर ऋतुकाल प्रारम्भ होने के दिन से 5 दिन तक शहद के साथ सुबह–शाम नियमित सेवन कराने से स्त्री गर्भधारण करती है। प्रयोग असफल होने पर अगले मासिक धर्म से पुनः दोहराएं।

श्वेत प्रदर :

1. स्त्रियों के श्वेत प्रदर में धातकी के फूलों का चूर्ण 2 चम्मच (लगभग 3 ग्राम) मधु के साथ सुबह खाली पेट व सायंकाल भोजन से एक घन्टा पूर्व सेवन करने से लाभ होता है।
2. धातकी के पुष्पों का चूर्ण 1 चम्मच की मात्रा में, समभाग मिश्री मिलाकर रखें। प्रातः–सायं नियमित रूप से कुछ काल तक दूध या जल के साथ दिन में दो या तीन बार सेवन करने से अवश्य लाभ होता है।

प्रमेह : धातकी के पुष्प, पठानी लोध्र, चंदन सभी समान भाग पीसकर एक चम्मच की मात्रा में दिन में 3 बार शहद के साथ कुछ हफ्ते तक सेवन करने से प्रमेह नष्ट होता है।

दाह : शरीर के किसी अंग में दाह व जलन को दूर करने के लिए धाय के फूलों को गुलाब जल में पीसकर लेप करें।

रक्त पित्त :

1. धातकी के फूल, फूल प्रियंगु, चन्दन, पठानी, लोध्र, अनन्त मूल, महुआ, नागरमोथा, अभया इन सब द्रव्यों को सम्मिलित कूटकर 30 ग्राम चूर्ण क्वाथ लगभग एक किलो पानी में भिगो दें। बाद में निथारे हुए जल में पकी हुई मिट्टी लगभग 5 ग्राम को भी भिगो दें। थोड़ी देर बाद पानी निथार लें। अब इसमें मुलेठी भिगों दें, जब मुलेठी अच्छी तरह भीग जाये तो निथार लें। निथारे हुए रस में मिश्री या चीनी मिलाकर पीने से वेग युक्त रक्त पित्त रूकता है। शरीर का बढ़ा हुआ दाह शान्त होता है। यह सरल एवं अद्भुत प्रयोग है। नित्य ताजा बनाकर दिन में दो बार कुछ दिन तक सेवन करें।
2. एक चम्मच दूर्वा रस (दूब घास का रस), एक चम्मच धाय पुष्प चूर्ण दोनों के सेवन से रक्त पित्त में लाभ होता है। कहीं से भी रक्त बह रहा हो (नकसीर, बवासीर व रक्तस्राव) कुछ दिन के प्रयोग से पूर्ण लाभ होगा। तीन सप्ताह तक प्रयोग करें।

दन्तोद्गम जन्य पीड़ा : आंवला, पिप्पली और धातकी के फूल तीनों को बराबर लेकर महीन पीस लें। इस चूर्ण को शहद में मिलाकर सुबह शाम प्रतिदिन बच्चों के मसूड़ों पर मलने से बच्चों के दांत निकलते समय के कष्ट दूर होकर, दांत सहजता से निकल जायेंगे।

पित्तज ज्वर : पित्तज ज्वर में धातकी के फूलों का 1 चम्मच चूर्ण गुलकंद के साथ सुबह शाम दूध या जल से लेने से लाभ होता है।

जख्म : जो घाव जल्दी नहीं भर रहा हो, उसको भरने के लिए इसके फूलों का चूर्ण जख्म पर लगाने से जख्म भर जाता है।

नासूर : अलसी के तेल में धातकी के पुष्प चूर्ण को फेंटकर अल्पमात्रा में शहद मिलाकर प्रतिदिन नासूर में लगाते रहने से नासूर भर जाता है।

दग्ध व्रण : इसके फूलों को पीसकर अलसी के तेल में या शहद में मिलाकर जले हुए स्थान पर लगाने से लाभ होता है और बाद में निशान भी समाप्त हो जाता है।

1. धातकी दाड़िमीपत्रा रक्तपुष्पा च मादिनी (नि०शि०)
2. धातकी कटुका शीत मदकृत्तुवरा लघुः। तृष्णातीसारपित्तास्रविषकृमिविसर्पजित्।। (भाव प्रकाश)
3. प्रवाहिकातिसारघ्नी विसर्पव्रणनाशिनी (रा०नि०)
4. धातकी कुसुमं शीतं रक्तपित्तातिसार जित् (रा०व०)
5. प्रियंगुः समङ्गाधातकी पुत्रगनागपुष्पचन्दनकुचन्दन (सुश्रुत)
6. गुडैश्चित्रक मूलं वा रजन्यर्क दलं तथा धातकीपुष्पचूर्ण वा प्रत्येकं प्लीहनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

49 धतूरा

वैज्ञानिक नाम	:	*Datura metal* L.
कुलनाम	:	Solanaceae
अंग्रेजी नाम	:	Thorn apple
संस्कृत	:	धत्तूर, शिवप्रिय, धुत्तूर, उन्मत्त, कनक, मातुल
हिन्दी	:	धतूरा
गुजराती	:	धत्तूरा
मराठी	:	धत्तूरा
बंगाली	:	धतूरा
तैलगु	:	उम्मत्त
तमिल	:	उन्मत्त
फारसी	:	तातूर
अरबी	:	दातूर

परिचय

चरक संहिता मे कनक नाम से तथा सुश्रुत संहिता में उन्मत्त नाम से निर्दिष्ट धत्तूर शिव का प्रिय है। इसके फल और पुष्प शिव पर चढ़ाये जाते है। रस ग्रन्थो मे इसकी गणना विषवर्ग मे की गई है तथा रस चिकित्सा मे धत्तूर बीज अनेक योगों में पड़ता है। धतूरा के पौधे समस्त भारत में पाये जाते हैं। इसकी निम्न प्रजातियां देखने को मिलती है

1. यह वास्तव मे विदेशी पौधा है, परन्तु अब समस्त भारत मे फैल गया है। इसका क्षुप से बिल्कुल मिलता जुलता है।
2. कृष्ण धतूरा, इसके क्षुप कहीं-कहीं पाये जाते हैं। अन्य प्रजातियों की अपेक्षा यह अधिक वीर्यवान होता है।

बाह्य-स्वरूप

धतूरा के एकवर्षीय क्षुप 2-5 फुट तक ऊंचे, कांड चिकना, पत्तिया लम्बाकार, भालाकार, लम्बाग्र या अग्र पर नुकीली तथा आधार पर मध्य नाड़ी के दोनों पार्श्व विषम होते हैं। पत्रतट लहरदार, दन्तुर या किंचित मुड़े हुए होते हैं। पुष्प 5-6 इंच लम्बे, प्राय दो या

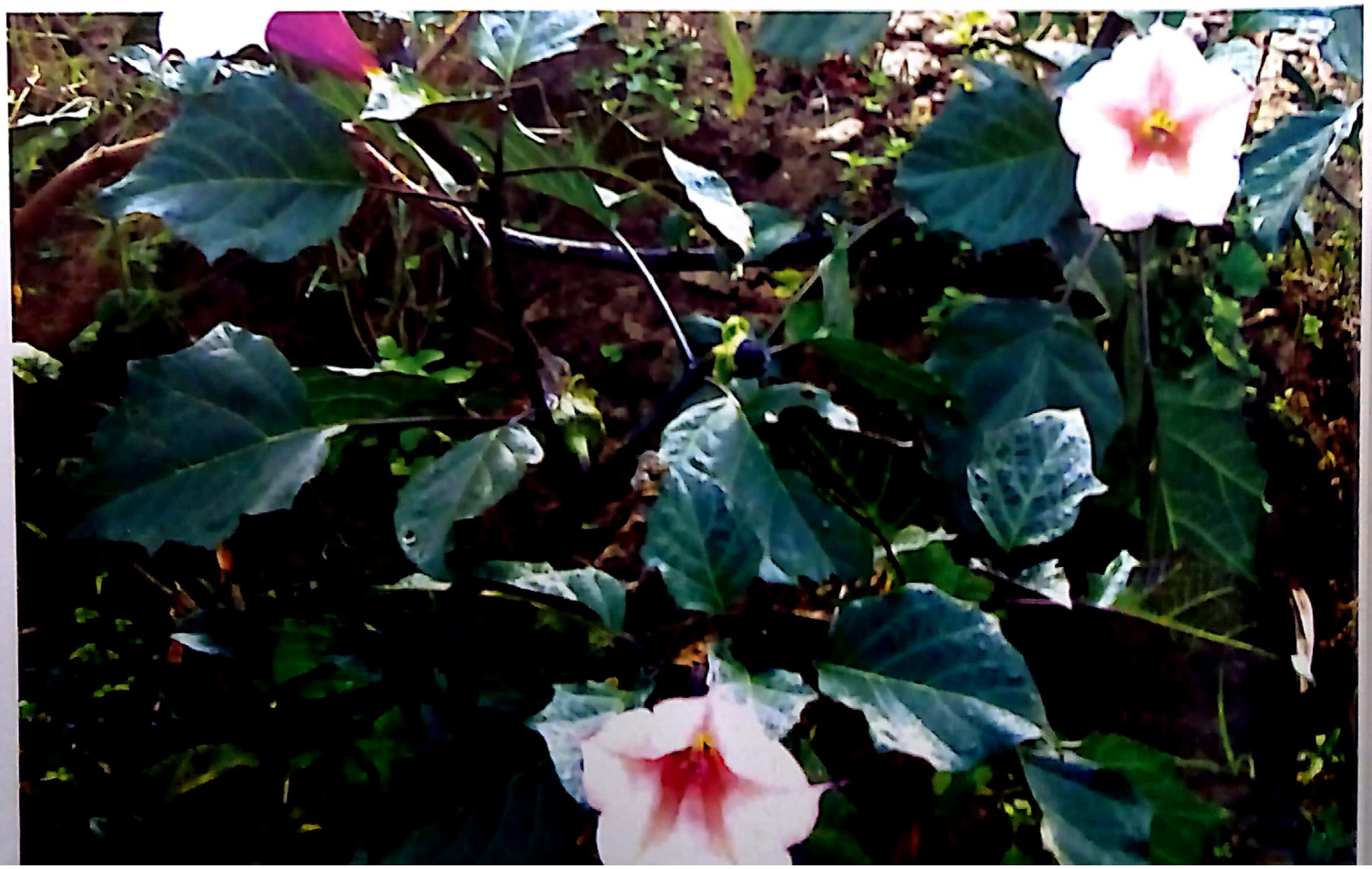

Scanned by CamScanner

तीन एक साथ, बाहर से बैंगनी और भीतर से श्वेत होते हैं। फल गोलाकार, कागजी नींबू जितने बड़े, कंटकित तथा नीचे की ओर झुके हुए। बीज चपटे पीले या हल्के भूरे रंग के होते हैं। कृष्ण धतूरे के बीज चपटे वृक्काकार तथा काले रंग के होते हैं।

रासायनिक संघटन

धतूरा के पत्र एवं बीज में हायोसायमीन और हायोसीन नामक दो क्षाराभ, 0.25 से 0.55 प्रतिशत तक पाये जाते हैं। यही इसके प्रधान सक्रिय तत्व हैं और यही दोनों क्षाराभ, अजवायन, खुरासानी में भी पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त बीजों में कुछ रालीय तत्व एवं 15 से 30 प्रतिशत तक स्थिर तेल भी पाया जाता है।

गुण–धर्म

1. धतूरा मदकारक, वर्ण को उत्तम करने वाला, अग्नि तथा वायुकारक, कषाय, मधुर, कटु, जूं–लीख को नष्ट करने वाला और ज्वर, कोढ़, व्रण, कफ, खुजली, कृमि तथा विषनाशक है।
2. धतूरा कडुवा, रूक्ष, काँतिकारी, घावों को भरने वाला, त्वग दोषहर, ज्वरघ्न और भ्रम पैदा करता है।
3. यह कफ नाशक है। श्वास नलिका के संकोच, विस्फार प्रधान रोगों में धतूरा की बहुत उपयोगिता हैं।

काला धतूरा

औषधीय प्रयोग

मस्तक पीडा : इसके 2–3 बीज नित्य निगलने से पुरानी मस्तक पीड़ा मिट जाती है।

सिर की जुंए : सरसों का तेल 4 सेर, धतूरे के पत्तों का रस 16 सेर तथा धतूरे के पत्तों का कल्क 16 सेर, इन सबको मंदी आंच पर पकाकर जब तेल मात्र शेष रह जाये तो बोतल में भरकर रख ले। इस तेल को बालों में लगाने से सिर की जुंए नष्ट हो जाती हैं।[1]

लाल धतूरा (शोभाकर)

उन्माद :

1. कृष्ण धतूरा के शुद्ध बीजों को पित्त पापड़ा के रस में घोंटकर पीने से उन्माद शांत होता है।[2]
2. शुद्ध धतूरा के बीज और काली मिर्च बराबर लेकर, महीन चूर्ण करके 100–100 मिलीग्राम की गोली बना लें। जल के साथ खरल करके 1–1 रत्ती की गोली बनायें। 1–2 गोली सुबह व रात्रि को मक्खन के साथ देने से नया उन्माद रोग शांत हो जाता है। नया उन्माद रोग मस्तिष्क में आघात, जन्य अथवा शराब, गांजा, सूर्य के ताप में भ्रमण आदि से या प्रसूतावस्था में हुआ हो जिसमें नींद न आती हो, उस अवस्था में इस उन्मत्त वटी का सेवन कराने से थोड़े ही दिनों में मन स्वस्थ होकर शांत हो जाता है।

नेत्र रोग : धतूरा के ताजे पत्तों का रस दुःखती आंख पर लेप करने से ललाई फट जाती है। शोथ और दाह मिट जाती है।

स्तनों की सूजन :

1. स्तनों की सूजन में, इसके पत्तों को गरम करके बांधने से आराम मिलती है।

Scanned by CamScanner

सफेद धतूरा

2. जिस स्त्री के दूध अधिक होने से, स्तन में गांठे हो जाने का भय हो, तो उसके दूध को रोकने के लिए स्तन पर धतूरे के पत्ते बांधने चाहिए।

दमा :

1. धतूरा के फल, शाखा तथा पत्तों को कूटकर और सुखाकर उसके चूर्ण का धूम्रपान करने से श्वांस रोग नष्ट हो जाता है।[3]
2. धतूरा के आधे सूखे हुए पत्तों के टुकड़ों को 4 रत्ती की मात्रा में लेकर बीड़ी पिलानी चाहिए। अगर 10 मिनट तक दमे का दौरा शांत न हो तो अधिक से अधिक 15 मिनट बाद दूसरी बीड़ी पिलानी चाहिए। यदि तब भी आराम न हो तो तीसरी बीड़ी नहीं पिलानी चाहिए। जिन्हें धतूरा अनुकूल न पड़े, उन्हें नहीं देना चाहिए।
3. धतूरा, तम्बाकू, अपामार्ग और जवांसा इन चारों चीजों को समान भाग लेकर चूर्ण बना लेना चाहिए। इसमें से 2 चुटकी चिलम में रखकर पीने से दमे का दौरा बंद हो जाता है।
4. धतूरा, काली चाय, शोरा और तम्बाकू समान भाग लेकर चूर्ण करके, इस चूर्ण की बीड़ी बनाकर पीने से दमे का दौरा रुक जाता है।

हैजा : हैजे में केवल धतूरा की केसर को बताशे में रखकर निगल जायें।

गर्भधारण :

1. इसके फलों के चूर्ण को 1/4 ग्राम की मात्रा में विषम भाग घी और शहद के साथ चटाने से गर्भधारण करने में मदद मिलती है।

गठिया :

1. धतूरा के पंचांग का रस निकालकर उसको तिल के तेल में पकाकर, जब तेल शेष रह जाये, तो इस तेल की मालिश करके ऊपर धतूरा के पत्ते बांध देने से गठिया वाय का दर्द मिट जाता है। इस तेल का लेप करने से सूखी खुजली और गठिया में लाभ होता है।
2. जोड़ों के दर्द में धतूरा के सत का आधी ग्रेन की मात्रा में तीन बार देने से लाभ होता है।
3. धतूरा के पत्रों के लेप से या इसके पत्तों की पुल्टिस से गठिया और हड्डी के दर्द में लाभ होता है।

सूजन : धतूरा के पिसे हुए पत्तों में शिलाजीत मिश्रित कर, लेप करने से अंडकोष की सूजन, पेट के अंदर की सूजन, फुफ्फुस के पर्दे की सूजन, संधियों की सूजन और हड्डियों की सूजन में बड़ा लाभ होता है।

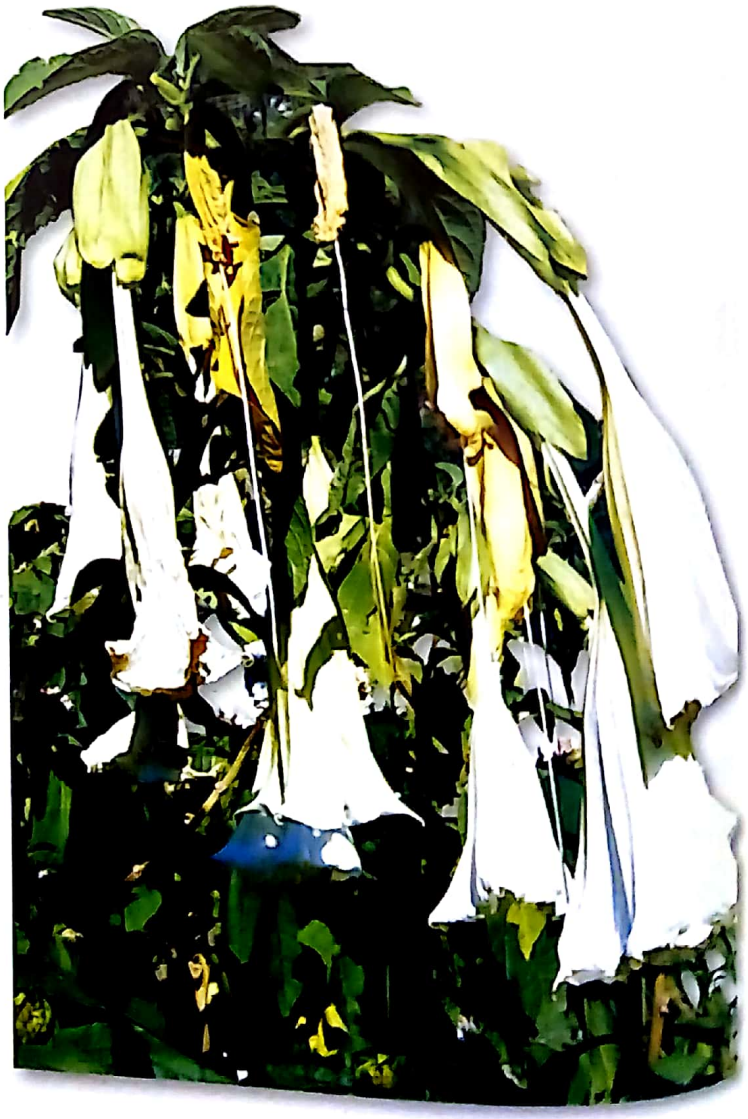

Scanned by CamScanner

काम शक्ति :

1. धतूरा के बीज, अकरकरा और लौंग इन तीनों चीजों की गोलियां बनाकर खिलाने से काम शक्ति बढ़ जाती है।
2. धतूरा के बीजों के तेल की पैरों के तलुवे पर मालिश करने के बाद स्त्री सहवास करने से बहु रतम्मन होता है।
3. धतूरा के 15 फलों को बीज सहित लेकर, पीसकर, महीन चूर्ण को 20 किलोग्राम दूध में डालकर दही जमा दें। अगले दिन दही को बिलोकर घी निकाल लें। इस घी की 125 मिलीग्राम की मात्रा पान में रखकर खाने से बाजीकरण होता है। कामेन्द्रिय पर मलने से उसकी शिथिलता दूर हो जाती है।

नारू : नारू की बीमारी में इसके पत्तों की पुल्टिस बांधने से बहुत आराम मिलता है।

ज्वर :

1. धतूरा के बीजों की राख, 125 मिलीग्राम की मात्रा में मलेरिया ज्वर के रोगियों को सुबह दोपहर शाम देने से लाभ होता है।
2. इसके बीजों के चूर्ण को 65 मिलीग्राम की मात्रा में ज्वर आने से पूर्व खिलाने से ज्वर छूट जाता है।
3. धतूरा के पत्ते, नागरबेल के पान और काली मिर्च बराबर गिनती में लेकर, पीसकर उड़द बराबर गोलियां बना लें। दिन में दो बार एक–एक गोली देने से ज्वर छूट जाता है। इसको सौंफ के अर्क के साथ लेने से पुराना प्रमेह मिटता है।

तिजारी : धतूरा के पत्तों का 5–6 बूंद रस, 25 ग्राम दही में डालकर खिलाने और ऊपर से 200 ग्राम दही पिलाने से 1 या दो बार में तिजारी चली जाती है।

बिच्छू दंश : धतूरा के पत्तों की लुग्दी, बिच्छू दंश पर लगाने से आराम मिलता है।

घाव : जिस घाव पर गहरा पीप या छिछड़े जम गये हों, उसको गुनगुने पानी की धार से धो कर दिन में 3–4 बार धतूरा के पत्तों की पुल्टिस बांधनी चाहिए।

कर्णपूय–कर्ण शोथ :

1. इसके पत्तों के रस को आग पर गाढ़ा करके, कान के पीछे की सूजन पर लगाने से आराम होता है।
2. कान में अगर मवाद बहती हो तो 8 भाग सरसों का तेल, 1 भाग गंधक, 32 भाग धतूरा के पत्रों का स्वरस मिलाकर विधिपूर्वक तेल सिद्ध करके, इसके तेल की 1 बूंद कान में सुबह–शाम डालनी चाहिए।

धतूरा तेल : धतूरा के स्वरस 400 ग्राम, धतूरा के रस में चटनी की तरह पिसी हुई हल्दी 25 ग्राम और तिल का तेल 100 ग्राम लेकर मंदी आंच पर पकायें। तेल शेष रहने से उबाल कर छान लें। यह कान के नाड़ी व्रण पर हितकारी है।

दर्पनाशक : कपास के फूल और पत्र, इनका शीत निर्यास देने से धतूरे का विष शांत हो जाता है।

दोष : अधिक मात्रा में धतूरा विष है। यह अपनी खुश्की की वजह से बदन को सुन्न कर देता है। सिर में दर्द पैदा करता है तथा पागलपन और बेहोशी पैदा कर मनुष्य को मार देता है। इसका बाह्य प्रयोग करना ही अच्छा है। अतः प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।

1. धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृज्ज्वर कुष्ठनुत्।
कषायो मधुरस्तिक्तो यूकालिक्षा विनाशकः।।
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमि विषापहः।। (भाव प्रकाश)

2. धत्तूरः कटुरुष्णश्च कान्तिकारी व्रणार्तिनुत्।
त्वग्दोष कृच्छ्रकंडूतिज्वरहारी भ्रमावहः।। (ध०नि०)

3. धुस्तूर पत्र कल्केन तद्रसेन च साधितम्।
तैलअभ्यंग मात्रेण यूकां नाशयति ध्रुवम्।। (भैषज्य रत्नावली)

4. कृष्ण धुस्तूरजैः बीजैः पंचभिः पर्पटी रसः।
संप्रोज्यः प्रषमयेदुन्मादं भूतसंभवम्।। (भैषज्य रत्नावली)

5. कनकस्य फलं शाखा पत्रं संकुट्य यत्नतः।
शौषयित्वा च तद्धूमपाना च्छासो विनष्यति।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

दूब

वैज्ञानिक नाम	:	*Cynodon dactylon* (L.) Pers.
कुलनाम	:	Poaceae
अंग्रेजी नाम	:	Conch grass, Creeping Dog's tooth grass, Brahma grass, Doob grass, Debil's grass
संस्कृत	:	अमरी, अमृता, अनंता, अनुवल्लिका, गौरी, हरसालिका, दूर्वा, शतपर्वा
हिन्दी	:	दूब, रामघास, काली घास, दूर्बा
गुजराती	:	दूर्बा, हरियाली,
मराठी	:	दूर्बा, हरियाली, हरली
बंगाली	:	दूब, दूबला, दूर्बा
तमिल	:	अरूगम–पिल्लु
तैलगु	:	धोरिचा, गोरिया गुड्डी
अरबी	:	उश्न
फारसी	:	मर्ग

परिचय

दूर्बा अर्थात हरी घास प्राणी मात्र के लिए प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है। इस हरी–हरी मखमली घास के नैसर्गिक सौन्दर्य को देखकर जहां हृदय दिव्य आनन्द से परिपूरित हो जाता है, वहीं इस पर नंगे पांव चलने के अनेक लाभ हैं। इससे नेत्र ज्योति बढ़ती है व शरीर के अनेक विकार शांत हो जाते हैं। वर्ष भर दूब खूब फलती फूलती है। निघंटुओं में श्वेत व नील एवं भंड दूर्बा भेद दूब के तीन भेदों का उल्लेख है। श्वेत दूब वास्तव में कोई भिन्न वनस्पति नहीं है। हरी दूब ही जब श्वेत हो जाती है तो श्वेत दूब कहलाती है।

बाह्य–स्वरूप

दूब के बहुवर्षायु स्वभाव के पतले किन्तु कड़े कांड युक्त, प्रसरणशील पौधे होते हैं, जो भूमि पर चारों ओर फैलते हैं। नूतनाग्र भूमि पर आगे–आगे प्रसरण करता जाता है और पीछे–पीछे प्रत्येक पर्व से मूल निकलकर भूमि में घुसती जाती है और वायव्य कांड निकल कर नया पौधा जन्म लेता जाता है। जैसे विश्व विजय पर निकला कोई रथी पीछे सैनिक तैनात करता जाता है। पत्तियां 1–4 इंच तक लम्बी, 1/2 इंच चौड़ी रेखाकार, अग्र पर चिकनी तथा मुलायम होती है। पुष्प छोटे हरिताभ या नीलारूण होते हैं। फल छोटे–छोटे दानों के रूप में होते हैं।

रासायनिक संघटन

दूब में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट एवं रेशे पाये जाते हैं। जलाने पर 11.75 प्रतिशत भस्म प्राप्त होती है, जिसमें पोटेशियम, मैगनीशियम एवं सोडियम लवण पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

दूब मधुर, रूचिकारक, कसैली, कड़वी, शीतल गुण वाली होती है। यह वमन, विसर्प, तृष्णा, कफ, पित्त दाह, आमातिसार, रक्त पित्त तथा खांसी को दूर करती है। गंड दूब अर्थात (गाडर दूब) शीतल लोहे को गलाने वाली, मल को रोकने वाली, हल्की, कसैली, मधुर वातकारक, पचने में चरपरी तथा तृषा–दाह–कफ–रूधिर विकार कुष्ठ, पित्त और ज्वर को दूर करने वाली है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

मस्तक पीडा : दूब और चूने के समभाग को पानी में पीसकर ललाट पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

अपस्मार : इसके पंचांग का स्वरस, अत्यधिक मासिक धर्म, भूतोन्माद और अपस्मार में लाभकारी है। दूब के रस में सफेद चन्दन का चूर्ण और मिश्री मिलाकर पिलाने से रक्त प्रदर मिटता है।

नेत्र रोग : आंख दुःखने पर इसके पत्तों को पीसकर पलकों पर बांधने से शांति मिलती है। नेत्र मल का आना बंद हो जाता है।

नकसीर :

1. अनार के फूल के रस को दूब के रस के साथ अथवा लाक्षारस या हरड़ के साथ मिश्रित कर नस्य लेने से नासिका द्वारा प्रवृत्त त्रिदोषज रक्त पित्त रूक जाता है।
2. दूब के स्वरस की, मुनक्का, ईख के स्वरस की, गाय के दूध की, जवासा मूल के स्वरस की, प्याज के स्वरस की, दाड़िम के फूल के स्वरस की, अवपीड़ नस्य लेने से, नासिका से निकलने वाला रक्त पित्तज रक्त शीघ्र शांत हो जाता है।
3. नक्सीर में इसके पंचांग का स्वरस नाक में टपकाने से लाभ होता है।

मुखपाक : दूब के क्वाथ से कुल्ले करने से मुंह के छाले मिट जाते हैं।

पित्तज :

1. दूब का रस पिलाने पित्त जन्य वमन मिटती है।
2. दूब की चावलों के धोवन के साथ पिलाने से पित्त की वमन मिटती है।

जलोदर : दूब को काली मिर्च के साथ पीसकर दिन में तीन बार भोजन से पहले पिलाने से मूत्रवृद्धि होकर जलोदर और सर्वांग शोथ मिटता है।

अतिसार : दूब का ताजा रस संकोचक है, इसलिए यह पुराने अतिसार और पतले दस्तों में उपयोगी है।

आम अतिसार : दूब को सोंठ और सौंफ के साथ उबालकर पिलाने से आम अतिसार मिट जाता है।

गर्भपात : प्रदर रोग में तथा रक्तस्राव, गर्भपात आदि योनि व्याधियों में इसका प्रयोग करते हैं। इससे रक्त रूकता है। गर्भाशय को शक्ति प्रदान होती है तथा गर्भ को पोषण मिलता है।

पथरी : कुएं वाली दूब 30 ग्राम पानी में पीसकर, मिश्री मिलाकर सुबह–शाम पीने से मसाने की पथरी में लाभ होता है।

मूत्रविकार :

1. दूब की जड़ का काढ़ा वेदनानाशक और मूत्रल होता है, इसलिए बस्तिशोथ, सुजाक और मूत्र की जलन में यह उपयोगी है।
2. दूब को मिश्री के साथ घोंट छान के पिलाने से पेशाब के साथ खून आना बंद हो जाता है।
3. दूब को पीसकर, दूध में छानकर पिलाने से पेशाब की जलन मिटती है।

अर्श : खूनी बवासीर में इसके पंचांग को पीसकर दही में मिलाकर देने से और इसके पत्तों को पीसकर बवासीर पर लेप करने से बड़ा लाभ होता है।

रक्तपित्त :

1. दूब, भद्रश्री, लाल चन्दन, पुंडरियाका, लाल कमल, नील कमल, वानीर जल, मृणाल, मुलेठी इनका प्रयोग रक्त पित्त रोग की शांति के लिए करना चाहिए।
2. सफेद दूब को जल में पीसकर कपड़छन कर मिश्री मिलाकर पिलाने से रक्त पित्त में लाभ हो जाता है।

Scanned by CamScanner

खुजली दाद आदि :

1. दूब के चौगुने रस में सिद्ध किये हुए तेल को लगाने से दाद, खुजली और व्रण मिटते हैं।
2. दूध को हल्दी के साथ पीसकर लेप करने से भी खुजली और दाद मिटते हैं।

मलेरिया ज्वर : दूब के रस में अतीस के चूर्ण को मिलाकर, दिन में दो तीन बार चटाने से, बारी से चढ़ने वाला मलेरिया ज्वर में अत्यधिक लाभ मिलता है।

कामशक्ति ह्रास : श्वेत दूब वीर्य को कम करती है और काम शक्ति को घटाती है।

बच्चों के रोग : बड़ी–बड़ी शाखों वाली दूब जो अक्सर कुओं पर होती है। उसे पीस छानकर उसमें 2–3 ग्राम बारीक पिसे हुए नागकेसर और छोटी इलायची के दाने मिलाकर, सूर्योदय से पहले उस बच्चे को जिसका तालू बैठ गया हो, नाक में डालकर सुंघाने से तालू ऊपर को चढ़ जाती है। इसके सेवन से ताकत बढ़ती है। बच्चे दूध निकालना बंद कर देते हैं और दुबला होना बंद हो जाता है।

1. दूर्वा शीता कषाया च रक्तपित्तकफापहा। (ध०नि०)
2. दूर्बा कषायाः मधुरा च शीताः पित्ततृषारोचकवान्ति हन्त्रयः।
   सदाहमूर्च्छाग्रहभूतशांतिश्लेष्मश्रमध्वंसनतृप्तिदाश्च।।
   (रा०नि०)
3. वृक्षादनी पयस्या च लता चोत्पलसारिवा।
   यथासंख्यं प्रयोक्तव्याः गर्भस्रावे पयोयुताः।। (सुश्रुत)
4. रसो दाड़िम पुष्पस्य दूर्बारससमन्वितः।
   अलक्तकरसोपेतः पथ्यया वा समन्वितः।। (भैषज्य रत्नावली)
5. द्राक्षा रसेस्यत्तु रसस्य नस्यं क्षीरस्य दूर्बा स्वरसस्य चैव।
   यवा समूलानि पलांडुमूलं नस्यं तथा दाड़िम पुष्पतोयम्।।
6. भद्रश्रियं लोहित चन्दनं च प्रचौंऽरीक कमलोत्पले च,
   उशरिं वानरि जलं मृणालं सहस्त्र वीर्या मधुकं पपस्या।।

Scanned by CamScanner